हिंदी व्याकरण

7

लेखक :
आलोक शर्मा
(एम०ए०, बी०एड०)

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

लेखक :
आलोक शर्मा (एम०ए०, बी०एड०)

हिंदी व्याकरण

प्रस्तावना

हिंदी व्याकरण की यह शृंखला आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसे एन॰ सी॰ ई॰ आर॰ टी॰, इंटरस्टेट बोर्ड फॉर एंग्लो इंडियन एजुकेशन एवं अन्य प्रांतीय शिक्षा परिषदों द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार किया गया है।

इस शृंखला का उद्देश्य भाषा और व्याकरण का समुचित और सुबोध शैली में अध्ययन कराना है। छात्र व्याकरण को एक कठिन विषय के रूप में देखते हैं। इसलिए व्याकरण के जटिल नियमों को अत्यंत सरल और रोचक शब्दों में छात्रों तक पहुँचाना ही मेरा प्रयास है।

मेरा यह प्रयास छात्रों को अधिक रटने से बचाते हुए ज्ञानवर्धन करने के लिए है। अनेक चित्रों की सहायता से व्याकरण को समझाने का प्रयत्न किया गया है। अभ्यास में यथास्थान बहुवैकल्पिक प्रश्नों (MCQs) का समावेश किया गया है।

आशा है, यह प्रस्तुति विद्यार्थियों के लिए रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगी। आपसे अनुरोध है कि अपने अनुभवों और उपयोगी सुझावों से मुझे अवगत कराएँ।

धन्यवाद!

–लेखक

विषय सूची

1. भाषा और व्याकरण *(Language and Grammar)* ... 5
2. वर्ण (अक्षर)-विचार *(Phonology)* ... 8
3. शब्द-विचार *(Morphology)* ... 13
4. संज्ञा *(Noun)* ... 16
5. सर्वनाम *(Pronoun)* ... 19
6. लिंग तथा वचन *(Gender & Number)* ... 23
7. कारक व उसके भेद *(Case & Its Kinds)* ... 28
8. विशेषण *(Adjectives)* ... 32
9. क्रिया *(Verb)* ... 35
10. वाच्य *(Voice)* ... 39
11. क्रिया-विशेषण *(Adverb)* ... 41
12. उपसर्ग *(Prefix)* ... 44
13. प्रत्यय *(Suffix)* ... 47
14. संधि-विचार *(Euphonic Combination)* ... 50
15. समास-विचार *(Word Combination)* ... 55
16. विराम-चिह्न *(Punctuation)* ... 59
17. वाक्य-विचार *(Syntax)* ... 61
18. सामान्य अशुद्धियाँ : वर्तनी *(Some Common Errors : Spelling)* ... 64
19. शब्द-समूह *(One Word Substitution)* ... 66
20. समानोच्चरित शब्द *(Words of Similar Sounds)* ... 69
21. विलोम अथवा विपरीतार्थक शब्द *(Antonyms)* ... 71
22. पर्यायवाची शब्द *(Synonyms)* ... 74
23. अनेकार्थक शब्द *(Word with Multiple Meanings)* ... 77
24. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ *(Idioms & Proverbs)* ... 80
25. तद्भव तथा तत्सम शब्द *(Tadbhav and Tatsam Words)* ... 84
26. पत्र-लेखन *(Letter Writing)* ... 87
27. अपठित गद्यांश *(Unseen Passage)* ... 92
28. संवाद-लेखन *(Dialogue-Writing)* ... 97
29. कहानी-लेखन *(Story-Writing)* ... 100
30. निबंध-लेखन *(Essay-Writing)* ... 105
31. अंतर्कथाएँ *(Internal Stories)* ... 115

1 भाषा और व्याकरण
(Language & Grammar)

मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को अनेक प्रकार से व्यक्त करता है। वह अपने हाथ-पैर तथा सिर आदि से संकेत करके दूसरों से कुछ कहना या न कहना चाहता है।

जैसे–दाएँ-बाएँ सिर हिलाकर अथवा हाथ के संकेत से वह किसी कार्य के करने या न करने के लिए कहना चाहता है। यही भाषा हमारे मन के भावों को प्रकट करने का सबसे अच्छा साधन है।

भाषा शब्द भाष् धातु + अङ्+ टाप् प्रत्यय के संयोग से बना है जिसका अर्थ है–कहना अथवा सार्थक वाणी। भाषा में वह शक्ति है जिससे हम अपने विचारों को दूसरों के लिए सरलता से प्रकट कर सकते हैं। कभी-कभी अपनी बात को संकेतों के द्वारा भी प्रकट किया जा सकता है।

जैसे–रेलवे गार्ड द्वारा ड्राइवर को हरी झंडी दिखाकर चलने का इशारा करना। इसी प्रकार क्रिकेट के मैदान में एंपायर (निरीक्षक) द्वारा अंगुली उठाकर खिलाड़ी को आउट घोषित करना आदि।

अत: हम कह सकते हैं कि शब्दों के माध्यम से अपने विचारों एवं भावों के आदान-प्रदान को 'भाषा' कहते हैं।

परिभाषा–''जिस साधन के द्वारा मानव अपने भावों एवं विचारों को बोलकर अथवा लिखकर प्रकट करता है, वह भाषा कहलाती है।''

हमारे भारतवर्ष में अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनमें 22 भाषाएँ संविधान में प्रमुख हैं–

1. हिंदी, 2. उर्दू , 3. संस्कृत, 4. पंजाबी, 5. गुजराती, 6. कन्नड़, 7. मलयालम, 8. मराठी, 9. डोगरी, 10. कश्मीरी, 11. उड़िया, 12. बांग्ला, 13. असमिया, 14. तेलुगु, 15. सिंधी, 16. तमिल, 17. मणिपुरी, 18. कोंकणी, 19. नेपाली, 20. मैथिली, 21. संथाली तथा 22. बोड़ो।

14 सितंबर, 1949 को भारत की राष्ट्रभाषा 'हिंदी' घोषित की गई। इस भाषा को विश्व में तीसरा स्थान प्राप्त है।

भाषा के भेद

भाषा के मुख्यतया तीन भेद बताए गए हैं–

(क) मौखिक भाषा (ख) लिखित भाषा (ग) सांकेतिक भाषा

(क) मौखिक भाषा–जिस भाषा के द्वारा हम अपने विचार अथवा भाव प्रकट करते हैं, वह मौखिक भाषा कहलाती है। कक्षा में अध्यापक द्वारा छात्रों को पढ़ाने के लिए मुख्यत: इस भाषा का उपयोग किया जाता है।

मौखिक भाषा में ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है।

(ख) लिखित भाषा–जिस भाषा के द्वारा हम अपने विचारों तथा भावों को लिखकर प्रकट करते हैं, वह लिखित भाषा कहलाती है। दूर स्थित व्यक्ति को पत्र के माध्यम से अपने विचारों से परिचित कराने के लिए इसी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

इसी प्रकार परीक्षा कक्ष में प्रश्नों के उत्तर देते समय, कविता, कहानी तथा निबंध आदि लिखने के लिए भी इसी लिखित भाषा का प्रयोग किया जाता है।

लिखित भाषा में हम अक्षरों का प्रयोग करते हैं।

(ग) सांकेतिक भाषा–जिस भाषा के द्वारा मनुष्य अपने संकेतों से भावों को प्रकट करता है, उसे सांकेतिक भाषा कहते हैं। **जैसे**–क्रिकेट के खेल में एंपायर द्वारा अंगुली के संकेत से खिलाड़ी को आउट करना।

बोली (DIALECT)

अपने क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा के रूप को हम उस क्षेत्र के बोली के नाम से जानते हैं। यह बोली प्राय: एक क्षेत्र तक ही सीमित रह जाती है। इसका प्रयोग सरकारी कार्यों में नहीं किया जाता। **जैसे**–अवधी, ब्रज, मराठी, पंजाबी आदि।

लिपि (SCRIPT)

''ऐसे चिह्न जिनके संयोग से भाषा को लिखित रूप प्रदान किया जाता है, वह उस भाषा की लिपि कहलाती है।'' हिंदी तथा संस्कृत भाषा को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। अंग्रेज़ी भाषा की लिपि रोमन है। इसी प्रकार पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी तथा उर्दू एवं फ़ारसी की लिपि फारसी है।

भाषा के अंग–भाषा के मुख्यत: पाँच अंग बताए गए हैं– (i) ध्वनि, (ii) वर्ण, (iii) शब्द, (iv) पद तथा (v) वाक्य। उपयुक्त पाँच अंगों के संयोग से भाषा का निर्माण होता है ।

व्याकरण (GRAMMAR)

भाषा संबंधी त्रुटियों का पता लगाने तथा उसे शुद्ध रूप में लिखने अथवा बोलने के लिए व्याकरण का ही बोध होना परमावश्यक है। व्याकरण को यदि किसी भाषा की आत्मा कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

''व्याकरण उस शास्त्र को कहते हैं जिसमें किसी भाषा के शुद्ध रूप का बोध कराने वाले नियम बताए जाते हैं।''

व्याकरण के प्रकार–व्याकरण के प्रमुख रूप से तीन प्रकार बताए गए हैं–

(i) वर्ण–विचार (PHONOLOGY)

(ii) शब्द–विचार (MORPHOLOGY)

(iii) वाक्य–विचार (SYNTAX)

विशेष–इनका वर्णन हम आगे अलग–अलग अध्यायों के अंतर्गत करेंगे।

भाषा और व्याकरण का संबंध

शुद्ध एवं प्रभावी भाषा का अपना विशेष महत्त्व होता है। अशुद्ध एवं विकृत होने पर तो भाषा का अर्थ ही बदल जाया करता है। **जैसे**–आसन का आसन्न, गृह का ग्रह आदि।

भाषा को शुद्ध तथा सुसंस्कृत बनाए रखने के लिए हमें उसके व्याकरण का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। व्याकरण के द्वारा ही हम शुद्ध बोलना तथा लिखना सीखते हैं।

आपने क्या सीखा

(1) भाषा के द्वारा हम दूसरों के भावों तथा विचारों को समझते हैं।

(2) भाषा के मुख्यत: तीन भेद हैं–(क) मौखिक, (ख) लिखित, (ग) सांकेतिक।

(3) हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी तथा अंग्रेज़ी की रोमन है।

(4) व्याकरण के माध्यम से किसी भाषा का शुद्ध लिखना, बोलना तथा पढ़ना सीखते हैं।

(5) व्याकरण के तीन भेद हैं–

(क) वर्ण–विचार, (ख) शब्द–विचार तथा (ग) वाक्य–विचार।

अभ्यास

1. भाषा का क्या अर्थ है ? स्पष्ट करके समझाइए।

_____

2. भाषा के मुख्य भेद कौन-कौन से हैं ?

_____

3. सांकेतिक भाषा किसे कहते हैं ?

_____

4. भारत में बोली जाने वाली 22 भाषाओं के नाम लिखिए।

_____

5. लिपि किसे कहते हैं ?

_____

6. भाषा के पाँच अंगों के नाम लिखिए।

_____

7. सही कथन के सामने सही (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाएँ–

(क) अंग्रेज़ी भाषा की लिपि गुरुमुखी है। ◯

(ख) हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है। ◯

(ग) भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली है। ◯

(घ) अंग्रेज़ी भाषा की लिपि रोमन है। ◯

2 वर्ण (अक्षर)-विचार
(Phonology)

वर्ण अथवा अक्षर–भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण कही जाती है। इसे अक्षर (अ + क्षर) भी कहते हैं। इसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।

हिंदी भाषा में **48** वर्ण बताए गए हैं। वर्णों की सहायता से शब्दों का निर्माण किया जाता है।

जैसे– अ, इ, उ, ए, क, ख, ग, च, प आदि।

वर्ण की परिभाषा–वह छोटी से छोटी ध्वनि, जिसके टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती हैं। अक्षर का उच्चरित रूप ही वर्ण कहलाता है।

वर्णमाला–वर्णों के समूह को 'वर्णमाला' कहा जाता है। महर्षि पाणिनी के अनुसार संस्कृत व्याकरण में इनकी कुल संख्या **43** बताई गई है। हिन्दी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण हैं–

(क) स्वर (Vowels)

(ख) व्यंजन (Consonents)

(क) स्वर (Vowels)

स्वर की परिभाषा–जिन वर्णों का उच्चारण स्वत: (अपने आप) होता है तथा जिनके बोलने में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती, वे स्वर कहे जाते हैं। स्वरों की संख्या 11 है–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

उच्चारण की दृष्टि से स्वर के तीन भेद हैं–

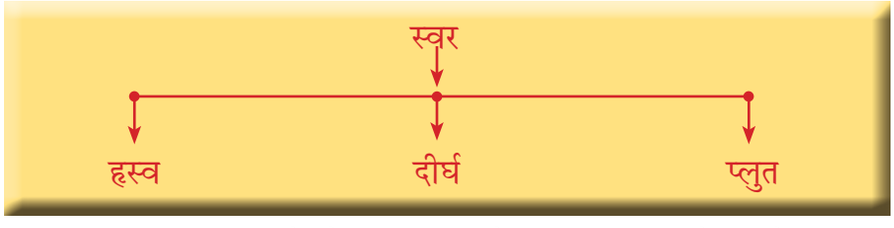

(i) ह्रस्व स्वर (Short Vowels)–जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। अ, इ, उ, ऋ–ये चार स्वर ह्रस्व हैं।

(ii) दीर्घ स्वर (Long Vowels)–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से अधिक या लगभग दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये गिनती में सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ये दीर्घ स्वर हैं।

(iii) प्लुत स्वर (Long-drawn Vowels)–जिनके बोलने में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। प्राय: इस स्वर का प्रयोग दूर से बुलाने (संबोधन) में होता है। लिखते समय स्वर के आगे (ऽ) का प्रयोग करते हैं। जैसे–ओऽम्, हे राऽम् आदि।

नोट–वर्तमान समय में प्लुत स्वर का प्रयोग बहुत कम किया जाता है।

(ख) व्यंजन (Consonents)

व्यंजन की परिभाषा–जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं, वे व्यंजन कहलाते हैं।

हिंदी वर्णमाला में 33 + 2 = 35 व्यंजन होते हैं। व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं।

(i) स्पर्श व्यंजन (Mutes)–जिन वर्णों को बोलते समय जीभ मुख के विभिन्न भागों को छूती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। 'क' से 'म' तक **33+2=35** स्पर्श व्यंजन होते हैं। ये **5** वर्गों में विभाजित किए गए हैं–

1. 'क' वर्ग–क् ख् ग् घ्
2. 'च' वर्ग–च् छ् ज् झ्
3. 'ट' वर्ग–ट् ठ् ड् ढ् ण् – ड़, ढ़
4. 'त' वर्ग–त् थ् द् ध् न्
5. 'प' वर्ग–प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंत:स्थ व्यंजन (Semi-Vowels)–जो वर्ण व्यंजनों तथा स्वरों के मध्य स्थित होते हैं, उन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। ये चार होते हैं–य्, र्, ल्, व्।

(iii) ऊष्म व्यंजन (Sibilants)–जिन व्यंजनों के बोलने से गर्म हवा निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये भी चार होते हैं–श, ष, स, ह।

(क) मेल के आधार पर व्यंजन के भेद–समान अथवा भिन्न-भिन्न व्यंजनों के मेल के आधार पर भी व्यंजनों के भेद किए गए हैं। ये दो प्रकार के हैं–(i) संयुक्त व्यंजन, (ii) द्वित्व व्यंजन।

(i) संयुक्त व्यंजन–दो अलग-अलग व्यंजनों के संयोग से बने शब्द संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।

जैसे– श्र = श् + र्। क्ष = क् + ष्।

ज्ञ = ज् + ञ्। त्र = त् + र्।

(ii) द्वित्व व्यंजन–द्वित्व का अर्थ है एक ही अक्षर का दो बार प्रयोग होना।

जैसे– त् + त = त्त जैसे–'पत्ते'। इसी प्रकार सच्चा, पक्का, प्रसन्न आदि में च्च, क्क तथा न्न द्वित्व व्यंजन देखे जा सकते हैं।

(ख) उच्चारण के आधार पर व्यंजन के प्रकार–इस आधार पर व्यंजन मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं–

(i) अल्प प्राण–जिन व्यंजनों के बोलने में वायु की मात्रा कम तथा कमजोर होकर निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं।

(ii) महाप्राण–जिन व्यंजनों के बोलने में वायु की मात्रा अधिक तथा तेज़ वेग से बाहर निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं।

(ग) प्रयत्न– वर्णों के बोलते समय मनुष्य को जो प्रयत्न करना पड़ता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न दो प्रकार के हैं–

(i) आभ्यंतर प्रयत्न–वर्णों के बोलने से पहले जो भीतरी प्रयत्न करना पड़ता है, उसे आभ्यंतर प्रयत्न कहते हैं। इसके चार प्रकार हैं–स्पृष्ट, ईषत्, स्पृष्ट विवृत तथा ईषत् विवृत।

(ii) बाह्य प्रयत्न–वर्णों के अंत में होने वाले प्रयत्न को बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके भी चार प्रकार हैं- घोष, अघोष, अल्पप्राण तथा महाप्राण।

अनुस्वार– इसका उच्चारण 'म्' अथवा 'न्' के समान होता है। इसका चिह्न (ं) है। जैसे–अंगूर, मूंग इत्यादि।

विसर्ग– इसका उच्चारण ह् के समान होता है। इसका चिह्न (:) है। **जैसे–**दु:ख, प्रात:काल आदि।

चंद्र बिंदु– जिस स्वर का उच्चारण मुख तथा नाक से होता है, उसके ऊपर चंद्रबिंदु (ँ)लगा दिया जाता है।

जैसे– आँख, आँत, चाँद, दाँत आदि।

हलन्त– जहाँ व्यंजन का प्रयोग स्वरहीन होता है, तब उसके नीचे टेढ़ी रेखा हलन्त (्) लगा दिया जाता है।

जैसे– विद्युत, श्रीमान्, पृथक् आदि।

वर्णों के उच्चारण स्थान

हम मुख के जिस भाग (अंग) से जिस वर्ण का उच्चारण करते हैं, उसे उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं।

स्थान	वर्ण	वर्ण का उच्चारण स्थान
कण्ठ	क वर्ग तथा ह्, अ, आ	कण्ठ्य
तालु	च वर्ग तथा य्, श्, इ, ई	तालव्य
मूर्धा	ट वर्ग तथा र्, ष्, ऋ	मूर्धन्य
दन्त	त वर्ग तथा ल्, स्	दन्त्य
ओष्ठ	प वर्ग तथा उ, ऊ	ओष्ठ्य
कण्ठतालु	ए, ऐ	कण्ठ-तालव्य
नासिका	अं, ङ, ञ्, ण्, न्, म्	नासिक्य = नासिका + मुँह
कण्ठोष्ठ	ओ, औ	कण्ठोष्ठ्य = कष्ठ + ओष्ठ
दन्तोष्ठ	व	दन्तोष्ठ्य = दन्त + ओष्ठ

व्यंजन और स्वर का मेल

व्यंजन वर्ण में मिलने पर स्वर वर्ण अपना रूप बदल लेते हैं। इस बदले रूप को मात्रा कहते हैं।

स्वरों की मात्राएँ

स्वर	मात्रा चिह्न	मात्रा संयुक्त रूप
अ	कोई नहीं	क् + अ = क
आ	ा	क् + आ = का
इ	ि	क् + इ = कि
ई	ी	क् + ई = की
उ	ु	क् + उ = कु
ऊ	ू	क् + ऊ = कू
ऋ	ृ	क् + ृ = कृ
ए	े	क् + ए = के
ऐ	ै	क् + ऐ = कै
ओ	ो	क् + ओ = को

औ	ौ	क् + औ = कौ
अं	ं	क् + अं = कं
अः	ः	क् + अः = कः
अँ	ँ	क् + अँ = कँ

आपने क्या सीखा

(1) भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण (अक्षर) है।
(2) अक्षरों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।
(3) स्वर के तीन भेद–ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत होते हैं।
(4) स्वरों की सहायता से बोले जाने वाले अक्षर व्यंजन हैं।
(5) हिंदी में 11 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं।
(6) क् से म् तक 35 स्पर्श व्यंजन तथा 5 वर्ग हैं।
(7) उच्चारण के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के हैं।
(8) प्रयत्न के दो भेद–बाह्य तथा आभ्यंतर हैं।

अभ्यास

1. वर्ण की परिभाषा दीजिए, हिंदी में कुल कितने वर्ण हैं ?

_____

2. स्वर किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के हैं ?

_____

3. व्यंजन की परिभाषा तथा उसके प्रकार लिखिए।

_____

4. भाषा की सबसे छोटी इकाई क्या है ?

_____

5. अंतर बताइए–

(क) स्वर एवं व्यंजन,
(ख) दीर्घ एवं प्लुत स्वर,
(ग) अंत:स्थ एवं ऊष्म,
(घ) अनुस्वार एवं विसर्ग,
(ङ) अल्पप्राण एवं महाप्राण।

6. दिये गए स्वरों में से ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर छाँटकर नीचे लिखिए–

आ, उ, इ, ए, ऊ, औ, अ, ई, ओ, ऐ।

दीर्घ स्वर– _____

ह्रस्व स्वर– _____

7. प्रयत्न के कितने भेद हैं ?

_____

8. सही कथन के सामने सही (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाएँ।

(क) वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। ◯

(ख) व्यंजनों की कुल संख्या 52 है। ◯

(ग) स्पर्श व्यंजन में 25 वर्ण होते हैं। ◯

(घ) 'अ' का उच्चारण स्थान तालु है। ◯

(ङ) प्रयत्न के तीन भेद होते हैं। ◯

(च) उच्चारण के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के हैं। ◯

9. नीचे दिए गए वर्णों के उच्चारण स्थान लिखिए–

वर्ण	**उच्चारण स्थान**
इ	_____
ऋ	_____
क	_____
प	_____
ट	_____

3 शब्द-विचार
(Morphology)

भाषा की दूसरी इकाई 'शब्द' कहलाती है। शब्दों का हमारे जीवन में अधिक महत्त्व है। इसी के आधार पर अनेक कार्य सम्पन्न होते हैं।

शब्द की परिभाषा–एक अथवा एक से अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है। जैसे–एक वर्ण से बने–'न' का अर्थ (नहीं), 'व' का अर्थ (और) आदि शब्द हैं तथा अनेक वर्णों से बने–महल, नमक, ताजमहल, नगर आदि।

शब्दों के भेद

(i) रचना के आधार पर।

(ii) उत्पत्ति के आधार पर।

(iii) अर्थ के आधार पर।

(iv) वाक्य प्रयोग के आधार पर।

(i) रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण– इस आधार पर शब्द निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं–

1. रूढ़ शब्द 2. यौगिक शब्द 3. योगरूढ़ शब्द।

1. रूढ़ शब्द–वे शब्द जिनको अलग-अलग करने पर कोई सार्थक अर्थ न निकले, ऐसे शब्द रूढ़ शब्द कहलाते हैं।

जैसे– हिरन = हि, र, न। मित्र = मि, त्र

2. यौगिक शब्द–वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं।

जैसे– धर्म + शाला = धर्मशाला। दूध + वाला = दूधवाला।

3. योगरूढ़ शब्द–ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बने हों, पर किसी विशेष अर्थ को दर्शाते हों, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं।

जैसे– जलज = जल + ज (विशेष अर्थ-कमल)।

(ii) उत्पत्ति के आधार पर– इस आधार पर शब्द निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं-

1. तत्सम शब्द–संस्कृत के जो शब्द अपने मूल रूप में ही हिंदी में प्रयोग होते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं।

जैसे– स्नेह, भ्राता, अग्नि आदि।

2. तद्भव शब्द–हिंदी के वे शब्द जो संस्कृत शब्दों में परिवर्तन के साथ बने हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

जैसे– गाय = गौ।

3. देशज शब्द–वे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में आ गए हैं, देशज शब्द कहलाते हैं।

जैसे– झुग्गी, खाट, पगड़ी, पेट।

4. **विदेशी शब्द**–हिंदी में अनेक शब्द ऐसे हैं, जो विदेशी भाषाओं से लिए गए हैं। ऐसे शब्दों को विदेशी शब्द कहते हैं।

जैसे– टेलीविज़न (अंग्रेज़ी), किताब (फ़ारसी), हलवाई (अरबी), चाय (चीनी), पुलिस (फ्रांसीसी), चम्मच (तुर्की)।

(iii) अर्थ के आधार पर–

1. **सार्थक शब्द**–जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ हो, वे सार्थक शब्द कहलाते हैं।

जैसे– लड़का, मकान, फूल, बाज़ार आदि।

2. **निरर्थक शब्द**–जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता, वे निरर्थक शब्द कहलाते हैं।

जैसे– रोटी-वोटी, पानी-वानी। यहाँ 'वोटी' और 'वानी' निरर्थक शब्द हैं।

(iv) वाक्य प्रयोग के आधार पर–

1. **विकारी शब्द**–वे शब्द जो लिंग, कारक तथा वचन आदि में परिवर्तन के कारण परिवर्तित होते हैं, विकारी शब्द होते हैं।

जैसे– घोड़ा, घर, पीला, वह जाता है आदि। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम (ग) विशेषण (घ) क्रिया।

2. **अविकारी शब्द**–वे शब्द जिनका रूप प्रयोग के कारण न बदल सके, अविकारी शब्द होते हैं।

जैसे– (क) खिलाड़ी तेज़ दौड़ता है।

(ख) खिलाड़ी तेज़ दौड़ते हैं।

अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–

(क) क्रिया विशेषण (ख) संबंध बोधक (ग) समुच्चय बोधक (घ) विस्मयादिबोधक।

आपने क्या सीखा

1. दो या दो से अधिक वर्णों से बनी सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं।
2. अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं।
3. उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं।

अभ्यास

1. शब्द से क्या तात्पर्य है ?

_____

2. तत्सम तथा तद्भव शब्द क्या हैं ?

_____

3. विकारी शब्द की परिभाषा तथा उसके भेद बताइए।

_____

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) भाषा की दूसरी इकाई _____ कहलाती है।

(ख) संस्कृत से आए शब्द जो हिंदी में प्रयुक्त हैं _____ कहलाते हैं।

(ग) रचना के आधार पर शब्द _____ प्रकार के होते हैं।

(घ) वे शब्द जिनका कोई अर्थ नहीं होता _____ शब्द हैं।

(ङ) वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बनते हैं _____ शब्द कहलाते हैं।

5. नीचे दिए शब्दों में से सार्थक एवं निरर्थक शब्द छाँटकर लिखिए–

पानी, फूल, वानी, ओटी, मकान, वूल।

सार्थक शब्द _____

निरर्थक शब्द _____

6. सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

टेलीविज़न	_____	(देशज/विदेशी शब्द)
चम्मच	_____	(विदेशी/देशज शब्द)
खाट	_____	(तद्भव/तत्सम)
लड़का	_____	(विकारी/अविकारी)
गाय	_____	(तद्भव/तत्सम)

7. अविकारी शब्द किसे कहते हैं, ये कितने प्रकार के हैं ?

_____

_____

_____

_____

4 संज्ञा (Noun)

संज्ञा का अर्थ है–नाम। संसार में हर प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि का कोई न कोई नाम होता है।

संज्ञा की परिभाषा–किसी प्राणी, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे–प्राणी–अजय, हाथी, चूहा आदि। वस्तु–कुर्सी, मेज़, कलम आदि। स्थान–आगरा, मथुरा, नेपाल आदि। भाव–सौंदर्य, बचपन आदि।

संज्ञा के प्रकार

संज्ञाएँ पाँच प्रकार की होती हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)
2. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)
3. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)
4. समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun)
5. पदार्थ (द्रव्य) वाचक संज्ञा (Material Noun)

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)**—जिस संज्ञा से किसी एक ही व्यक्ति या वस्तु का ज्ञान हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

   जैसे– कौशल, दिल्ली, ताजमहल आदि।

2. **जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)**—जिस संज्ञा से एक ही जाति के सब पदार्थों का ज्ञान हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

   जैसे– मेज़, कुत्ता, नदी आदि।

3. **भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)**—जिस संज्ञा से पदार्थों के गुण, स्वभाव, दोष, स्थिति, व्यापार आदि का ज्ञान हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

   जैसे– बुढ़ापा, प्यास, ईर्ष्या, यौवन इत्यादि।

4. **समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun)**—जिस संज्ञा से किसी समुदाय या समूह का बोध हो, उसे समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं।

   जैसे– पुस्तकालय, सेना, मेला, कक्षा आदि।

5. **पदार्थ (द्रव्य) वाचक संज्ञा (Material Noun)**—जिस संज्ञा से किसी पदार्थ (द्रव्य) का बोध हो,उसे पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं।

   जैसे– तेल, चाँदी, सोना, जल, डीजल इत्यादि।

भाववाचक संज्ञाएँ बनाना–

1.	**जातिवाचक संज्ञा**	**–**	**भाववाचक संज्ञा**
	मित्र	–	मित्रता

	बच्चा	–	बचपन
	सेवक	–	सेवा
	नेता	–	नेतृत्व
	चोर	–	चोरी
2.	**विशेषण**	**–**	**भाववाचक संज्ञा**
	मधुर	–	मधुरता
	सरल	–	सरलता
	कठिन	–	कठिनता
	निर्धन	–	निर्धनता
	स्वच्छ	–	स्वच्छता
3.	**सर्वनाम**	**–**	**भाववाचक संज्ञा**
	अपना	–	अपनापन
	पराया	–	परायापन
	निज	–	निजता
	अहं	–	अहंकार
4.	**क्रिया**	**–**	**भाववाचक संज्ञा**
	हारना	–	हार
	जीतना	–	जीत
	उड़ना	–	उड़ान
	धोना	–	धुलाई
	चुनना	–	चुनाव
	लड़ना	–	लड़ाई
5.	**अव्यय**	**–**	**भाववाचक संज्ञा**
	मना	–	मनाही
	वाह	–	वाहवाही
	धिक्	–	धिक्कार
	समीप	–	समीपता
	निकट	–	निकटता

आपने क्या सीखा

(1) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(2) संज्ञा के पाँच भेद होते हैं।

(3) भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्द में प्रायः 'ता' जोड़ते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?

_____

(ख) व्यक्तिवाचक तथा जातिवाचक संज्ञा में क्या अंतर है ?

_____

(ग) संज्ञा की परिभाषा लिखकर उसके भेद भी बताइए।

_____

(घ) मित्रता, शत्रुता तथा मिठास किस प्रकार की संज्ञाएँ हैं ? स्पष्ट कीजिए।

_____

(ङ) विशेषण से चार भाववाचक संज्ञाएँ बनाकर लिखिए।

_____

2. सही के सामने सही (✓) का तथा गलत के आगे (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) मित्रता, सरलता, बचपन भाववाचक संज्ञा हैं। ◯

(ख) नदी, भारत, कुत्ता व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं। ◯

(ग) सेना, कक्षा, परिवार जातिवाचक संज्ञा हैं। ◯

(घ) ताँबा, तेल, सोना, घी पदार्थवाचक संज्ञा हैं। ◯

4. प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाइए–

(क) मित्र _____

(ख) सरल _____

(ग) पशु _____

(घ) लिखना _____

(ङ) लघु _____

5 सर्वनाम (Pronoun)

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

(i) सचिन ने कहा, ''मैं कानपुर जाऊँगा।''

(ii) छात्रों ने कहा, ''हम पढ़ेंगे।''

(iii) वह खाना बना रही है।

पहले वाक्य में 'मैं' का प्रयोग सचिन के लिए किया गया है। दूसरे वाक्य में 'हम' का प्रयोग छात्रों के लिए किया गया है। तीसरे वाक्य में 'वह' शब्द किसी लड़की के लिए आया है।

सर्वनाम की परिभाषा–वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–मैं, तुम, हम, वे इत्यादि।

सर्वनाम के प्रकार

सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)
2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)
4. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)
6. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)—जो सर्वनाम शब्द बोलने वाले, सुनने वाले अथवा जिसके बारे में कुछ कहा जाए, के लिए प्रयोग किए जाएँ, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे– मैंने तुमसे कहा कि वह स्कूल नहीं जाएगा।

इस वाक्य में मैंने–कहने वाले के लिए,

तुमसे–सुनने वाले के लिए,

वह–अन्य पुरुष के लिए प्रयोग किया गया है।

पुरुषवाचक सर्वनाम को तीन वर्गों में बाँटा गया है–

(क) उत्तम पुरुष (First Person)

(ख) मध्यम पुरुष (Second Person)

(ग) अन्य पुरुष (Third Person)

(क) उत्तम पुरुषवाचक (First Person)—बोलने वाला जिन शब्दों को अपने लिए प्रयोग करता है, वे शब्द 'उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं।

जैसे– मैं, हम, मेरा आदि।

(ख) मध्यम पुरुषवाचक (Second Person)— बोलने वाला जिन शब्दों का प्रयोग सुनने वाले के लिए करता है, वे 'मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं।

जैसे– आप, तुम, तुम्हें आदि।

(ग) अन्य पुरुषवाचक (Third Person)— जिसकी बात कही जाए या जिस व्यक्ति के बारे में बातें की जाती हैं, उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे– वे, उन्हें, वह, उसने आदि।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)—** जिस सर्वनाम शब्द से किसी पास या दूर की वस्तु अथवा व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, वह निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है।

   जैसे– यह, वह, ये, वे आदि।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)—** जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत नहीं करते, वह अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है।

   जैसे– कुछ, किन्हीं, कोई आदि।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)—** जो सर्वनाम वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंधा प्रकट करे, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

   जैसे– जैसा, जिसने, जिसे आदि।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)—** जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

   जैसे– कहाँ, कौन, कब, क्या, किसने इत्यादि।

6. **निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)—** जिस सर्वनाम शब्द से वाक्य के कर्त्ता के साथ अपनापन प्रकट हो, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

   जैसे– स्वयं, आप, आप ही इत्यादि।

शब्द रूपावली

'मैं' (उत्तम पुरुष)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मैं/मैंने	हम/हमने
कर्म	मुझे/मुझको	हमे/हमको
करण	मुझसे	हमसे
संप्रदान	मुझे/मेरे लिए	हमे/हमारे लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
संबंध	मेरा, मेरे, मेरी	हमारा, हमारे, हमारी
अधिकरण	मुझमें, मुझ पर	हममे, हम पर

'तू' (मध्यम पुरुष)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	तू/तूने	तुम/तुमने
कर्म	तुझे/तुझको	तुम्हें/तुमको
करण	तुझसे	तुमसे
संप्रदान	तुझे/तेरे लिए	तुम्हें/तुम्हारे लिए
अपादान	तुझसे	तुमसे
संबंध	तेरा, तेरे, तेरी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
अधिकरण	तुझमें, तुझ पर	तुममें, तुझ पर

'वह' (अन्य पुरुष)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	वह/उसने	वे/उन्होंने
कर्म	उसको/उसे	उनको/उन्हें
करण	उससे	उनसे
संप्रदान	उसके लिए/उसको	उनके लिए/उनको
अपादान	उससे	उनसे
संबंध	उसका, के, की	उनका, के, की
अधिकरण	उसमें, उस पर	उनमें, उस पर

आपने क्या सीखा

(1) संज्ञा शब्द के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहा जाता है।

(2) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं।

(3) सर्वनाम के छः भेद होते हैं।

(4) जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाए, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सर्वनाम की परिभाषा लिखिए।

_____

(ख) सर्वनाम के कितने भेद हैं ? उदाहरण दीजिए।

_____

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं ?

_____

(घ) निश्चयवाचक सर्वनाम से क्या आशय है ?

_____

(ङ) प्रश्नवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं ?

_____

2. सही के आगे (✓) का तथा गलत के आगे (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) 'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम है। ◯

(ख) 'यह' पुरुषवाचक सर्वनाम है। ◯

(ग) 'मैं' प्रथमपुरुषवाचक सर्वनाम है। ◯

(घ) 'वे' निश्चयवाचक सर्वनाम है। ◯

(ङ) 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम है। ◯

3. खाली स्थानों को उचित सर्वनाम से भरिए–

(क) _____ कल पैसे भेजूँगा।

(ख) _____ अपने घर जा रहा है।

(ग) _____ अपना कार्य करो।

(घ) _____ कब स्कूल जाएँगे ?

4. नीचे दिए वाक्यों में से सर्वनाम छाँटकर लिखिए–

(क) तुम उसे भगा दो।

(ख) जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा।

(ग) मैं कल घर गया था।

(घ) यह कलम सुंदर है।

(ङ) तुम वहाँ क्यों गए ?

6 लिंग तथा वचन
(Gender & Number)

हिंदी में दो वर्ग हैं–पुरुषवर्ग एवं स्त्रीवर्ग। इन दोनों वर्गों का बोध कराने के लिए हिंदी व्याकरण में लिंग निश्चित किए गए हैं।

लिंग शब्द का अर्थ–चिह्न अथवा निशान। पुरुष जाति की पहचान कराने वाले शब्द पुल्लिंग तथा स्त्री जाति की पहचान कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

लिंग की परिभाषा–संज्ञा शब्द के जिस रूप से किसी पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो, उसे हम लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

हिंदी भाषा में लिंग के दो भेद हैं–

1. **पुल्लिंग (Masculine Gender)—** जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।

   जैसे– पिता, नाना, शेर, चाचा, दादा, इत्यादि।

2. **स्त्रीलिंग (Feminine Gender)—** जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।

   जैसे– माता, नानी, शेरनी, चाची, दादी इत्यादि।

पुल्लिंग की पहचान

1. 'अ' से अंत होने वाले हिंदी के तद्भव शब्द प्रायः पुल्लिंग होते हैं। जैसे–जंगल, गाँव, मेज़, आग इत्यादि।
2. पर्वतों, ग्रहों, पेड़ों, समुद्रों, अनाजों, दिनों तथा द्रव पदार्थों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं।
3. शब्द के अंत में निम्न प्रत्यय आने पर पुल्लिंग शब्द बनते हैं–

   आ – पिता, पैसा, छाता आदि।
   पा – पुजापा, बुढ़ापा आदि।
   पन – पागलपन, बचपन, लड़कपन आदि।
   न – पवन, नमन, हवन आदि।
   औड़ा – पकौड़ा, भगौड़ा, हथौड़ा आदि।

4. मानव शरीर के कुछ अंग भी पुल्लिंग होते हैं। जैसे–कान, नाक, हाथ, मस्तक, गला, पैर आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान

1. भाषाओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

   जैसे– संस्कृत, अंग्रेज़ी, जापानी, हिंदी, उर्दू आदि।

2. संस्कृत के आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

   जैसे– परीक्षा, अहिंसा, पा, सभा, दया, सूचना इत्यादि।

3. ईकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं।

जैसे– नदी, रोटी, दूरी, नौकरी, सर्दी, गर्मी इत्यादि।

4. बोलियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

जैसे– हिंदी, पंजाबी, मराठी, बंगाली, कश्मीरी इत्यादि।

5. जिन शब्दों के अंत में 'इया', 'आवट', 'ता', 'आई' आदि आते हैं, वे शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं।

जैसे– इया – कुटिया, डिबिया, लठिया इत्यादि।

आवट – थकावट, मिलावट, लिखावट इत्यादि।

ता – दासता, लघुता, मित्रता इत्यादि।

आई – मिठाई, पढ़ाई, लिखाई इत्यादि।

6. जिन शब्दों के अंत में 'नी' व 'इमा' आए, वे शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं।

जैसे– नी – जननी, भरनी, करनी इत्यादि।

इमा – कालिमा, लालिमा, नीलिमा इत्यादि।

वचन (Number)

वचन का संबंध संख्या से होता है। कोई वस्तु या प्राणी संख्या में एक है अथवा अधिक, इसका ज्ञान वचन के अंतर्गत किया जाता है–

उदाहरणार्थ–

(i) कुत्ता बैठा है। (ii) कुत्ते बैठे हैं।

पहले वाक्य में कुत्ता 'एक' है। अतः इसे 'एकवचन' कहते हैं तथा दूसरे वाक्य में कुत्तों की संख्या एक से अधिक है, इसे 'बहुवचन' कहते हैं।

वचन की परिभाषा–शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह एक के लिए है अथवा एक से अधिक के लिए, उसे वचन कहते हैं। जैसे–घोड़ा-घोड़े, बकरी-बकरियाँ आदि।

वचन के भेद

हिंदी भाषा में वचन के दो भेद हैं–

1. **एकवचन (Singular Number)—** शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि प्राणी, वस्तु आदि की संख्या एक है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे–सूर्य, बस, मेज़, घड़ी आदि।
2. **बहुवचन (Plural Number)—** शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि प्राणी, वस्तु आदि एक से अधिक हैं, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे–मुर्गे, कुत्ते, घोड़े इत्यादि।

कुछ शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूपों पर ध्यान दें–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन

शब्द के अंत में 'अ' को 'एं' (ें) कर दिया जाता है–

बहन	बहनें	आँख	आँखें
गाय	गायें	बात	बातें

शब्द के अंत में 'आ' के आगे 'एँ' (ँ) जोड़ दिया जाता है–

अध्यापिका	अध्यापिकाएँ	पत्रिका	पत्रिकाएँ
कन्या	कन्याएँ	कविता	कविताएँ

शब्द के अंत में 'आ' (ा) के स्थान पर 'ए' (े) कर देते हैं–

बेटा	बेटे	पजामा	पजामे
घोड़ा	घोड़े	मुर्गा	मुर्गे

शब्द के अंत में 'ई' (ी) को 'इयाँ' कर दिया जाता है–

गाड़ी	गाड़ियाँ	साड़ी	साड़ियाँ
घोड़ी	घोड़ियाँ	बीड़ी	बीड़ियाँ

ध्यान देने योग्य बातें–

(i) सदैव एकवचन में प्रयोग होने वाले शब्द–

सत्य, घी, जनता, वर्षा आदि।

(ii) सदैव बहुवचन में प्रयोग होने वाले शब्द–

समाचार, प्राण, दर्शन, होश इत्यादि।

(iii) जातिवाचक शब्दों का प्रयोग एकवचन में किया जाता है–

दशहरी आम बहुत स्वादिष्ट होता है।

(iv) जिन शब्दों के अंत में जाति, दल अथवा सेना का प्रयोग होता है, वे एकवचन में प्रयोग होते हैं। जैसे–स्काउट दल सेवा कर रहा है। आज थल सेना का स्थापना दिवस है।

आपने क्या सीखा

(1) संज्ञा के जिस रूप से पुरुष जाति का ज्ञान होता है, उसे पुल्लिग कहते हैं।
(2) संज्ञा के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
(3) संज्ञा के जिस रूप से हमें उसकी संख्या का ज्ञान हो, उसे वचन कहते हैं।
(4) हिंदी भाषा में वचन दो प्रकार के हैं–(क) एकवचन, (ख) बहुवचन।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) लिंग की परिभाषा व उसके भेद भी लिखिए।

_____

(ख) पुल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के कोई दो नियम लिखिए।

_____

(ग) वचन किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के हैं ?

_____

(घ) एकवचन से बहुवचन का प्रयोग कब किया जाता है ?

_____

(ङ) सदैव एकवचन और बहुवचन में प्रयोग होने वाले शब्द लिखिए ?

_____

2. निम्न शब्दों के लिंग बताइए–

(क) रस्सा _____

(ख) घण्टी _____

(ग) हाथ _____

(घ) दया _____

(ङ) माता _____

(च) आग _____

3. निम्न शब्दों के बहुवचन रूप बनाइए–

(क) रस्सी _____

(ख) गाड़ी _____

(ग) बकरी _____

(घ) मुर्गा _____

(ङ) चिड़िया _____

4. निम्न शब्दों के एकवचन रूप लिखिए–

(क) नदियाँ _____

(ख) पंखे _____

(ग) किताबें _____

(घ) वस्तुएँ _____

(ङ) छात्राएँ _____

5. शरीर के चार अंग पुल्लिंग में लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

7 कारक व उसके भेद
(Case & Its Kinds)

परिभाषा–संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ जाना जाए, उसे 'कारक' कहते हैं।

विभक्ति–कारकों का रूप प्रकट करने के लिए उनके साथ जो शब्द चिह्न के रूप में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें **विभक्ति** कहते हैं।

जैसे– में, पर, से, के द्वारा इत्यादि।

इन विभक्तियों को परसर्ग भी कहा जाता है।

कारक के प्रकार

कारक के 8 प्रकार (भेद) हैं। इनके निम्नांकित चिह्न हैं–

	कारक	चिह्न/विभक्ति
1.	कर्त्ता	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से, के द्वारा
4.	संप्रदान	के लिए
5.	अपादान	से
6.	संबंध	का, की, के आदि
7.	अधिकरण	में, पर
8.	संबोधन	हे, रे, अरे ! आदि

1. **कर्त्ता कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का ज्ञान हो, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं।

जैसे– (i) अखिल ने पानी पिया।

(ii) सुनीता घर जाती है।

कर्त्ता कारक में कहीं पर विभक्ति चिह्न 'ने' का प्रयोग होता है और कहीं नहीं। जैसे–पहले वाक्य में अखिल के संग 'ने' विभक्ति चिह्न का उपयोग है और दूसरे वाक्य में 'ने' चिह्न को प्रयुक्त नहीं किया गया है।

'ने' विभक्ति का प्रयोग सकर्मक क्रियाओं के साथ भूतकाल में किया जाता है। जैसे–सुधीर ने खाना खाया।

यह विभक्ति वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल में प्रयोग नहीं होती है। जैसे–

(क) संदीप घूमता है।

(ख) वह कार्य करेगा।

2. **कर्म कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

जैसे– (i) रमेश ने पत्र लिखा।

(ii) कृष्ण ने कंस को मारा।

इन वाक्यों में पत्र और कंस कर्म कारक हैं।

कर्म का कारक चिह्न 'को' है। 'ने' की भाँति कहीं-कहीं 'को' विभक्ति छिपी रहती है।

कभी-कभी 'को' कारक के स्थान पर अन्य कारक का प्रयोग होता है। जैसे–मैंने आपसे कहा था। यहाँ 'आपसे' कर्म कारक है।

3. **करण कारक–**संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का साधन, कारण, रीति आदि का ज्ञान हो, उसे करण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति से, के द्वारा है।

जैसे– (i) धोबी ने डंडे से गधे को मारा।

(ii) सेठ जी ने सामान सेवक द्वारा भेजा।

4. **संप्रदान कारक–**संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से कुछ कह दिए जाने या किसी के लिए क्रिया करने का ज्ञान हो, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न को, के लिए है।

जैसे– (i) निर्धन को दान दो।

(ii) अमित ने सुरेश के लिए उपहार लिया।

5. **अपादान कारक–**संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से पृथक् होना, दूरी, तुलना आदि का ज्ञान हो, उसे अपादान-कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'से' है।

जैसे– (i) वृक्ष से फल गिरा।

(ii) दही से मट्ठा बना।

(iii) दूध से दही बनता है।

6. **संबंध कारक–**संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी के साथ संबंध ज्ञात हो, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति का, की, के, ना, नी, ने तथा रा, री, रे हैं।

जैसे– (i) राम दशरथ के पुत्र हैं।

(ii) यह सोहन का भाई है।

(iii) गीता राजन की बहन है।

7. **अधिकरणकारक–**संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का आधार प्रकट हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'में', 'पर' है।

जैसे– (i) आज विद्यालय में उत्सव है।

(ii) तालाब में मछलियाँ हैं।

(iii) अतुल छत पर खेलता है।

8. **संबोधन कारक–**वाक्य में जिन शब्दों से किसी को पुकारा जाए, बुलाए जाए या सचेत किया जाए, उसे संबोधन कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति हे, हो, रे, अरे है।

जैसे– (i) हे ईश्वर! हमारी रक्षा करो।

(ii) अरे! लड़ो मत।

(iii) रमेश! इधर आना।

आपने क्या सीखा

(1) कारक के आठ प्रकार के (भेद) हैं।

(2) विभक्ति 'को' का संबंध कर्म कारक से है।

(3) जिस संज्ञा या सर्वनाम से अलग होना, दूरी, तुलना आदि का ज्ञान होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कारक किसे कहते हैं ? उनके प्रकार लिखिए।

_____

(ख) सभी कारकों के नाम व उनके चिह्न लिखिए।

_____

(ग) करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर बताइए।

_____

(घ) संबंध कारक किसे कहते हैं ?

_____

2. कारक विभक्ति के सामने उस कारक का नाम निर्देश करें-

(क) से _____ (ख) ने _____

(ग) को _____ (घ) हे _____

(ङ) में _____ (च) द्वारा _____

3. रिक्त स्थानों पर उपयुक्त कारक-चिह्न भरिए–

(क) पेड़ _____ फल गिरता है।

(ख) राम _____ पत्र लिखा।

(ग) यह राम _____ मंदिर है।

(घ) सुरेश सड़क _____ घूमता है।

(ङ) निर्धन _____ दान दो।

(च) गंगा हिमालय _____ निकलती है।

4. कारक संबंधी अशुद्धियों को दूर करके उन्हें पुनः लिखिए–

(क) राम से पत्र लिखा।

_____

(ख) महेश हमको ले गया।

_____

(ग) बिस्तर में मत बैठो।

_____

(घ) नागेन्द्र चोर पकड़ा।

_____

(ङ) यह दान का पात्र है।

_____

(च) कृष्ण निर्धन को वस्त्र दिए।

_____

(छ) वह राम के लिए घर है।

_____

5. सही के आगे (✓) का तथा गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) कारकों की कुल संख्या 6 है। ◯

(ख) कर्म कारक की विभक्ति को है। ◯

(ग) संप्रदान कारक की विभक्ति से है। ◯

(घ) अपादान की विभक्ति से है। ◯

(ङ) अधिकरण की विभक्ति में है। ◯

8 विशेषण (Adjective)

विशेषण की परिभाषा–जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या, मात्र आदि बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे–सीमा मधुर गीत सुनाती है। इस वाक्य में 'मधुर' शब्द गीत की विशेषता बताता है। अतः यह शब्द 'विशेषण' है।

विशेष्य–विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं।

जैसे–मधुर शब्द गीत शब्द की विशेषता बताता है। अतः यहाँ गीत शब्द विशेष्य है।

विशेषण के भेद

(i) गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)

(ii) संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number)

(iii) परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)

(iv) संकेतवाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)

(i) गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)— जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण-दोषादि का ज्ञान कराए, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे–
गुण – भला, अच्छा, सच्चा, सरल, दयालु आदि।
रंग – केसरिया, पीला, श्वेत, नीला आदि।
स्वाद – मीठा, चटपटा, खट्टा, कड़वा आदि।
स्थान – चौड़ा, गहरा, ऊँचा, नीचा आदि।
समय – प्रातः, शाम, रात्रि, दोपहर आदि।
गन्ध – सुगन्ध, दुर्गंध आदि।
आकार – छोटा, बड़ा, मोटा, पतला आदि।

(ii) संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number)— जो विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराए, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे– (क) मेरे पास चार कलम हैं।

(ख) सब लड़के खेलते हैं।

संख्यावाचक विशेषण के दो भाग हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक– जैसे– तीन पुस्तकें, चार हल, चतुर्भुज, पाँच पाण्डव, छः रुपये आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक– जैसे– कुछ पौधे, थोड़े बच्चे, कुछ पैसे आदि।

(iii) परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)— जो विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या परिमाण का ज्ञान कराए, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे– (क) चार किलो आलू लाना।

(ख) मुझे थोड़ा पानी दो।

(ग) आज दो लीटर दूध आया।

(iv) संकेतवाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)— जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की ओर संकेत करते हैं, वे संकेतवाचक विशेषण कहे जाते हैं।

जैसे– (क) वह घर मेरा है।

(ख) यह लड़का गंदा है।

विशेषण की अवस्थाएँ

कभी-कभी दो या दो से अधिक वस्तुओं में तुलना की जाती है। तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं–

1. मूलावस्था (Positive Degree)
2. उत्तरावस्था (Comparative Degree)
3. उत्तमावस्था (Superlative Degree)

1. मूलावस्था (Positive Degree)— जहाँ कोई गुण अथवा दोष मुख्य रूप में होता है।

जैसे– गंदा, सच्चा आदि।

2. उत्तरावस्था (Comparative Degree)— जहाँ कोई गुण या दोष मूलावस्था से अधिक या कम होता है।

जैसे– उससे गंदा, उससे अच्छा आदि।

3. उत्तमावस्था (Superlative Degree)— जहाँ कोई गुण या दोष सबसे अच्छा या सबसे बुरा प्रकट करता है।

जैसे– सबसे स्वच्छ, सर्वोत्तम, सबसे बुरा, सर्वश्रेष्ठ आदि।

उदाहरण–

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
महान्	महानतर	महानतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम

आपने क्या सीखा

(1) विशेषण के चार भेद (प्रकार) हैं।

(2) तुलना हेतु विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं।

(3) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे शब्द विशेषण कहलाते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) विशेषण किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर बताइए।

_____

(ख) विशेषण के कितने भेद हैं ?

_____

(ग) सर्वनाम व विशेषण में क्या अंतर है ?

_____

(घ) संकेतवाचक विशेषण किसे कहते हैं ?

_____

(ङ) विशेषण की कितनी अवस्थाएँ हैं ?

_____

2. निम्न वाक्यों में विशेषण भरिए–

(क) _____ गाय किसकी है ?

(ख) _____ दूध ले जाओ।

(ग) _____ लड़का सो रहा है।

(घ) _____ पुस्तक मेरी है।

3. नीचे दिए विशेषणों की अवस्थाएँ बताइए–

(क) सर्वश्रेष्ठ _____

(ख) सुंदर _____

(ग) महानतर _____

(घ) तीव्रतम _____

4. नीचे दिए शब्दों के उत्तरावस्था के रूप लिखिए–

(क) तीव्र _____

(ख) महान् _____

(ग) लघु _____

9 क्रिया (Verb)

क्रिया की परिभाषा–जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

किसी भी वाक्य में कर्त्ता तथा क्रिया का होना बहुत आवश्यक है।

जैसे– (i) राहुल सो रहा है।

(ii) घोड़ा दौड़ रहा है।

(iii) शोभा खेल रही है।

इन वाक्यों में कर्म नहीं दिया गया है तथा सो रहा, दौड़ रहा, खेल रही आदि क्रियाएँ हैं।

क्रिया के भेद

क्रिया के दो भेद होते हैं–

(1) अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb)

(2) सकर्मक क्रिया (Transitive Verb)

1. **अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb)—** जब वाक्य में क्रिया के साथ कर्म न हो (केवल क्रिया का प्रभाव कर्त्ता पर ही पड़े) तो वह क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है।

   जैसे– (i) आम मीठा है।

   (ii) बच्चा रोता है।

   (iii) गौरी सुंदर है।

2. **सकर्मक क्रिया (Transitive Verb)—** जब वाक्य में क्रिया के साथ कर्म भी दिया हो, तो वह क्रिया सकर्मक क्रिया कही जाती है।

   जैसे– (i) राकेश पुस्तक पढ़ता है।

   (ii) बच्चे बिस्कुट खाते हैं।

   (iii) तुम फूल तोड़ते हो।

पहचान–वाक्य में क्रिया के साथ 'क्या' और 'किसको' प्रश्न करने पर यदि कोई उत्तर मिले, तो क्रिया 'सकर्मक क्रिया' होती है। यदि कोई उत्तर न मिले, तो वह क्रिया 'अकर्मक क्रिया' होती है।

सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं–

(क) एककर्मक क्रिया (Verb with Single Object)

(ख) द्विकर्मक क्रिया (Verb with Two Objects)

(1) एककर्मक क्रिया– जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक ही कर्म दिया जाता है, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे– (i) तुमने पत्र लिखा।

(ii) सोहन ने पैसे दिए।

(2) द्विकर्मक क्रिया– जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे– (i) राम ने श्याम को पैसे दिए।

(ii) मैंने अपने मित्र को पत्र लिखा।

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के भेद

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के पाँच भेद होते हैं–

(i) संयुक्त क्रिया

(ii) सामान्य क्रिया

(iii) नामधातु क्रिया

(iv) प्रेरणार्थक क्रिया

(v) पूर्वकालिक क्रिया

(i) संयुक्त क्रिया–जहाँ दो या अधिक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग होता है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

जैसे– (1) मैं अब पढ़ सकता हूँ।

(2) राधिका ने खाना बनाया।

(ii) सामान्य क्रिया–जहाँ वाक्य में केवल एक क्रिया का प्रयोग होता है, वह सामान्य क्रिया कहलाती है।

जैसे– (1) राम गाता है।

(2) वे गए।

(iii) नामधातु क्रिया–जब वाक्य में प्रयुक्त क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से बनती हैं, तब नामधातु क्रिया कहलाती है।

जैसे– झुठलाना, हथियाना, गर्माना इत्यादि।

(iv) प्रेरणार्थक क्रिया–जहाँ वाक्य में स्वयं कर्त्ता कार्य न करके किसी दूसरे को काम के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

जैसे– (1) अजीत ने नौकर से चाय बनवाई है।

(2) शंकर धोबी से कपड़े धुलवाता है।

प्रेरणार्थक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं–

(क) प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्त्ता स्वयं भी कार्य में शामिल होते हुए प्रेरणा देता है, उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

(ख) द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्त्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को ही कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

(v) पूर्वकालिक क्रिया–किसी मुख्य क्रिया के पूर्व यदि किसी दूसरी क्रिया का प्रयोग हो तो वह पूर्वकालिक क्रिया कही जाती है।

जैसे– (1) वह दौड़कर घर पहुँचा।

(2) छात्र कार्य करके घर गए।

आपने क्या सीखा

(1) जिस शब्द से किसी कार्य का करना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

(2) क्रिया के दो भेद होते हैं।

(3) प्रयोग के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं।

(4) प्रेरणार्थक क्रिया के दो भेद हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) क्रिया किसे कहते हैं ? क्रिया के भेद लिखिए।

_____

(ख) सकर्मक क्रिया किसे कहते हैं ?

_____

(ग) प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद लिखिए।

_____

(घ) सामान्य क्रिया क्या है ?

_____

(ङ) अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं ?

_____

2. सकर्मक व अकर्मक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए–

(क) अमित स्कूल जा रहा है।

_____

(ख) गोविंद पत्र लिख रहा है।

_____

(ग) बच्चा सो रहा है।

_____

3. अंतर बताइए–

(क) पूर्वकालिक तथा सामान्य क्रिया में।

(ख) नामधातु तथा प्रेरणार्थक क्रिया में।

4. पाठ से छः क्रियाएँ छाँटकर बताइए–

5. नीचे दिए गए वाक्यों में से प्रेरणार्थक तथा पूर्वकालिक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए–

(क) उसने वृक्ष लगवा दिए।

(ख) छात्र काम करके घर गए।

(ग) वह खाकर सोता है।

(घ) माँ बच्चे को दूध पिलाती है।

(ङ) पढ़कर क्या करोगे ?

10 वाच्य (Voice)

परिभाषा–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके लिंग तथा वचन का प्रयोग, कर्त्ता कर्म या भाव में से किसके अनुसार किया गया है, वह 'वाच्य' कहलाता है।

वाच्य के भेद

हिंदी में तीन प्रकार के वाच्य होते हैं–

1. **कर्तृवाच्य (Active Voice)—** क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाच्य में उसका प्रयोग कर्त्ता के लिंग तथा वचन के अनुरूप किया गया है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

   जैसे– (i) रमा गाना गाती है।

   (ii) मदन गेंद खेलता है।

2. **कर्मवाच्य (Passive Voice)—** क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाक्य में उसका प्रयोग कर्त्ता के लिंग, वचन के अनुसार न होकर कर्म के लिंग, वचन के अनुसार किया गया है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

   जैसे– (i) सुरेश से पढ़ा नहीं जाता।

   (ii) अनु से दूध नहीं पिया गया।

3. **भाववाच्य (Impersonal Voice)—** क्रिया के जिस रूप में कर्त्ता तथा कर्म की प्रधानता न होकर केवल भाव की प्रधानता हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। इस वाच्य के वाक्य सदैव नकारात्मक ही होते हैं।

   जैसे– (i) गर्मी में घूमा नही जाता।

   (ii) वर्षा में भीगा नहीं जाता।

(क) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन–

(i) क्रिया में 'आ' अथवा 'या' जोड़ते हैं तथा उसके बाद 'जा' धातु को कर्म के लिंग, वचन, काल तथा पुरुष के अनुसार प्रयोग करते हैं।

(ii) कर्त्ता के साथ 'से', 'द्वारा' या 'के द्वारा' जोड़ते हैं।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सुधा नाचती है।	सुधा के द्वारा नाचा जाता है।
सोनी पुस्तक पढ़ती है।	सोनी के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
नवीन काम करता है।	नवीन के द्वारा काम किया जाता है।

(ख) कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन–

(i) क्रिया को अन्य पुरुष एकवचन में कर देते हैं तथा कर्त्ता के साथ 'से' जोड़ देते हैं।

(ii) क्रिया को भूतकाल में बदल देते हैं। काल के अनुसार 'जाना' क्रिया का सही रूप जोड़ देते हैं।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
वह नहीं गाता है।	उससे नहीं गाया जाता है।
बच्चा नहीं सोता।	बच्चे से सोया नहीं जाता।
राकेश नहीं दौड़ता है।	राकेश से नहीं दौड़ा जाता।
सुरेश नहीं चलता है।	सुरेश से चला नहीं जाता।

आपने क्या सीखा

(1) वाच्य मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं।
(2) क्रिया के जिस रूप से उसके लिंग एवं वचन की जानकारी प्राप्त होती है, उसे वाच्य कहते हैं।
(3) वाच्य परिवर्तन में तीनों वाच्यों को एक-दूसरे वाच्य में परिवर्तित किया जा सकता है।

अभ्यास

1. निम्नलिखि प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वाच्य किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

_____

(ख) कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में क्या अंतर है ?

_____

2. नीचे दिए गए वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए–

(क) सुधा नाचती है।
(ख) वह रोता है।
(ग) सोनी पुस्तक पढ़ती है।
(घ) नवीन कार्य करता है।

3. भाववाच्य में बदलिए–

(क) वह नहीं गाता है।
(ख) बालक रोता है।
(ग) हम जल्दी जाएँगे।
(घ) रमेश खेलता है।
(ङ) वह नहीं खेलता है।

4. कर्त्तृवाच्य से भाववाच्य में बदलते समय क्या परिवर्तन होता है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए–

_____

_____

11 क्रिया-विशेषण (Adverb)

परिभाषा–जिस शब्द से क्रिया की विशेषता प्रकट होती है, उसे 'क्रिया-विशेषण' कहते हैं।

जैसे– (i) कल तक वह गृहकार्य कर लेगा।

(ii) मैं बहुत खेलता हूँ।

(iii) नेता आगे-आगे चलते हैं।

ऊपर दिए वाक्यों में कल, मैं, बहुत, आगे-आगे शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं। ऐसे शब्द क्रिया-विशेषण शब्द कहलाते हैं।

क्रिया-विशेषण के भेद

हिंदी भाषा के अंतर्गत क्रिया-विशेषण के भेद निम्नवत् हैं–

1. कालवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Time)
2. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Quantity)
3. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Place)
4. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Manner)

1. कालवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Time)— जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया के होने के समय का ज्ञान हो, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे– (i) वह कल गया।

(ii) वह दिनभर खेलता रहा।

(iii) रमेश रात को सोया।

2. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Quantity)— जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया का परिमाण या मात्रा ज्ञात होती है, उसे परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे– (i) अमित के पास दस रुपये हैं।

(ii) राधा बहुत पढ़ती है।

(iii) उसे दो मीटर कपड़ा दो।

3. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Place)— जिस क्रिया-विशेषण के द्वारा किसी कार्य के स्थान का ज्ञान हो, उस क्रिया को स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे– (i) सोहन कहाँ गया है ?

(ii) रचित घर में सोता है।

(iii) आशा यहाँ है।

4. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Manner)— जिस क्रिया-विशेषण के द्वारा क्रिया के होने वाली रीति का ज्ञान हो, उसे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे– (i) राम धीमे चलता है।

(ii) वह ध्यान से लिखता है।

(iii) बच्चा अचानक रोने लगा।

(iv) वह सच में अच्छी लड़की है।

आपने क्या सीखा

(1) क्रिया-विशेषण के चार भेद होते हैं।

(2) जिस शब्द से क्रिया की विशेषता प्रकट होती है, उसे 'क्रिया-विशेषण' कहते हैं।

(3) जिस विशेषण से क्रिया की मात्रा का ज्ञान हो, उसे परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

(4) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण से क्रिया के स्थान का ज्ञान होता है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) क्रिया-विशेषण किसे कहा जाता है ?

_____

(ख) क्रिया-विशेषण के कितने भेद हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।

_____

(ग) स्थानवाचक व कालवाचक क्रिया-विशेषण में क्या अंतर है ?

_____

(घ) विशेषण तथा क्रिया-विशेषण में क्या भेद है ?

_____

2. निम्न वाक्यों में से क्रिया-विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए–

(क) वह रातभर जागता रहा।

(ख) वह कल घर जाएगा।

(ग) उसे थोड़ा खाना दो।

(घ) तुम कहाँ रहते हो ?

(ङ) श्रमिक दिनभर मेहनत करता है।

_____

_____

3. निम्न क्रिया-विशेषणों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

आज – _____

पाँच – _____

सामने – _____

निरंतर – _____

थोड़ा – _____

4. निम्न वाक्यों में से विशेषण व क्रिया-विशेषण छाँटकर बताइए–

(क) रोहन तेज दौड़ता है।

(ख) राधा अच्छा नाचती है।

(ग) वह कहाँ गया है ?

(घ) श्याम बहुत सोता है।

(ङ) मुझे थोड़े पैसे दो।

(च) तुम कहाँ रहते हो ?

विशेषण

_____

_____

क्रिया-विशेषण

_____

_____

12 उपसर्ग (Prefix)

परिभाषा–वह शब्दांश जो शब्दों के पहले जुड़कर शब्दार्थ में परिवर्तन कर देता है, उपसर्ग कहलाता है।

हिंदी में उपसर्ग बहुत कम होते हैं। ये या तो संस्कृत के होते हैं या उर्दू।

उपसर्ग के भेद

हिंदी भाषा में पाँच प्रकार के उपसर्ग हैं–

(i) संस्कृत के उपसर्ग
(ii) हिंदी के उपसर्ग
(iii) उर्दू के उपसर्ग
(iv) उपसर्ग की तरह प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत अव्यय
(v) अंग्रेज़ी के उपसर्ग

(i) संस्कृत के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अनु	समान, पीछे	अनुसरण, अनुरूप, अनुसार
अन्	नहीं, अभाव	अनेक, अनादर, अनाचार
अति	अधिक	अत्यधिक, अत्याचार
अप	बुरा, नीचा	अपयश, अपशकुन
उत्	ऊँचा, श्रेष्ठ	उत्तम, उद्धार, उत्साह
उप	छोटा, समीप	उपसर्ग, उपवन, उपनयन
परा	पीछे, उल्टा	पराजित, परामर्श, पराधीन
प्र	अधिक, आगे	प्रबल, प्रस्थान, प्रहार
नि	नीचे, निषेध	निमग्न, निबन्ध आदि
दुर्	बुराई, हीन	दुराग्रह, दुर्बुद्धि, दुर्बल
प्रति	हर एक, सामने	प्रत्येक, प्रतिक्षण, प्रतिपल
सह	साथ	सहगामी, सहपाठी, सहयोगी
सम	समान	संबंध, संसार
स्व	अपना	स्वदेश, स्वभाव

(ii) हिंदी के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	बिना, निषेध	अनाम, अज्ञान, अचेत
औ	हीनता, रहित	औगुण, औजार, औघट
अध	आधा	अधजला, अधमरा, अधपका
नि	अभाव	निरोग, निडर, निकम्मा
कु	बुरा	कुपुत्र, कुढंग, कुमार्ग
दु	हीन, बुरा	दुबला, दुकान, दुलारा

(iii) उर्दू के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
बा	सहित, साथ	बाकायदा, बाइज़्ज़त
ला	रहित	लाइलाज, लाजवाब, लाचार
ना	निषेध, नहीं	नादान, नासमझ, नालायक
सर	श्रेष्ठ, मुख्य	सरदार, सरहद, सरकार
हम	समान, साथ	हमराज़, हमवतन, हमउम्र
खुश	प्रसन्न	खुशदिल, खुशहाल, खुशबू
बर	ऊपर	बराबर, बरदाश्त
ऐन	पूरा	ऐनवक्त, ऐनजवानी

(iv) उपसर्गों की भाँति प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत के अव्यय–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
कु	बुरा	कुमार्ग, कुरूप
स	सहित	सजल, सपरिवार, ससन्दर्भ
अध:	नीचे	अधोगति, अधोमुख
पुन:	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण
सह	साथ	सहकारी, सहपाठी, सहकर्मी
इति	ऐसा	इतिहास, इतिश्री

(v) अंग्रेज़ी उपसर्ग–

सब–सब रजिस्ट्रार, सब इंस्पेक्टर।

डिप्टी–डिप्टी मैनेजर, डिप्टी कलेक्टर।

वाइस–वाइस प्रिंसिपल, वाइस एडमिरल।

आपने क्या सीखा

(1) हिंदी में प्राय: चार प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है।

(2) वे शब्दांश जो शब्दों के आगे जुड़कर अर्थ परिवर्तन करते हैं, वह उपसर्ग कहलाते हैं।

अभ्यास

1. उपसर्ग किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

_____

2. उपसर्ग के भेद व प्रत्येक के उदाहरण लिखिए।

_____

3. नीचे दिए शब्दों में उपसर्ग तथा मूल शब्द को अलग-अलग कीजिए–

कुरूप, उपवर्ग, दुराग्रह, सुपुत्र, सुलोचन, प्रत्येक, अचेत, स्वदेश, पराजय

_____

4. निम्न उपसर्गों द्वारा तीन-तीन नए शब्द बनाइए–

अति, प्र, उप, अ, ला, अध

_____

_____

_____

5. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्गों को अलग कीजिए–

उपवन, सुलोचन, नादान, सहनायक, प्रतिक्षण, स्वदेश

_____

6. नीचे दिए उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए–

उपसर्ग		शब्द	नए शब्द
दु:	+	लभ	_____
अन	+	आदर	_____
स्व	+	देश	_____
प्र	+	हार	_____
दु:	+	काम	_____
सह	+	योगी	_____
सत्	+	चित्	_____
बे	+	वजह	_____

13

प्रत्यय
(Suffix)

प्रत्यय की परिभाषा–जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ को बदल देते हैं, वे 'प्रत्यय' कहे जाते हैं।

जैसे–
चाल – चालू – ऊ
लिख – लिखने वाला – ने वाला
बढ़ – बढ़िया – इया

प्रत्यय के भेद

हिंदी भाषा में प्रत्यय के दो भेद होते हैं–

(क) कृदंत प्रत्यय

(ख) तद्धित प्रत्यय

(क) कृदंत प्रत्यय–क्रिया की धातु के अंत में लगने वाले शब्दांश को कृदंत प्रत्यय कहते हैं। इसे कृत प्रत्यय भी कहा जाता है। **जैसे**–सूँघता, भागता, दौड़ता।

कृदंत प्रत्यय के प्रकार–

कृदंत प्रत्यय के पाँच प्रकार हैं–

1. **कर्तृवाचक प्रत्यय**–ऐसे प्रत्यय जो क्रिया करने वाले का ज्ञान कराएँ, उन्हें कर्तृवाचक प्रत्यय कहते हैं।

जैसे–
वाला – दौड़ने वाला, दूधवाला, सब्जीवाला।
सार – चलनसार, मिलनसार।
लू – चालू, झगड़ालू।
हुआ – सोया हुआ, खोया हुआ, रोता हुआ।
ऐया – खिलैया, गवैया, नचैया।

2. **कर्मवाचक प्रत्यय**–वे कृदंत, जो सकर्मक क्रिया के सामान्य भूत में 'हुआ' या 'हुई' लगने से बने, वे कर्मवाचक प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– पाया हुआ, जागी हुई, सूँघा हुआ आदि।

3. **भाववाचक प्रत्यय**–ऐसे प्रत्यय भाववाचक संज्ञा का कार्य करते हैं तथा क्रिया के अंत में आ, आई, आन, आप, ता, ती, ना, नी, पन, रा आदि लगाकर बनते हैं।

जैसे–
आन – समान, उड़ान, लगान।
आव – लिखाव, चढ़ाव, बहाव।
ई – हँसी, गिरी, बोली।

त	–	खपत, बचत, बनत।
आई	–	लड़ाई, सुनवाई, लिखाई।
आवट	–	बनावट, सजावट, लिखावट।

4. करणवाचक प्रत्यय– ये क्रिया के अंत में ना, आ, ई, नी, ऊ आदि लगाने से बनते हैं।

जैसे–

न	–	बेलन, बंधन, झारन।
ई	–	चिमटी, खेती, राखी।
ऊ	–	झाड़ू, साढ़ू।
आ	–	डेरा, चिमटा, भाला, झूला।

5. क्रियावाचक प्रत्यय– इन प्रत्ययों से क्रिया के अर्थ का बोध होता है।

जैसे– रोता हुआ, पढ़ता हुआ, लड़ता हुआ, भागता हुआ आदि।

(ख) तद्धित प्रत्यय– ऐसे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगकर नए शब्द की रचना करते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

तद्धित प्रत्यय के प्रकार– तद्धित प्रत्यय के निम्नांकित पाँच प्रकार (भेद) होते हैं–

1. कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–

गर	–	जादूगर, सौदागर, बाजीगर।
वाला	–	दूधवाला, सब्ज़ीवाला, लकड़ीवाला।
इया	–	मुखिया, दिवालिया।
ई	–	खेती, सहेली, तेली।

2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय–

आपा	–	बुढ़ापा, मोटापा।
ता	–	लघुता, सुंदरता, प्रभुता।
आई	–	भलाई, मलाई, सच्चाई।
ई	–	तेली, रेती, रोती।

3. लघुवाचक तद्धित प्रत्यय–

या	–	लुटिया, डिबिया।
ई	–	घंटी, रस्सी, डंडी।

4. विशेषण बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

आ	–	भागा, जागा, प्यासा, दौड़ा।
वाँ	–	आठवाँ, चौदहवाँ, सातवाँ।
ऊ	–	झगड़ालू, बाज़ारू।

5. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय–

इया – मुंबइया।

ई – मराठी, गुजराती।

आपने क्या सीखा

(1) जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में लगाए जाएँ, वे प्रत्यय कहे जाते हैं।

(2) प्रत्यय के दो भेद हैं।

(3) कृदंत प्रत्यय के पाँच भेद हैं।

(4) तद्धित प्रत्यय के भी पाँच भेद हैं।

(5) संज्ञा और क्रिया के अंत में प्रत्यय लगते हैं।

अभ्यास

1. प्रत्यय किसे कहा जाता है ? उदाहरण देकर समझाइए।

_____

2. प्रत्यय के कितने भेद हैं ?

_____

3. कृदंत प्रत्यय के भेद सोदाहरण लिखिए।

_____

4. उचित प्रत्यय लगाकर नवीन शब्द बनाइए–

मानव – _____

झगड़ा – _____

दूध – _____

जादू – _____

5. नीचे दिए शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए–

पशुता, लोभी, सब्ज़ीवाला, बाजीगर, नदिया, सच्चाई

6. निम्नांकित शब्दों से दिए हुए प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए–

शब्द		प्रत्यय	नए शब्द
साधु	+	ता	_____
मुख	+	इया	_____
पाँच	+	वाँ	_____
लड़	+	आई	_____

14 संधि-विचार
(Euphonic Combination)

संधि की परिभाषा– दो समीप स्थित अक्षरों या वर्णों के पारस्परिक मेल को 'संधि' कहते हैं।

जैसे– प्रति + एक = प्रत्येक
तथा + अपि = तथापि।

संधि के प्रकार

संधि तीन प्रकार की होती हैं–

(i) स्वर संधि,
(ii) व्यंजन संधि,
(iii) विसर्ग संधि।

स्वर संधि

परिभाषा–दो स्वर अक्षरों के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

जैसे– देव + इन्द्र = देवेन्द्र।

ये निम्न पाँच प्रकार की होती हैं–

1. **दीर्घ संधि**–जब दो समान स्वर पास आते हैं, तो उनके मेल से एक दीर्घ स्वर बनता है, उसे दीर्घ संधि कहते हैं।

जैसे–

हिम	+	आलय	=	हिमालय
कृष्ण	+	अवतार	=	कृष्णावतार
तथा	+	अपि	=	तथापि
राम	+	अवतार	=	रामावतार
विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी
विद्या	+	आलय	=	विद्यालय

2. **गुण संधि**–जब अ, आ का संयोग इ, ई तथा ऋ से होता है, तो ए, ओ, औ, अर् हो जाते हैं, उसे गुण संधि कहते हैं।

जैसे–

अ	+	इ	=	ए	देव	+	इन्द्र	=	देवेन्द्र
अ	+	ई	=	ए	परम	+	ईश्वर	=	परमेश्वर
आ	+	ई	=	ए	महा	+	ईश	=	महेश
अ	+	उ	=	ओ	पुरुष	+	उत्तम	=	पुरुषोत्तम
अ	+	ऊ	=	ओ	सूर्य	+	ऊर्जा	=	सूर्योर्जा
अ	+	ऋ	=	अर्	देव	+	ऋषि	=	देवर्षि

3. वृद्धि संधि–जब अ, आ का ए, ऐ से मिलने पर 'ऐ' तथा अ, आ का ओ, औ से मिलने पर 'औ' हो जाता है, तो उसे वृद्धि संधि कहते हैं।

जैसे–	अ	+	ऐ	=	ऐ	मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य
	आ	+	ए	=	ऐ	तथा	+	एव	=	तथैव
	अ	+	ओ	=	औ	महा	+	ओज	=	महौज
	अ	+	औ	=	औ	परम	+	औदार्य	=	परमौदार्य
	आ	+	औ	=	औ	महा	+	औषधः	=	महौषधः

4. यण् संधि–दीर्घ इ, उ, ; के पश्चात् यदि अन्य असमान स्वर आता है, तब इ, ई को 'य्', उ, ऊ को 'व्' और ऋ को 'र' हो जाता है; उसे यण् संधि कहते हैं।

जैसे–	इ	+	अ	=	य	अति	+	अधिक	=	अत्यधिक
	इ	+	आ	=	या	अति	+	आवश्यक	=	अत्यावश्यक
	इ	+	उ	=	यु	अति	+	उत्तम	=	अत्युत्तम
	उ	+	अ	=	व	मधु	+	अरि	=	मध्वरि
	उ	+	आ	=	वा	सु	+	आगतम्	=	स्वागतम्

5. अयादि संधि–यदि ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् कोई भिन्न स्वर आए, तो इनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय्, अव् हो जाता है तथा बाद के स्वर उसमें मिल जाते हैं।

जैसे–	ए	+	अ	=	अय	शे	+	अन	=	शयन
	ऐ	+	अ	=	आय	नै	+	अक	=	नायक
	ओ	+	अ	=	अव	पो	+	अन	=	पवन
	औ	+	इ	=	आवि	नौ	+	इक	=	नाविक
	ओ	+	इ	=	अवि	पो	+	इत्र	=	पवित्र
	औ	+	अ	=	आव	पौ	+	अक	=	पावक

व्यंजन संधि

परिभाषा–व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने को व्यंजन संधि कहते हैं।

जैसे–	उत्	+	ज्वल	=	उज्जवल
	वाक्	+	ईश	=	वागीश

व्यंजन संधि के नियम–

1. वर्णों के वर्गों के प्रथम वर्ण (क, च, ट, त, प) के बाद कोई स्वर अथवा किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण या अंतस्थ (य, र, ल, व) वर्ण हो, तो प्रथम वर्ण का अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है।

जैसे–	क + अ = ग	दिक् + अम्बर = दिगम्बर
	क + ग = ग्ग	दिक् + गज = दिग्गज
	क + ई = गी	वाक् + ईश = वागीश

2. किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के पश्चात् पंचम वर्ण रहने पर प्रथम वर्ण को अपने वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है।

जैसे–

त् + न = न्न		जगत् + नाथ	= जगन्नाथ
त् + म = न्म		तत् + मय	= तन्मय

3. यदि त् या द् के पश्चात् श वर्ण हो, तो 'त', 'द' के स्थान पर 'च' तथा 'श' के स्थान पर 'छ' हो जाता है।

जैसे–

त् को च तथा शा को छा	= सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र
त् को च तथा शि को छि	= उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

4. यदि त् या द् के बाद 'ह' हो, तो 'त' के स्थान पर 'द' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है।

जैसे–

तत्	+	हित	=	तद्धित
उत्	+	हार	=	उद्धार

5. यदि 'त' अथवा 'द' के बाद च वर्ग, ट वर्ग हो, तो त, द के स्थान पर क्रमशः च वर्ग, ट वर्ग या लकार हो जाता है।

जैसे–

सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र
उत्	+	चारण	=	उच्चारण
तत्	+	टीका	=	तट्टीका

6. यदि 'म' के बाद अंतस्थ, स्पर्श या ऊष्म किसी का भी कोई वर्ण हो, तो 'म' का अनुस्वार हो जाता है।

जैसे–

सम्	+	सार	=	संसार
सम्	+	चय	=	संचय
सम्	+	योग	=	संयोग

7. अ, इ, उ के आगे 'छ' आए, तो मध्य में 'च्' का योग हो जाता है।

जैसे–

परि	+	छेद	=	परिच्छेद
अव	+	छेद	=	अवच्छेद

विसर्ग संधि

परिभाषा–विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने पर जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहा जाता है।

विसर्ग संधि के नियम–

1. विसर्ग के बाद यदि 'अ' आए अथवा किसी वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण या य, र, ल, व, श में से कोई वर्ग हो, तो विसर्ग का 'ओ' बन जाता है।

जैसे–

यशः	+	अभिलाषी	=	यशोभिलाषी
अधः	+	गति	=	अधोगति
तपः	+	बल	=	तपोबल
मनः	+	अनुकूल	=	मनोनुकूल

2. यदि विसर्ग के पूर्व 'अ', 'आ' को छोड़कर अन्य कोई स्वर हो तथा बाद में कोई कोमल व्यंजन हो, तो विसर्ग का र् हो जाता है।

जैसे–

दु:	+	उपयोग	=	दुरुपयोग
दु:	+	आत्मा	=	दुरात्मा
नि:	+	बुद्धि	=	निर्बुद्धि
नि:	+	उपाय	=	निरुपाय

3. यदि किसी विसर्ग के बाद 'र' हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है तथा उसके पूर्व का स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे–

नि:	+	रज	=	नीरज
नि:	+	रव	=	नीरव
नि:	+	रोग	=	नीरोग
नि:	+	रस	=	नीरस

4. यदि विसर्ग के बाद 'श', 'ष', 'स' आए, तो विसर्ग श्, या, स् बन जाता है।

जैसे–

नि:	+	सन्देह	=	निस्सन्देह
नि:	+	सार	=	निस्सार
नि:	+	शब्द	=	निश्शब्द

5. विसर्ग से परे यदि त या स हो, तो विसर्ग का 'स' हो जाता है।

जैसे–

नम:	+	ते	=	नमस्ते
दु:	+	साहस	=	दुस्साहस
नि:	+	तेज	=	निस्तेज

आपने क्या सीखा

(1) दो शब्दों के पारस्परिक मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।
(2) संधि तीन प्रकार की होती हैं।
(3) स्वर संधि के छः भेद (प्रकार) होते हैं।

अभ्यास

1. **संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।**

_____

2. **संधि के कितने भेद हैं ? प्रत्येक का नाम लिखिए।**

_____

3. **स्वर तथा विसर्ग संधि के चार-चार उदाहरण दीजिए–**

स्वर –

_____

विसर्ग –

_____

4. **स्वर संधि के अंतर्गत आने वाली संधियों के नाम लिखते हुए उनमें संधि कीजिए–**

जैसे– सदा + एव सदैव वृद्धि स्वर

देव + इन्द्र _____ _____

हिम + आलय _____ _____

अति + उत्तम _____ _____

5. **संधि-विच्छेद कीजिए–**

राजेन्द्र – _____

जगन्नाथ – _____

रमेश – _____

दुरुपयोग – _____

नीरज – _____

निश्शब्द – _____

वागीश – _____

6. **नीचे दिए शब्द के सामने स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग संधि को छाँटकर लिखिए–**

मनीषा – _____

विद्यालय – _____

मतैक्य – _____

मध्वरि – _____

पवित्र – _____

उच्चारण – _____

नायक – _____

15 समास-विचार (Word Combination)

परिभाषा–दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक शब्द में संक्षिप्त कर देने को 'समास' कहते हैं।

जैसे– यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार।

हवन सामग्री = हवन के लिए सामग्री।

समस्त पद–दो शब्दों के जोड़ने से बने नए शब्द को समस्त-पद कहते हैं। **जैसे–**व्यास रचित।

समास-विग्रह–समस्त पद के बीच के संबंध को स्पष्ट करना ही समास-विग्रह कहलाता है।

समास के भेद

हिंदी भाषा में समास के छः भेद हैं–

(क) अव्ययीभाव समास

(ख) तत्पुरुष समास

(ग) कर्मधारय समास

(घ) द्विगु समास

(ङ) बहुव्रीहि समास

(च) द्वंद्व समास

(क) अव्ययीभाव समास–जिस समास में प्रथम पद प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

जैसे– यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार

यथासमय = समय के अनुसार

(ख) तत्पुरुष समास–जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। यह छः प्रकार के हैं–

1. **कर्म तत्पुरुष–**इसमें 'को' का लोप हो जाता है।

   जैसे– जेब को काटने वाला = जेबकतरा

   मन को हरने वाला = मनोहर

2. **करण तत्पुरुष–**इसमें 'से' व 'द्वारा' का लोप हो जाता है।

   जैसे– मन से माना = मनमाना

   वाल्मीकि द्वारा कृत = वाल्मीकि कृत

3. **संप्रदान तत्पुरुष–** इसमें 'के लिए' का लोप हो जाता है।

   जैसे– गुरु के लिए दक्षिणा = गुरु दक्षिणा

   मार्ग के लिए व्यय = मार्गव्यय

4. अपादान तत्पुरुष–इसमें 'से' का लोप होता है।

जैसे– चरित्र से हीन = चरित्रहीन

कर्म से हीन = कर्महीन

5. संबंध तत्पुरुष–इसमें 'का', 'की', 'के' का लोप होता है।

जैसे– गंगा का जल = गंगाजल

सेना का नायक = सेनानायक

6. अधिकरण तत्पुरुष–इसमें में, पर का लोप हो जाता है।

जैसे– हाथ में दर्द = हाथदर्द

घोड़े पर सवार = घुड़सवार

(ग) कर्मधारय समास–जिसमें विशेषण विशेष्य का संबंध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे– श्वेत वस्त्र = श्वेत है वस्त्र

पीत वस्त्र = पीला है वस्त्र

(घ) द्विगु समास–जिसमें पहला शब्द संख्यावाची हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।

जैसे– नव ग्रहों का समूह = नवग्रह

चार रास्तों का समूह = चौराहा

चार खंबों का समूह = चारखंबा

(ङ) बहुव्रीहि समास–जिस समास में समस्त पद का कोई भी पद प्रधान न हो, बल्कि अन्य पद प्रधान हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

जैसे– नीला है जिसका कंठ = नीलकंठ (शिव)

श्वेत है वस्त्र जिसका = श्वेताम्बर (जैन मत)

लंबा है उदर जिसका = लंबोदर (गणेश)

छः हैं मुख जिसके = षडानन (कार्तिकेय)

(च) द्वंद्व समास–जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

जैसे– राम और श्याम = राम-श्याम

माता और पिता = माता-पिता

भाई और बहन = भाई-बहन

आपने क्या सीखा

(1) दो शब्दों को मिलाकर संक्षिप्त कर देना समास कहलाता है।

(2) समास छः प्रकार के होते हैं।

(3) जिस समास में कोई पद प्रधान न हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

(4) जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) समास किसे कहते हैं ?

____

(ख) समास के भेद उदाहरण सहित लिखिए।

____

(ग) तत्पुरुष समास किसे कहते हैं ? उसके भेद बताइए।

____

(घ) बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं ?

____

(ङ) कर्मधारय समास किसे कहते हैं ? तीन उदाहरण दीजिए।

____

(च) अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

____

(छ) द्‌वंद्‌व समास किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

____

2. अंतर बताइए–

(क) अव्ययीभाव तथा द्‌विगु समास में

____

(ख) तत्पुरुष तथा कर्मधारय समास में

____

(ग) द्‌वंद्‌व तथा द्‌विगु समास में

____

(घ) कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास में

____

3. नीचे लिखे पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–

समस्त पद	विग्रह	समास-नाम
श्वेतांबर	_____	_____
घर-द्वार	_____	_____
यथा समय	_____	_____
पंचानन	_____	_____
पूरब-पश्चिम	_____	_____
पेट दर्द	_____	_____
गंगाजल	_____	_____
चौराहा	_____	_____
मनोहर	_____	_____

4. निम्न पदों का समास से मिलान कीजिए–

सेनानायक	कर्मधारय
प्रतिदिन	अव्ययीभाव
रामलक्ष्मण	द्विगु
नीलकंठ	द्वंद्व
चरित्रहीन	बहुव्रीहि
पंचवटी	तत्पुरुष

5. अव्ययीभाव और कर्मधारय के तीन-तीन उदाहरण लिखिए–

_____ _____ _____

_____ _____ _____

16 विराम-चिह्न (Punctuation)

विराम शब्द का अर्थ है–विश्राम, रुकना या ठहरना। हम बोलते समय या अपने भावों को प्रकट करते समय बीच-बीच में अपनी बात पर बल देने के लिए अनेक स्थानों पर रुकते हैं। यदि बिना रुके हम अपनी बात को कहते चले जाएँगे, तो सुनने वाले को कुछ समझ में नहीं आएगा।

विराम-चिह्न की परिभाषा–वाक्यों के बीच में रुकने की प्रक्रिया में व्याकरण के जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन चिह्नों को 'विराम-चिह्न' कहते हैं।

प्रमुख विराम-चिह्न

अपनी बात को उचित प्रकार से कहने के लिए निम्नांकित विराम–चिह्नों का उपयोग किया जाता है–

1. **पूर्ण विराम (।)**–इस चिह्न का प्रयोग वाक्य समाप्त होने पर किया जाता है।
   जैसे– भारत ने पाकिस्तान को युद्ध में हराया।
2. **अल्प विराम (,)**–लिखते या बोलते समय एक वाक्य को दूसरे वाक्य से अलग करने के लिए थोड़ा रुकते हैं, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
   जैसे– राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भाई हैं।
3. **अर्द्ध विराम (;)**–जब वाक्य में अल्पविराम की अपेक्षा कुछ ज्यादा देर रुकना पड़ता है, तब इस चिह्न का प्रयोग करते हैं।
   जैसे– सत्य ही सुन्दर है; सत्य ही ईश्वर है।
4. **निर्देशक चिह्न (-)**–वार्तालाप में वक्ता के आगे संवाद आदि को प्रकट करने के लिए यह चिह्न लगाया जाता है।
   जैसे– सुमेर ने कहा–कुबेर मेरा भाई है।
5. **योजक चिह्न (–)**–यह चिह्न दो शब्दों को एक साथ कहने पर अर्थात् विपरीतार्थक शब्द-युग्मों के बीच में प्रयोग किया जाता है।
   जैसे– जीवन-मरण, सुख-दु:ख।
6. **लाघव चिह्न (०)**–शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग करते हैं।
   जैसे– इंजीनियर = इंजी०।
7. **संबोधन चिह्न (!)**–किसी व्यक्ति विशेष को संबोधित करते समय इसका प्रयोग करते हैं।
   जैसे– पंकज ! यहाँ आओ।
8. **प्रश्नवाचक चिह्न (?)**–जिस वाक्य में कोई प्रश्न किया जाता है, उसके अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
   जैसे– सुरेश कहाँ गया ? योगेन्द्र कब तक जागेगा ?
9. **कोष्ठक चिह्न ((), [ ])**–किसी बात के विशेष अर्थ को स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।
   जैसे– वह प्रियंवदा (प्रिय बोलने वाली स्त्री) है।

10. त्रुटि चिह्न (^)–लिखते समय जब कोई शब्द भूलवश छूट जाता है, तब इस चिह्न का प्रयोग करते हैं तथा उस शब्द को पंक्ति के ऊपर लिखते हैं।

जैसे– मैं कल घर जाऊँगा।।

आपने क्या सीखा

(1) वाक्यों के बीच में रुकने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है उन्हें विराम–चिह्न कहते हैं।

(2) विराम–चिह्न कई प्रकार के होते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) विराम–चिह्न किसको कहते हैं ?

_____

(ख) पूर्ण विराम का क्या अर्थ है ?

_____

(ग) प्रश्नवाचक चिह्न क्या है ? उदाहरण देकर समझाइए।

_____

(घ) त्रुटि चिह्न का प्रयोग किस दशा में किया जाता है ?

_____

2. अंतर स्पष्ट कीजिए–

(क) अल्प विराम एवं अर्द्ध विराम में

(ख) योजक एवं लाघव चिह्न में

(ग) पूर्ण विराम एवं प्रश्नवाचक चिह्न में

(घ) कोष्ठक एवं त्रुटि चिह्न में

3. निम्नांकित चिह्नों को पहचानिए–

(क) ० _____

(ख) । _____

(ग) ; _____

(घ) , _____

(ङ) ^ _____

(च) ? _____

4. यथास्थान उचित विराम चिह्न लगाइए–

भारत एक विस्तृत देश है इसकी राजधानी दिल्ली है भारत के पड़ोसी देश चीन नेपाल श्रीलंका पाकिस्तान तथा बंगलादेश हैं यह देश धर्मनिरपेक्ष देश है यहाँ विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।

17 वाक्य-विचार (Syntax)

वाक्य की परिभाषा–शब्दों के ऐसे समूह जो पूरा-पूरा अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें 'वाक्य' कहते हैं।

जैसे– (i) मैंने रात को पढ़ाई की।

(ii) अखिल दौड़ में प्रथम आया।

(iii) सोमेश क्रिकेट खेलता है।

यहाँ तीनों वाक्य अपने आप में सार्थक हैं। तीनों का अर्थ अलग-अलग है। अत: इन तीनों शब्दों के समूहों को व्याकरण के आधार पर वाक्य कहेंगे।

वाक्य के अंग–वाक्य के दो अंग होते हैं–

1. **उद्देश्य**–वाक्य में जिसके संबंध में बात कही गई हो, उसे उद्देश्य कहते हैं।

   जैसे– सोमेश क्रिकेट खेलता है। इस वाक्य में सोमेश उद्देश्य है।

2. **विधेय**–वाक्य में उद्देश्य से संबंधित जो बात कही गई हो, उसे विधेय कहते हैं।

उपर्युक्त वाक्य - सोमेश क्रिकेट खेलता है। इस वाक्य में विधेय-'क्रिकेट खेलता है' है।

वाक्य के भेद

हिंदी भाषा में वाक्य के तीन भेद हैं–

(क) साधारण वाक्य (Simple Sentence)

(ख) संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

(ग) मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)

(क) साधारण वाक्य (Simple Sentence)—जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य तथा एक ही विधेय हो, उसे साधारण वाक्य कहते हैं।

जैसे– अर्चना गाँव जाती है।

मैं दौड़ता हूँ।

(ख) संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)—जब दो या दो से अधिक साधारण वाक्य समुच्चयबोधक से जुड़ जाते हैं, तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

जैसे– (i) वह चोर है लेकिन डरता किसी से नहीं।

(ii) वह स्कूल से भाग गया और खेलने चला गया।

(iii) अजय आया और तुरंत चला गया।

इन वाक्यों में उपवाक्य परंतु, लेकिन, और तुरंत समुच्चयबोधक शब्दों से जुड़े हैं। ऐसे वाक्य संयुक्त वाक्य कहे जाते हैं।

(ग) **मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)**—जब किसी विषय पर कई साधारण वाक्यों को मिलाकर एक नए वाक्य की रचना होती है, तो ऐसे वाक्यों को मिश्रित वाक्य कहते हैं।

जैसे– (i) जो अच्छा खेलेगा वही जीतेगा।

(ii) जो पढ़ेगा वही परीक्षा में सफलता पाएगा।

(iii) जब धन आता है तो मनुष्य अभिमानी हो जाता है।

(iv) जो जागेगा सो पाएगा।

मिश्रित वाक्य में एक उपवाक्य होता है और दूसरा आश्रित वाक्य होता है। पहले वाक्य में जो अच्छा खेलेगा मुख्य उपवाक्य तथा वही जीतेगा आश्रित वाक्य है।

आपने क्या सीखा

(1) शब्दों के वे समूह जो पूरा-पूरा अर्थ प्रकट करते हैं, ऐसे समूह वाक्य कहलाते हैं।

(2) वाक्य के दो अंग–उद्देश्य और विधेय हैं।

(3) वाक्य के मुख्यत: तीन भेद होते हैं।

अभ्यास

1. वाक्य की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

_____

2. वाक्य के कितने भेद हैं ? सोदाहरण लिखिए।

_____

3. नीचे दिए गए वाक्यों में से उद्देश्य तथा विधेय को अलग-अलग कीजिए–

(क) कलम से लिखना है।

(ख) घोड़ा घास खाता है।

(ग) आज मौसम साफ़ है।

(घ) राम जाता है।

(ङ) गौरी सोती है।

(च) रफी गाता है।

4. अंतर बताइए–

(क) उद्देश्य और विधेय में

_____

(ख) संयुक्त और मिश्रित वाक्य में

_____

(ग) साधारण तथा संयुक्त वाक्य में

_____

5. निम्न वाक्यों के प्रकार लिखिए–

(क) मैं दौड़ता हूँ।

_____

(ख) वह कमजोर है पर अस्वस्थ नहीं।

_____

(ग) जो जीता वही सिकंदर।

_____

(घ) आज सोमवार है।

_____

(ङ) अभय आया और शीघ्र चला गया।

_____

6. मिश्रित वाक्य के दो उदाहरण दीजिए–

_____

_____

18 सामान्य अशुद्धियाँः वर्तनी
(Some Common Errors : Spellings)

भाषा में शब्द के शुद्ध रूप का प्रयोग करना चाहिए। उच्चारण तथा वर्तनी की अशुद्धियाँ भाषा को प्रभावहीन बना देती हैं। हम पिछली कक्षा में भाषा से संबंधित अशुद्धियाँ पढ़ चुके हैं। इस दृष्टि से कुछ अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप यहाँ दिए जा रहे हैं–

अशुद्ध	शुद्ध
आंख	आँख
अनिष्ठ	अनिष्ट
अनुयाई	अनुयायी
आधीन	अधीन
अजीविका	आजीविका
जशोदा	यशोदा
जमुना	यमुना
अचरण	आचरण
अतिथी	अतिथि
दुनीया	दुनिया
गुरू	गुरु
बृज	ब्रज
साधू	साधु
परिक्षा	परीक्षा
श्रंगार	शृंगार
क्रिपा	कृपा
इन्टर	इण्टर
ऊंचाई	ऊँचाई
उन्नती	उन्नति
दयालू	दयालु
मैथली	मैथिली
पूर्ती	पूर्ति
भारतिय	भारतीय
रामायन	रामायण
रुठना	रूठना
दिवार	दीवार

अशुद्ध	शुद्ध
कवी	कवि
कांच	काँच
कैलाश	कैलास
निरोग	नीरोग
नराज	नाराज
नैन	नयन
कालीदास	कालिदास
अलोक	आलोक
प्रशाद	प्रसाद
खन्ड	खण्ड
गायीका	गायिका
क्षत्रीय	क्षत्रिय
खुस	खुश
घनिष्ट	घनिष्ठ
गती	गति
योवन	यौवन
घन्टा	घण्टा
श्रीमति	श्रीमती
मख्खी	मक्खी
यदपि	यद्यपि
वीना	वीणा
वधु	वधू
रूपया	रुपया
नुपुर	नूपुर
मूर्ती	मूर्ति
धन्दा	धन्धा

आपने क्या सीखा

(1) भाषा में शब्द के शुद्ध रूप का प्रयोग करना चाहिए।

(2) वर्तनी की अशुद्धि भाषा को प्रभावहीन कर देती है।

अभ्यास

1. निम्न शब्दों को शुद्ध कीजिए–

अनिष्ठ _____

अनुयाई _____

बृज _____

सुरज _____

रामायन _____

अलोक _____

घनिष्ट _____

पूर्ती _____

योवन _____

मयुर _____

यदपि _____

वीना _____

19 शब्द-समूह
(One Word Substitution)

परिभाषा– भाषा को संक्षिप्त तथा अभिव्यंजक बनाने के लिए वाक्य या वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहा जाता है।

हिंदी के ऐसे प्रमुख शब्दों की सूची निम्नांकित है–

वाक्यांश (अनेक शब्द)	एक शब्द
जिसका अंत न हो	अनन्त
जिसका ज्ञान कम हो	अज्ञानी
बहुत कम जानने वाला	अल्पज्ञाता
आगे रहने वाला	अग्रणी
हाथी हाँकने का हुक	अंकुश
जिसकी आयु कम हो	अल्पायु
जिसके माँ-बाप न हों	अनाथ
जो दिखाई न दे	अदृश्य
जो कहा न जा सके	अकथनीय
जो धर्म को न माने	अधर्मी
दोपहर का समय	अपराह्न
निष्फल न होने वाला	अमोघ
जिसकी इच्छा की जाए	अभीष्ट
जो कभी न मरे	अमर
जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
जो शुद्ध न हो	अशुद्ध
जिसकी कोई सीमा न हो	असीमित
जिसे छुआ न गया हो	अछूता
अपने आप पर बीती हुई	आपबीती
जिसका ईश्वर में विश्वास है	आस्तिक
जो अन्य पर निर्भर न हो	आत्मनिर्भर
जीवन भर रहने वाला	आजीवन
उपासना करने वाला	उपासक
ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त

वाक्यांश (अनेक शब्द)	एक शब्द
जिसकी स्त्री मर गई हो	विधुर
जिसका पति मर गया हो	विधवा
जो कार्य न करता हो	कामचोर
जो पढ़ा-लिखा न हो	अनपढ़
उपकार करने वाला	परोपकारी
उपकार न मानने वाला	कृतघ्न
उच्च कुल वाला	कुलीन
पूजने के योग्य	पूजनीय
दया करने वाला	दयालु
जो कार्य अच्छा हो	सत्कार्य
राजनीति को जानने वाला	राजनीतिज्ञ
जिसका आकार हो	साकार
मांस खाने वाला	मांसाहारी
हर दिन होने वाला	रोजाना
दूरी पर स्थित	दूरस्थ
जिसमें दया न हो	निर्दयी
नीति को जानने वाला	नीतिज्ञ
मोक्ष चाहने वाला	मुमुक्षु
धर्म को जानने वाला	धर्मज्ञ
क्षमा करने योग्य	क्षम्य
सबसे ऊँचा	सर्वोच्च
प्रार्थना करने वाला	प्रार्थी
क्षण भर रहने वाला	क्षणभंगुर
मन से जलने वाला	ईर्ष्यालु
श्रद्धा करने वाला	श्रद्धालु
घृणा के योग्य	घृणित
कार्य करने वाला	कार्यकर्त्ता
होड़ करने वाला	प्रतियोगी
सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ

अभ्यास

1. निम्न शब्द समूहों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) आगे रहने वाला _____

(ख) जो धर्म को न माने _____

(ग) उच्च कुल वाला _____

(घ) दया करने वाला _____

(ङ) मर्म जानने वाला _____

(च) क्षण भर रहने वाला _____

(छ) पूजने के योग्य _____

(ज) जो कहा न जा सके _____

20 समानोच्चरित शब्द
(Words of Similar Sounds)

समानोच्चरित शब्द की परिभाषा–वे शब्द जिनके उच्चारण में समानता-सी प्रतीत होती है, लेकिन अर्थ भिन्न होते हैं। उन्हें समोच्चरित शब्द कहते हैं।

कुछ समानोच्चरित शब्द-युग्म इस प्रकार हैं–

1.	अक्ष	= धुरा	2.	अविराम	= लगातार	3.	अविलंब	= शीघ्र
	अक्षि	= नेत्र		अभिराम	= सुंदर		अवलंब	= सहारा
4.	अनल	= आग	5.	आदि	= वगैरा	6.	अन्त्य	= नीच
	अनिल	= हवा		आधि	= मानसिक पीड़ा		अंत	= समाप्त
7.	आकर	= आने के बाद	8.	अवधी	= भाषा	9.	आदी	= अभ्यस्त
	आकार	= शक्ल		अवधि	= सीमा		आदि	= शुरू
10.	अभय	= निडर	11.	अपेक्षा	= इच्छा	12.	आँधी	= तेज हवा
	उभय	= दोनों		उपेक्षा	= निरादर		आधी	= आधा हिस्सा
13.	अलसी	= तीसी	14.	कुल	= योग / वंश	15.	गृह	= घर
	आलसी	= सुस्त		कूल	= किनारा		ग्रह	= नक्षत्र
16.	उन	= वे	17.	काट	= काटना	18.	तुरंग	= घोड़ा
	ऊन	= भेड़ के बालों से बने धागे		काठ	= लकड़ी		तरंग	= लहर
19.	नीयत	= इच्छा	20.	शाम	= संध्या	21.	सुत	= बेटा
	नियत	= निश्चित		श्याम	= काला		सूत	= धागा
22.	खान	= खदान	23.	कर	= हाथ	24.	बलि	= बलिदान
	ख़ान	= मुस्लिम जाति		कर	= टैक्स		बली	= शक्तिशाली
25.	योग्य	= लायक	26.	दिन	= दिवस	27.	दशा	= हालत
	योग	= मेल		दीन	= गरीब		दिशा	= तरफ, ओर
28.	प्रणाम	= नमस्ते	29.	वात	= वायु	30.	पका	= पका हुआ
	प्रमाण	= सबूत		बात	= वार्ता		पक्का	= मजबूत
31.	लक्ष	= लाख	32.	दीप	= दीपक	33.	मूल	= जड़
	लक्ष्य	= उद्देश्य		द्वीप	= टापू		मूल्य	= कीमत

34.	शुल्क	=	फीस	35.	स्रवण	=	बहना	36.	पुष्ट	=	स्वस्थ
	शुक्ल	=	श्वेत		श्रवण	=	कान		पृष्ठ	=	पेज
37.	भुवन	=	लोक	38.	हरण	=	चुराना	39.	निर्माण	=	बनाना,
	भवन	=	घर		हिरण	=	मृग		निर्वाण	=	बुझाना
40.	परिमाण	=	नाप-तौल	41.	क्रांति	=	विद्रोह	42.	जलद	=	बादल
	परिणाम	=	नतीजा		कांति	=	चमक		जलज	=	कमल
43.	प्रसाद	=	कृपा	44.	नीर	=	जल	45.	चिर	=	दीर्घ
	प्रासाद	=	महल		नीड़	=	घोंसला		चीर	=	वस्त्र
46.	स्वान	=	सूर्य	47.	शंकर	=	शिवजी	48.	इति	=	अंत
	श्वान	=	कुत्ता		संकर	=	मिश्रित		ईति	=	आपत्ति
49.	सुर	=	देवता	50.	वसन	=	वस्त्र	51.	अजिर	=	आंगन
	सूर	=	सूर्य		व्यसन	=	आदत		अजर	=	जो बूढ़ा न हो

अभ्यास

1. निम्न समानोच्चरितों के अर्थ स्पष्ट कीजिए–

(क) स्वान = _____

श्वान = _____

(ख) पुष्ट = _____

पृष्ठ = _____

(ग) प्रणाम = _____

प्रमाण = _____

(घ) कर = _____

कर = _____

(ङ) खान = _____

खान = _____

(च) अनल = _____

अनिल = _____

(छ) अविराम = _____

अभिराम = _____

(ज) वसन = _____

व्यसन = _____

21 विलोम अथवा विपरीतार्थक शब्द (Antonyms)

परिभाषा–हिंदी भाषा में जिस शब्द से उसके विलोम अथवा विपरीतार्थक होने का बोध हो, उसे विलोम शब्द कहते हैं। जैसे– लाभ का हानि आदि।

विलोम शब्द का शाब्दिक अर्थ है–विपरीत अथवा उल्टा। छात्रों के ज्ञान के लिए कतिपय विलोम शब्द दिए गए हैं। छात्र इन्हें अच्छी तरह कण्ठस्थ करें–

शब्द	विलोम
अथ	इति
अचल	चल
अनुज	अग्रज
अपना	पराया
अमृत	विष
अज्ञान	ज्ञान
अच्छा	बुरा
अनुकूल	प्रतिकूल
अल्पायु	दीर्घायु
अर्थ	व्यर्थ
अधर्म	धर्म
आय	व्यय
आदर	निरादर
आदि	अंत
आलस्य	स्फूर्ति
आश्रित	निराश्रित
आकाश	पाताल
आरंभ	अन्त
आशा	निराशा
खरा	खोटा
खाना	पीना
गुरु	शिष्य

शब्द	विलोम
इष्ट	अनिष्ट
इधर	उधर
ईर्ष्या	प्रेम
ईश्वर	अनीश्वर
उतार	चढ़ाव
उदार	अनुदार
उत्तम	अधम
उजाला	अंधेरा
उत्थान	पतन
उदय	अस्त
उन्नति	अवनति
उष्ण	शीत
उच्च	निम्न
एक	अनेक
एकता	अनेकता
ऐश्वर्य	दारिद्रय
औरत	आदमी
क्रय	विक्रय
क्रेता	विक्रेता
स्मरण	विस्मरण
निंदा	स्तुति
विपक्ष	पक्ष

शब्द	विलोम
मूर्ख	पंडित
कल्पित	सत्य
देव	दैत्य
कुरूप	सुरूप
पुष्ट	कृश
घृणा	प्रेम
नीरस	सरस
शयन	जागरण
सरल	जटिल
सुगम	आगम
रुचि	अरुचि
विरोध	समर्थन
कृतघ्न	कृतज्ञ
संधि	विग्रह
अतिवृष्टि	अनावृष्टि

शब्द	विलोम
कुकर्म	सुकर्म
अन्याय	न्याय
सूक्ष्म	स्थूल
दुराचार	सदाचार
क्रोध	क्षमा
पुरस्कार	दण्ड
उत्थान	पतन
ज्ञान	अज्ञान
मनुज	दनुज
तेजस्वी	निस्तेज
जीत	हार
चर	अचर
परतंत्र	स्वतंत्र
विस्तार	संकुचन
कीर्ति	अपकीर्ति

विशेष– बच्चों ! कतिपय शब्दों में 'अ' अक्षर लगाने पर वे शब्द विलोम शब्द को प्रकट करते हैं। जैसे–शुद्ध शब्द में 'अ' जोड़ने पर अशुद्ध बनता है। इसी प्रकार आप भी नीचे दिए शब्दों के विलोम शब्द बना सकते हैं–

नाम, सत्य, शुभ, न्याय, चल, शिक्षित, समान, हित, स्पष्ट।

अभ्यास

1. विपरीतार्थक शब्द से आपका क्या आशय है ?

_____

2. नीचे दिए शब्दों के विपरीतार्थक (विलोम) शब्द लिखिए–

(क) खरा – _____

(ख) शयन – _____

(ग) सुगम – _____

(घ) अतिवृष्टि – _____

(ङ) कृतज्ञ – _____

(च) कीर्ति – _____

3. नीचे दिए शब्दों में 'अ' वर्ण लगाकर विलोम शब्द बनाइए–

(क) ज्ञान _____

(ख) न्याय _____

(ग) चल _____

(घ) संगत _____

(ङ) हित _____

(च) विराम _____

4. नीचे लिखे शब्दों के सही विलोम छाँटकर उसके सम्मुख लिखिए–

(क) ईश्वर देवता/अनीश्वर। _____

(ख) न्याय पक्ष/अन्याय। _____

(ग) पक्ष विपक्ष/संगत। _____

(घ) कृपा क्रोध/क्षमा। _____

(ङ) राग रंग/द्वेष। _____

(च) जड़ चेतन/अचेतन। _____

22 पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

परिभाषा–शब्द-प्रयोग में दक्षता लाने के लिए एक ही शब्द को अनेक प्रकार से कहा जाता है। ऐसे ही शब्द जो अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

नीचे कुछ महत्वपूर्ण पर्यायवाची शब्द वर्णानुक्रम में दिए जा रहे हैं, इन्हें भली प्रकार कण्ठस्थ कर लें–

शब्द	पर्यायवाची शब्द
1. अग्नि	अनल, पावक, दहन, आग, हुताशन।
2. अमृत	अमिय, सोम, सुधा, मधु, पीयूष, सुरभोग।
3. असुर	दानव, राक्षस, दैत्य, रात्रिचर, निशाचर।
4. अम्बर	गगन, व्योम, आकाश, शून्य, नभ।
5. आदमी	मानव, मनुष्य, मनुज, पुरुष, नर।
6. आनन्द	आमोद, प्रमोद, उल्लास, हर्ष।
7. आम	आम्र, रसाल, सौरभ, मकरन्द, सहकार।
8. इन्द्र	सुरेश, सुरेन्द्र, पुरन्दर, सुरपति, मधवा।
9. ईश्वर	प्रभु, अगोचर, परमात्मा, अलख।
10. कमल	जलज, पंकज, नीरज, सरोज, अम्बुज।
11. कृष्ण	घनश्याम, केशव, मुरारी, गोबिंद।
12. केश	बाल, अलक, कच, चिकुर।
13. कृपाण	तलवार, खड्ग, असि।
14. कपड़ा	अम्बर, वस्त्र, चीर, पट, वसन।
15. कामदेव	मदन, मनोज, अनंग, रतिपति।
16. कामना	लालसा, इच्छा, आकांक्षा।
17. खग	पक्षी, विहग, द्विज, अण्डज, पखेरू।
18. खरगोश	शशक, खरहा, तीव्रधावी।
19. गज	हाथी, दन्ती, हस्ती, कर्ण।
20. गृह	आलय, घर, सदन, निकेतन।
21. गंगा	सुरसरि, देवनदी, भागीरथी, त्रिपथगा।
22. घोड़ा	हय, तुरंग, अश्व, चतुष्पद।

23. चन्द्रमा	शशि, विधु, मयंक, निशापति।
24. जल	नीर, सलिल, अम्बु, तोय।
25. जग	जगत्, विश्व, लोक, संसार।
26. तालाब	तड़ाग, सरोवर, जलाशय, ताल।
27. दास	सेवक, अनुचर, गुलाम, नौकर।
28. देवता	देव, सुर, अमर, आदित्य।
29. दिन	वासर, दिवस, वार, दिवा।
30. धन	कोष, सम्पत्ति, रुपए, जीविका।
31. दुःख	संकट, यातना, वेदना, कष्ट।
32. दूध	पय, दुग्ध, अम्बु, क्षीर।
33. नदी	सरिता, तटिनी, तरंगिनी।
34. पति	नाथ, जीवन-साथी, प्राणनाथ।
35. पत्नी	भार्या, सहचरी, स्त्री, बहू।
36. पर्वत	गिरि, पहाड़, अचल, नग।
37. पक्षी	विहंग, द्विज, अण्डज, पखेरू।
38. पुत्र	आत्मज, नन्द, तनय, वत्स।
39. पुत्री	बेटी, आत्मजा, दुहिता, तनया।
40. पुष्प	फूल, प्रसून, कुसुम, सुमन।,
41. बादल	घन, जलद, वारिद, नीरद।
42. ब्रह्मा	लोकेश, विधाता, प्रजापति।
43. भौंरा	मधुकर, अलि, षट्पद, भ्रमर।
44. मधु	शहद, मकरन्द, माधावीक।
45. मृग	सुरभी, सारंग, हिरण, कृष्णसार।
46. यमुना	तनुजा, रविजा, कालिन्दी, यमी।
47. राजा	नृप, नरेश, भूपति, महिपाल।
48. रात्रि	निशि, यामिनी, रजनी, राका।
49. लक्ष्मी	कमला, रमा, मनोरमा, श्रीहरिप्रिया।
50. वृक्ष	पादप, तरु, विटप, द्रुम।
51. वन	अरण्य, जंगल, निर्जन।
52. शिव	शंकर, कैलाशपति, त्रिपुरारी।
53. समुद्र	जलधि, पयोधि, उदधि, वारिधि।
54. सर्प	भुजंग, उरग, विषधर, नाग।

55. सूर्य	भानु, दिवाकर, दिनकर।
56. सरस्वती	भारती, शारदा, वाणी, इला।
57. सिंह	केहरी, केसरी, मृगेन्द्र, पंचमुख।
58. स्वर्ग	सुरपुर, देवलोक, धाम, बैकुण्ठ।
59. स्वर्ण	कनक, कंचन, हिरण्य, सोना।
60. सुख	उल्लास, हर्ष, प्रमोद, आनन्द।
61. शिकारी	बधिक, अहेरी, बहेलिया।
62. हनुमान	अंजनीपुत्र, पवनपुत्र, रामदूत।
63. हिमालय	हिमाचल, नगाधिराज, नगपति।
64. हिरन	सारंग, तुरंग, हरिण, मृग।
65. हाथ	कर, पाणि, हस्त, भुजा।

अभ्यास

1. नीचे दिए शब्दों के पर्याय बताइए–

सागर, हनुमान, स्वर्ण, सरस्वती, भौंरा

_____

2. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

नदी	_____	_____	_____
मधु	_____	_____	_____
वृक्ष	_____	_____	_____
स्वर्ग	_____	_____	_____
हिमालय	_____	_____	_____
घोड़ा	_____	_____	_____

3. हमारे जीवन में पर्यायवाची का क्या उपयोग है ?

_____

4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द छाँटकर लिखिए–

(सारंग, तुरंग, कर, जलधि, पाणि, उदधि, कमला, मनोरमा)

(क)	हाथ	_____	_____
(ख)	हिरन	_____	_____
(ग)	सागर	_____	_____

23 अनेकार्थक शब्द
(Word with Multiple Meanings)

सभी भाषाओं में कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जिनके अनेक अर्थ होते हैं। प्रसंग के ज्ञात होने पर ही ऐसे शब्दों का ठीक अर्थ लगता है। कुछ अनेकार्थी शब्द नीचे दिए जा रहे हैं–

1.	अधर	–	मध्य, ओठ, बीज।
2.	अम्बर	–	आकाश, वस्त्र।
3.	अर्क	–	सूर्य, निचोड़, आक का पौधा।
4.	अन्तर	–	हृदय, दूरी, भेद।
5.	अचल	–	न चलने वाला, पर्वत।
6.	आम	–	एक फल, साधारण।
7.	आगम	–	भविष्य शास्त्र, आने वाला।
8.	इन्दु	–	कपूर, चन्द्रमा।
9.	उल्लास	–	आनन्द, पुस्तक का अध्याय।
10.	उत्तर	–	प्रश्न का हल, दिशा, जवाब।
11.	कनक	–	सोना, धतूरा, गेहूँ।
12.	काल	–	समय, मृत्यु।
13.	कर	–	हाथ, टैक्स, हाथी।
14.	कर्ण	–	कान, कुंती का पुत्र, समकोण के सामने वाली भुजा।
15.	खग	–	पक्षी, तीर।
16.	खर	–	गधा, तृण।
17.	गौ	–	गाय, धाम।
18.	घन	–	बादल, हथौड़ा।
19.	चाल	–	गति, रीति, रस्म।
20.	चक्र	–	चकवा, पहिया, सुदर्शन चक्र।
21.	चपला	–	लक्ष्मी, चंचल, बिजली।
22.	जलज	–	कमल, मोती, मछली, चन्द्रमा।
23.	जीव	–	आत्मा, प्राणी, बृहस्पति, जीविका।

24.	ज्येष्ठ	–	बड़ा, श्रेष्ठ, पति का बड़ा भाई, माह का नाम।
25.	जड़	–	मूल, मूर्ख।
26.	तारा	–	एक नक्षत्र, आँख की पुतली, बालि की स्त्री।
27.	तात	–	पिता, भाई, मित्र, पूज्य, प्रिय पुत्र।
28.	दल	–	समूह, पत्ता, पक्ष, पत्र।
29.	द्विज	–	ब्राह्मण, दाँत, पक्षी, चन्द्रमा, ब्रह्मा के पुत्र का नाम।
30.	धात्री	–	माँ, आँवला, पृथ्वी, धाय स्त्री।
31.	नाग	–	पर्वत, वृक्ष, नगीना।
32.	नाक	–	नासिका, प्रतिष्ठा, स्वर्ग।
33.	पय	–	दूध, पानी, खीर।
34.	पद	–	पैर, चरण, ओहदा, छंद का एक चरण।
35.	पत्र	–	पंख, पत्ता, चिट्ठी।
36.	पाद	–	चरण, अंग, पैर।
37.	पतंग	–	सूरज, पतंगा, गुड्डी।
38.	प्रभाकर	–	सूरज, पंजाब व प्रयाग की एक परीक्षा।
39.	पयोधर	–	बादल, स्तन, गन्ना, पर्वत।
40.	फल	–	नतीजा, सन्तान, लाभ, भाले की नोंक।
41.	बलि	–	बलिदान, राजा बलि, टैक्स, उपहार।
42.	बेर	–	एक फल का नाम, बार।
43.	मान	–	सम्मान, मूल्य, नाप-तौल।
44.	मुद्रा	–	धन, छाप, आकृति, अंगूठी।
45.	रस	–	सार, स्वाद, आनन्द, जल।
46.	राशि	–	समूह, ज्योतिषशास्त्र में वर्णित 12 राशियाँ।
47.	वर	–	दूल्हा, वरदान, श्रेष्ठ।

अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए–

(क) बलि _____ _____

(ख) फल _____ _____

(ग) द्विज _____ _____

(घ) पयोधर _____ _____

2. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

जलज, तारा, अम्बर, बलि, पाद, तात, कर्ण, वर।

3. नीचे दिए वाक्यों में रंगीन शब्दों का स्पष्ट अर्थ लिखिए–

(क) मैं आज बलि का बकरा बना।

_____

(ख) उसने राम को कल पत्र लिखा।

_____

(ग) इन्द्र धनुष में सात रंग होते हैं।

_____

(घ) युधिष्ठिर पाण्डवों में ज्येष्ठ थे।

_____

(ङ) सभा में राजा जनक का मान हुआ।

_____

(च) कृष्ण को नींबू का अर्क निकालकर दें।

_____

निर्देश–पाठ से कम से कम 20 अनेकार्थी शब्दों को याद कीजिए।

24 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ
(Idioms & Proverbs)

रचना में रोचकता और आकर्षण लाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। इनके अर्थ को भली-भाँति जाने बिना भाषा का समुचित ज्ञान नहीं हो सकता।

महत्त्व–किसी भी भाषा के विकास हेतु मुहावरों का प्रयोग अत्यावश्यक है। इनके प्रयोग से भाषा में सजीवता आती है। निम्नलिखित कुछ मुहावरे और उनके वाक्यों में प्रयोग दिए जा रहे हैं। छात्र इन्हें भली-भाँति समझकर इनका अभ्यास करें–

1. **श्रीगणेश करना** (कार्य आरंभ करना)–जीनियस प्रकाशन, मेरठ का श्रीगणेश 10 अप्रैल, 2008 को हो गया था।
2. **आँखों का तारा** (सबसे प्यारा)–भगवान राम राजा दशरथ की आँखों के तारे थे।
3. **आकाश चूमना** (बहुत ऊँचा)–हिमालय की चोटियाँ आकाश को चूमती हैं।
4. **पत्थर पिघलना** (कठोर भी कोमल होना)–रमेश का करुण क्रन्दन सुनकर पत्थर भी पिघल उठे।
5. **बिगड़ी बात बनाना** (भूल सुधारना)–मीठे वचन बोलने से बिगड़ी बात भी बन जाती है।
6. **लट्टू होना** (मोहित होना)–वह उसे देखकर लट्टू हो गया।
7. **मैल धुल जाना** (सन्देह मिट जाना)–इस निर्णय से दोनों के मन का मैल धुल जाना चाहिए।
8. **इधर-उधर की हाँकना** (गप्पे मारना)–तुम काम-काज के अतिरिक्त इधर-उधर की हाँकने में ही समय नष्ट करते हो।
9. **ईद का चाँद होना** (दर्शन दुर्लभ होना)–दिल्ली में क्या रहने लगे, तुम तो ईद का चाँद हो गए।
10. **ईंट से ईंट बजाना** (सर्वनाश करना)–महाराणा प्रताप ने युद्ध क्षेत्र में अकबर की विशाल सेना की ईंट से ईंट बजा दी।
11. **सिर माथे चढ़ाना** (स्वीकार करना) –उसने ग्राम प्रधान के न्याय को सिर माथे चढ़ाया।
12. **काया पलट होना** (बदल जाना)–न्यायाधीश के ठीक न्याय से निर्दोष की काया पलट हो गई।
13. **जड़ हिलाना** (नष्ट करना)–कभी भी किसी व्यक्ति की जड़ नहीं हिलानी चाहिए।
14. **हामी भरना** (स्वीकार करना) –हर बात में हामी भरना ठीक नहीं होता है।
15. **अंगुली पर नचाना** (वश में करना)–कुशल नेता अपने भाषण से जनता को अपनी अंगुली पर नचाता है।
16. **उल्टी गंगा बहाना** (उल्टा कार्य करना)–पुत्र द्वारा पिता को आदेश देना उल्टी गंगा बहाना है।
17. **गागर में सागर भरना** (थोड़े शब्दों में अधिक कहना)–बिहारी ने अपने दोहों से गागर में सागर भर दिया।
18. **आँखें गड़ाना** (ध्यान से देखना)–उस चित्र को वह आँखें गड़ाकर देखने लगा।
19. **हृदय फटना** (दु:खी होना)–नरेश के अपशब्द सुनकर रत्नेश का हृदय फट गया।
20. **अंधे की लकड़ी** (एकमात्र सहारा)–बदमाशों ने उसके पुत्र को मारकर अंधे की लकड़ी छीन ली।

21. **कुत्ते की मौत मरना** (बुरी तरह मरना)–भ्रष्टाचारी व दुष्ट व्यक्ति हमेशा कुत्ते की मौत मरते हैं।

22. **लोहा लेना** (सामना करना)–अब्दुल हमीद की वीरता का दुश्मन भी लोहा मानता है।

23. **पीठ दिखाना** (कायरता दिखाना)–जब युद्ध प्रारंभ हुआ, तो वह पीठ दिखाकर भाग गया।

24. **छक्के छुड़ाना** (पराजित करना)–कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिकों ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए।

25. **जहर का घूँट पीना** (क्रोध वश में करना)–रमेश की अपमानजनक बातें सुनकर अजय जहर का घूँट पी गया।

26. **टेढ़ी खीर होना** (मुश्किल होना)–बिना परिश्रम के परीक्षा उत्तीर्ण करना एक टेढ़ी खीर है।

27. **तूती बोलना** (नाम होना)–आजकल नरेंद्र मोदी जी की तूती बोलती है।

28. **दाँत खट्टे करना** (पराजित करना)–आजाद हिंद फौज ने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए।

29. **दायाँ हाथ होना** (अति विश्वासपात्र होना)–अशफाक उल्ला खाँ रामप्रसाद बिस्मिल के दाएँ हाथ थे।

30. **नौ दो ग्यारह होना** (भाग जाना)–डाकू को देखकर गाँव के लोग नौ दो ग्यारह हो गए।

31. **भंडा फोड़ना** (भेद खोलना)–अब तक तुम साधु थे लेकिन पुलिस ने तुम्हारा भंडा फोड़ दिया।

32. **हाथ मलना** (पछताना)– जब समय निकल गया, तो हाथ मलने का क्या फायदा।

33. **लोहे के चने चबाना** (कठिन कार्य करना)– देश को स्वतंत्र कराने में देशभक्तों को लोहे के चने चबाने पड़े।

34. **लोहा लेना** (मुकाबला करना)– भारतीय जवानों ने दुश्मनों से अनेक बार लोहा लिया है।

35. **सिर पर कफन बाँधना** (मरने को तैयार रहना)–राजपूत युद्ध में सिर पर कफन बाँध कर निकलते हैं।

लोकोक्ति का अर्थ है–''संसार में प्रसिद्ध नीतिपरक कथन''।

नीचे कतिपय लोकोक्तियाँ और उनका वाक्यों में प्रयोग दृष्टव्य हैं–

1. **अधजल गगरी छलकत जाय** (कम बुद्धि वाले व्यक्ति दिखावा करते हैं)–जरा अंग्रेज़ी क्या पढ़ ली, हिंदी में बोलना अपमान समझते हैं तभी तो ठीक ही कहा गया है, अधजल गगरी छलकत जाय।

2. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता** (अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता)–नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन किया, क्योंकि वे जानते थे कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ।

3. **आम के आम गुठलियों के दाम** (दोहरा लाभ)–कपड़ा व्यापारी होने के कारण वह कपड़े भी बेचता है और उन्हें पहन भी लेता है। अत: यहाँ आम के आम गुठलियों के दाम की कहावत प्रचलित हो गई।

4. **एक अनार सौ बीमार** (कम वस्तु और माँग अधिक)–एक बैट को पाने के लिए दस लड़के, यह तो एक अनार सौ बीमार वाला हाल है।

5. **एक पंथ दो काज** (एक ही साधन से दो काम)–मोहन ने सुरेश से कहा कि ''भाई, हरिद्वार चलो; वहाँ गंगा स्नान भी हो जाएगा और सैर-सपाटा भी इससे एक पंथ दो काज हो जाएँगे।''

6. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा** (दूसरे को दोषी बताना)–दीवार की पेंटिंग खराब हो जाने पर पेंटर ने कहा कि पॉलिश खराब थी। ठीक ही कहा गया है –नाच न जाने आँगन टेढ़ा ।

7. **हाथ कंगन को आरसी क्या** (प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नही)–मैं पढ़ रहा था और रवि ने पूछा क्या कर रहे हो ? मैंने कहा पुस्तक पढ़ रहा हूँ -हाथ कंगन को आरसी क्या?

8. **चिराग तले अंधेरा** (योग्य होते हुए भी अयोग्यता का निवास)–मोहन ने अपने पिता से कहा कि ''राकेश है विद्वान बाप का अनपढ़ बेटा - चिराग तले अंधेरा!''

9. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** (शक्ति की विजय होती है)–आज के जमाने में जिसकी लाठी उसकी भैंस है।

10. **आसमान से गिरा खजूर में अटका** (बीच में काम बिगड़ना)–रमेश अपने मित्र के विवाह समारोह में जा रहा था कि जंगल में उसकी गाड़ी खराब हो गई, लोग कहने लगे – आसमान से गिरे खजूर में अटके।

11. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** (अधिक परिश्रम और कम लाभ)–कड़ी मेहनत के बाद भी परीक्षाफल में बहुत कम अंक आए, यहाँ तो खोदा पहाड़ निकली चुहिया की कहावत हो गई।

12. **ऊँची दुकान फीका पकवान** (केवल बाहर की सजावट)–भोजनालय की बड़ी दुकान में गया और भोजन एकदम बेकार–मैंने कहा ऊँची दुकान फीके पकवान।

13. **पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होतीं** (सब व्यक्ति समान नहीं)–हनुमान ने विभीषण को लंका में देखकर कहा कि पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होतीं।

14. **चोर की दाढ़ी में तिनका** (दोषी अपना दोष प्रकट कर देता है)–पुलिस को देखकर बेईमान दुकानदार भागने लगा क्योंकि चोर की दाढ़ी में तिनका।

15. **कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता** (जिसका काम होता है वही दूसरों के पास जाता है)–राम ने मित्र से कहा- भाई, मुझे तुम्हारी किताब की आवश्यकता है। मित्र ने कहा–कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता।

16. **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** (जड़ से नष्ट होना)–दुष्ट को पैदा होने से पहले ही नष्ट कर देना चाहिए; न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी ।

17. **थोथा चना बाजे घना** (मूर्ख अधिक बोलते हैं)–अज्ञान होते हुए भी रमेश विद्वानों जैसी बातें करता है। इसका मतलब यह हुआ कि थोथा चना बाजे घना।

18. **भीष्म प्रतिज्ञा** (अटल प्रतिज्ञा करना)–महात्मा गांधी ने भारत को स्वतंत्र कराने के लिए भीष्म प्रतिज्ञा की थी।

19. **काला अक्षर भैंस बराबर** (अनपढ़ होना)–वैसे तो आशीष पढ़ा-लिखा, होशियार व्यक्ति लगता है। लेकिन है काला अक्षर भैंस बराबर।

20. **देखें ऊँट किस करवट बैठता है** (देखें क्या परिणाम निकलता है)–आज देखें पाकिस्तान और भारत के मैच में ऊँट किस करवट बैठता है ।

21. **मन चंगा तो कठौती में गंगा** (मन शुद्ध तो घर पर ही तीर्थ)–राम के गंगा स्नान पर चलने की बात पर उसकी वृद्ध माँ ने कहा कि बेटा, मन चंगा तो कठौती में गंगा।

22. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे** (अपराधी निर्दोष पर दोष लगाए)–धोबी ने किसान से कहा- यदि तुम यहाँ होते तो मेरा गधा तुम्हारे खेत में न जाता। इस पर किसान बोला– उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

23. **अंगद का पैर होना** (कार्य में जम जाना)–अब मैंने काम में अंगद का पैर जमा दिया है, सफलता और विफलता ईश्वर के अधीन है।

24. **द्रौपदी का चीर** (अंत न होना)–मेरे जीवन की विपत्तियाँ तो द्रौपदी का चीर बनी हुई हैं।

अभ्यास

1. मुहावरे शब्द से आप क्या समझते हैं ?

_____

2. मुहावरे तथा लोकोक्ति में क्या संबंध है ?

_____

3. नीचे दिए वाक्यों के लिए उचित मुहावरे लिखिए–

(क) अनपढ़ होना _____

(ख) सामना करना _____

(ग) भाग जाना _____

(घ) सबसे प्यारा _____

(ङ) पराजित करना _____

4. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) श्रीगणेश करना

_____

(ख) पीठ दिखाना

_____

(ग) ईद का चाँद होना

_____

(घ) इधर-उधर की हाँकना

_____

(ङ) लोहा लेना

_____

(च) भीष्म प्रतिज्ञा

_____

(छ) अंगद का पैर होना

_____

(ज) आ बैल मुझे मार

_____

25 तद्भव तथा तत्सम शब्द
(Tadbhav and Tatsam Words)

परिभाषा–जो शब्द हिंदी भाषा में संस्कृत के समान प्रयुक्त होते हैं, उन्हें हम तत्सम शब्द कहते हैं।

जो शब्द संस्कृत से बिगड़कर हिंदी भाषा में प्रयोग होते हैं, उन्हें हम तद्भव शब्द कहते हैं।

कुछ तद्भव तथा तत्सम शब्द निम्न हैं–

तद्भव	तत्सम
अवध	अवध्य
अमिय	अमृत
आग	अग्नि
आम	आम्र
दीठि	दृष्टि
नेह	स्नेह
पंथ	पथ
विपदा	विपत्ति
मीत	मित्र
लाख	लक्ष
दोश	दोष
कान	कर्ण
जतन	यत्न
छोभ	क्षोभ
पुन्य	पुण्य
चरन	चरण
जोग	योग
घी	घृत
गृही	गृहिणी
उल्लू	उलूक
चमार	चर्मकार
जोति	ज्योति
नाच	नृत्य
छिन	क्षण
पोथी	पुस्तक
मनि	मणि

तद्भव	तत्सम
दही	दधि
गाँव	ग्राम
अवगुन	अवगुण
आलस	आलस्य
आयसु	आदेश
अस्तुति	स्तुति
आधा	अर्ध
आँसू	अश्रु
ओंठ	ओष्ठ
आस	आशा
अनरथ	अनर्थ
आज	अद्य
अंगूठा	अंगुष्ठ
इलायची	एला
इमली	अम्लिका
सपथ	शपथ
उछाह	उत्साह
दई	दैव
मानस	मनुष्य
उलाहना	उपालम्भ
चूरन	चूर्ण
डंक	दंश
बुधि	बुद्धि
छांह	छाया
मेह	मेघ
विरत	विरक्त

तद्भव	तत्सम
मरमु	मर्म
सिला	शिला
अवसि	अवश्य
किवाड़	कपाट
नैन	नयन
कलेश	क्लेश
कौआ	काक
पियारा	प्यारा
जीभ	जिह्वा
थान	स्थान
सपूत	सुपुत्र
छिति	क्षिति
तिनका	तृण
दाँत	दन्त
पत्ता	पत्र
पंछी	पक्षी
हाथी	हस्ती
मारग	मार्ग
लालच	लालसा
भाई	भ्रातृ
बिगरी	बिगड़ी
नखत	नक्षत्र
नाखून	नख
तपसी	तपस्वी
माथा	मस्तक
नीम	निम्ब
मामा	मातुल
पाहन	पाषाण
मगर	मकर
हरस	हर्ष
सरन	शरण
हत्यारा	बधिक
स्वान	श्वान
साँप	सर्प
वान	वाण

तद्भव	तत्सम
सूत	सूत्र
नींद	निद्रा
पाँच	पञ्च
छेद	छिद्र
निक्रिष्ट	निकृष्ट
जेठ	ज्येष्ठ
पूरन	पूर्ण
बहू	वधू
मोर	मयूर
साखी	साक्षी
सोना	स्वर्ण
भौंरा	भ्रमर
फूल	पुष्प
माखन	मक्खन
सपना	स्वप्न
ब्याह	विवाह
नाक	नासिका
पग	पद
साँझ	संध्या
हिया	हृदय
तेल	तैल
भीख	भिक्षा
बैल	वृषभ
मोती	मुक्ता
निसि	निशि
मछली	मत्स्य
ताँबा	ताम्र
मानष	मानुस
नाईं	नापित
शाप	श्राप
हिरन	हरिण
हरन	हरण
भगत	भक्त
नित	नित्य
बन	वन

तद्भव	तत्सम
फागुन	फाल्गुन
पूत	पुत्र
पलंग	पर्यंक
नींद	निद्रा
शक्कर	शर्करा
तमाखू	तमाल
गोसाईं	गोस्वामी
गुफा	गुहा
गधा	गर्दभ
सरवर	सरोवर
सास	श्वश्रु
आसीस	आशीष

तद्भव	तत्सम
पीठ	पृष्ठ
प्यास	पिपासा
सिस्य	शिष्य
लोन	लवण
मैल	मल
गोबर	गोमय
गाँठ	ग्रंथि
गेहूँ	गोधूम
ग्वाल	गोपाल
लछमी	लक्ष्मी
तुरंत	त्वरित
सरसों	सर्षप

अभ्यास

1. तत्सम शब्द किसे कहते हैं ?

_____

2. तद्भव तथा तत्सम शब्दों में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए।

_____

3. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए–

पत्थर _____

किसान _____

घी _____

साँप _____

हरस _____

प्यास _____

4. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव शब्द लिखिए–

श्राप _____

साक्षी _____

मातुल _____

नक्षत्र _____

निद्रा _____

26

पत्र-लेखन
(Letter-Writing)

पत्र लिखना भी एक कला है। जिस बात को हम प्रत्यक्ष रूप से कहने में संकोच करते हैं, उसे हम पत्र द्वारा नि:संकोच कह सकते हैं।

छात्रों को हर प्रकार के पत्र लिखने की पूरी जानकारी होनी चाहिए, जिससे वे अपने मित्रों, प्रियजनों तथा पुस्तक-विक्रेताओं आदि को अपनी भावनाओं तथा समस्याओं से अवगत करा सकें।

पत्र के प्रकार

पत्र के अनेक भेद (प्रकार) हैं–

(i) व्यक्तिगत पत्र

(ii) प्रार्थना पत्र

(iii) सरकारी पत्र

(iv) व्यावसायिक पत्र

इसमें व्यक्तिगत अथवा निजी पत्र भी कई प्रकार के बताए गए हैं–

(क) पारिवारिक-पत्र

(ख) निमंत्रण-पत्र

(ग) शोक-पत्र

(घ) बधाई-पत्र

(ङ) मित्रों/संबंधियों को पत्र

ध्यान देने योग्य बातें–

पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों पर धयान देना अति आवश्यक है–

1. पत्र लिखते समय उसमें स्वाभाविकता होनी चाहिए।
2. पत्र की भाषा विषय के अनुकूल हो।
3. पत्र अति स्पष्ट तथा भाषा सरल होनी चाहिए।
4. पत्र में अपने विचारों का क्रमबद्धता में होना आवश्यक है।
5. पत्र लिखने की शैली सरल होने के साथ ही साथ उसमें आकर्षण का गुण भी होना श्रेष्ठ माना जाता है।
6. पत्र लिखते समय मर्यादा का भी धयान रखना चाहिए।
7. पत्र का आरंभ तथा अंत सुखद होना चाहिए।
8. पत्र में अपना व दूसरे का पता और दूरभाष स्पष्ट करके लिखना चाहिए।

पत्र के भाग

नवीन प्रथा के अनुसार पत्र को सात भागों में बाँटा गया है–

1. **स्थान एवं दिनांक**–पत्र के सबसे ऊपर दाईं तरफ भेजने वाले के स्थान का नाम, उसके ठीक नीचे दिनांक लिखते हैं।
2. **संबोधन**–जिसको पत्र लिखते हैं उसको यथा श्रेणी, आदर, प्रेम अथवा आशीर्वाद सूचक शब्द तीसरी पंक्ति में बाईं तरफ लिखते हैं।
3. **अभिवादन**–चौथी पंक्ति में लगभग तिहाई भाग छोड़कर आदर, प्रेम अथवा आशीर्वाद सूचक शब्दों के अनुसार अभिवादन लिखते हैं।
4. **विषय**–यह पत्र का मुख्य भाग है। इसमें पत्र भेजने वाला अपने हृदयगत भावों को लिखता है।
5. **शिष्टाचार के शब्द**–जिस पंक्ति में पत्र का विषय समाप्त हो जाता है, उसमें पंक्ति के दाईं तरफ श्रेणी के अनुसार ये शब्द लिखते हैं।
6. **हस्ताक्षर**–शिष्टाचार के शब्दों के ठीक नीचे भेजने वाला अपना नाम-पता लिखता है।
7. **पता**–कार्ड पर टिकट के नीचे पाने वाले का पूरा पता लिखते हैं।

पत्र के अनुसार संबोधन तथा शिष्टाचार के शब्द

पद	संबोधन के शब्द	अभिवादन	शिष्टाचार के शब्द
माता-पिता, गुरुजनों तथा बड़ों को	श्रद्धेय, श्रीमान, पूजनीय, श्रीयुत्	सादर चरण स्पर्श, सादर प्रणाम	आपका आज्ञाकारी, आपका स्नेहाकांक्षी
अधिकारी आदि को	श्रीयुत्, महोदय, श्रीमान्	सादर नमस्कार	आपका, प्रार्थी
अपने से छोटों को, बराबर वाले को।	प्रिय, प्रियवर, प्रिय मित्र, प्रिय बंधु	सप्रेम नमस्कार चिरायु, आशीर्वाद	भवदीय, तुम्हारा, शुभचिंतक

कुछ सामान्य पत्रों के नमूने

1. आपके मित्र को छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। उसे बधाई पत्र लिखिए।

आगरा

प्रिय मित्र गोविंद, 26-8-20___

सस्नेह नमस्कार।

यू॰ पी॰ बोर्ड की दशम् कक्षा की परिणाम सूची में तुम्हारा नाम छात्रवृत्ति-प्राप्त छात्रों में देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। प्रिय, मित्र! मुझे तुमसे यही आशा थी। परीक्षफल में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करना कोई मामूली बात नहीं है। अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

सधन्यवाद।

तुम्हारा शुभचिंतक

मनोहर शुक्ला

2. अपनी भूल के लिए क्षमा याचना करते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखिए।

प्रयागराज

15-07-20___

आदरणीय पिताजी,

सादर चरण स्पर्श।

कल ही आपका पत्र प्राप्त हुआ। आपने प्रश्न किया है कि मेरे वार्षिक परीक्षा में इतने कम अंक आने का क्या कारण है ? परीक्षोपयोगी कम सामग्री प्राप्त होने के कारण तथा गलत दोस्तों की संगति से मुझे कम अंक मिले। आपके पत्र ने मुझे सचेत कर दिया है।

कृपया मेरी इस गलती के लिए मुझे क्षमा कीजिए। आशा है, आप मुझे क्षमा कर देंगे। मैं पुनः आपको वचन देता हूँ कि इस बार मैं परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त करूँगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

बलराम त्रिपाठी

3. अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए तथा उसकी पढ़ाई के विषय में जानकारी माँगिए।

मसूरी

20-08-20___

प्रिय अनुज,

चिरंजीवी रहो।

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने अद्‌र्धवार्षिक परीक्षा में जो अंक प्राप्त किए हैं वे संतोषजनक नहीं हैं। अब वार्षिक परीक्षा निकट आ रही है। मुझे अपनी पढ़ाई के विषय में पूर्ण जानकारी दो। प्रत्येक विषय में तुम्हारी क्या स्थिति है, कितने अंक पाने की संभावना है, पूरा विवरण दो।

पत्र का उत्तर शीघ्र देना।

तुम्हारा बड़ा भाई

रविकान्त गुप्ता

4. निमंत्रण पत्र अपनों को

प्रिय शुक्ला जी,

सादर नमस्कार !

हर्ष का विषय यह है कि आपकी प्रिय संस्था का वार्षिकोत्सव दिनांक 20 अक्टूबर 20__ को धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर मुख्यमंत्री महोदय उत्तर प्रदेश पधार रहे हैं और उन्हीं के हाथों से पारितोषिक-वितरण होगा। अतः आपसे अनुरोध है कि उत्सव में सम्मिलित होकर कृतार्थ करें।

भवदीय

दिनांक 20.8.20___ आनन्द प्रकाश

5. अपने विद्‌यालय के प्रधानाध्यापक को छुट्‌टी के लिए आवेदन-पत्र

सेवा में,

प्रधानाध्यापक महोदय,

डी॰ पी॰ इण्टर कालेज

शाहजहाँपुर। दिनांक-18 सितम्बर 20__

मान्यवर,

निवेदन है कि मेरी बड़ी बहन की शादी 26 सितम्बर 20__ को कानपुर में होनी तय है। हमारे परिवार के सभी लोग वहाँ पहुँच चुके हैं। कृपया मुझे 18 सितम्बर तारीख से 29 तारीख तक का अवकाश देने की कृपा करें।

आपकी इस कृपा के लिए आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी
अजय शंकर
कक्षा–VIII A

6. सफाई की व्यवस्था के लिए पत्र

सेवा में,

श्रीमान् मुख्य नगर स्वास्थ्य अधिकारी
नगर पालिका परिषद
कानपुर।

महोदय,

निवेदन यह है कि राजेन्द्र नगर में स्फाई की व्यवस्था बहुत खराब है। जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे हुए हैं तथा नालियों में गंदा पानी रुका हुआ है। गंदगी के कारण इस क्षेत्र के निवासियों में बीमारियाँ फैलने का खतरा भी उत्पन्न हो गया है। अतः श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि राजेन्द्र नगर में सफाई की समुचित व्यवस्था कराने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

प्रार्थीगण
नरेश, आशीष, सोमपाल, धर्मपाल आदि।
राजेन्द्र नगर, कानपुर।

दिनांक 25-9-20___

7. मैच खेलने के लिए प्रार्थना पत्र

सेवा में,

श्रीमान गेम्स मैनेजर
डी॰ एस॰ इण्टर कालेज
उधमसिंह नगर।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय की टीम आपके विद्यालय की टीम से क्रिकेट मैच खेलना चाहती है। मैच आपके विद्यालय के मैदान पर होगा तथा निर्णायक भी आप ही होंगे। आपसे अनुरोध है कि मैच खेलने की अनुमति प्रदान करें।

सधन्यवाद।

सुशील गुप्ता
(कैप्टन)

दिनांक 28.10.20___

8. संपादक के नाम पत्र

श्रीमान् संपादक महोदय,
अमर उजाला
बरेली।

महोदय,

आपके समाचार पत्र में प्रतिदिन दहेज-हत्या, उत्पीड़न, शोषण आदि से संबंधित अनेक खबरें पढ़ने को मिलती हैं, किंतु इन समस्याओं की निराकरण संबंधी सामग्री बहुत कम पढ़ने को मिलती है। आपसे अनुरोध है कि इन समस्याओं के निराकरण हेतु आप अपने पत्र में ऐसी सामग्री निरंतर छापते रहें, जिससे इन समस्याओं के प्रति समाज में जागृति उत्पन्न हो।

मुझे आशा है कि आप अपनी नैतिक जिम्मेदारियों को समझते हुए मेरे सुझाव पर अवश्य ही ध्यान देंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

मनोहर सिंह

265-A शास्त्रीनगर, लखनऊ

दिनांक 28-08-20___

9. पुरस्कार मिलने पर अपनी सहेली को पत्र

78.आलमनगर

लखनऊ

01-11-20___

प्रिय रजनी,

सप्रेम नमस्ते।

कल ही तुम्हारा पत्र मिला। पत्र पढ़कर समाचार ज्ञात हुआ कि तुम्हें राज्य स्तरीय वार्षिक खेलों में श्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। साथ ही साथ ईश्वर से कामना करती हूँ कि तुम भविष्य में भी इसी प्रकार अच्छा प्रदर्शन करती रहो। मुझे विश्वास है कि एक न एक दिन एशियाई खेलों में भी तुम्हें स्वर्ण पदक प्राप्त होगा। शेष सब कुशल है। पत्र की प्रतीक्षा में–

तुम्हारी अभिन्न हृदया

शिल्पी

10. अपने पुस्तक विक्रेता को पत्र

सेवा में,

प्रबन्धक महोदय,

जीनियस प्रकाशन

मेरठ।

श्रीमान् जी,

निवेदन यह है कि आप मेरे पते पर वी॰ पी॰ पी॰ पार्सल द्वारा नीचे लिखी हुई पुस्तकें भेजने का कष्ट करें। पुस्तक नवीन संस्करण की होनी चाहिएँ–

1. हिन्दी प्रबोध– 15 प्रतियाँ
2. व्याकरण मंजूषा– 15 प्रतियाँ
3. संस्कृत व्याकरण भाग-5– 16 प्रतियाँ
4. अंग्रेज़ी भाग-3– 14 प्रतियाँ

भवदीय

अजय शंकर त्रिपाठी

जनता बुक डिपो, शाहजहाँपुर।

दिनांक : 26.7.20___

27 अपठित गद्यांश
(Unseen Passage)

अपठित अवतरण छात्रों के ज्ञान की उत्तम कसौटी है। इसे जानने के लिए उस अवतरण को बार-बार ध्यानपूर्वक पढ़ा जाए, कई बार पढ़ने से उसका भाव स्वत: समझ में आने लगता है।

अपठित उसे कहते हैं जो विद्यार्थी द्वारा न पढ़ा गया हो और न ही उसकी पाठ्य-पुस्तक में हो। परीक्षा में कुछ गद्य या पद्य के अंश आते हैं। उनके भावार्थ और विशेष वाक्य एवं पद्य का शीर्षक आदि पूछा जाता है। अपठित प्रश्न आने से यह ज्ञात हो जाता है कि छात्र को कुछ ज्ञान है अथवा नहीं।

भावार्थ को संक्षेप में उत्तम विधि द्वारा लिखना चाहिए। शीर्षक देते समय पद्य खण्ड को बार-बार पढ़कर समझ लें कि क्या भाव प्रकट हो रहे हैं, तभी उसका शीर्षक लिखें।

अभ्यासार्थ गद्य एवं पद्य के कतिपय उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं जिनसे छात्र को यह ज्ञान हो सके कि परीक्षा में किस प्रकार के प्रश्न आते हैं–

गद्यांश भाग

अभ्यास 1

सभी मनुष्यों के लिए शरीर-श्रम अनिवार्य है। यह बात सर्वप्रथम टॉलस्टाय के एक निबंध से मेरे गले में उतरी। शरीर-श्रम से मेरा अभिप्राय है–'रोटी के लिए श्रम'। रोटी के लिए हर आदमी को मजदूरी करना, हाथ-पैर हिलाना ईश्वरीय नियम है। इसकी झलक मेरी आँखें भगवद्गीता के तीसरे अध्याय में पा रही हैं। 'यज्ञ किए बिना खाने वाला चोरी का अन्न खाता है।' यह शाप यज्ञ न करने वालों के लिए है। यहाँ यज्ञ का श्रम रोटी-श्रम ही है। हमारे इस व्रत की यही उत्पत्ति है।

प्रश्न–

(क) उपर्युक्त गद्यांश का भावार्थ लिखिए।

(ख) रेखांकित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर–

(क) **भावार्थ–**मनुष्य को शारीरिक श्रम करना चाहिए। यह बात टॉलस्टाय ने अपनी निबंध पुस्तक में उद्धृत की है। मनुष्य को अपना पेट पालने के लिए हाथ-पैर चलाने चाहिएँ। यही ईश्वर का नियम है। गीता में भी यज्ञ करके अन्न खाने के लिए कहा गया है। यज्ञ अर्थात् 'श्रम करना', श्रम करके भोजन पाना चाहिए।

(ख) **शरीर-श्रम–**मेहनत करना या काम करना।

ईश्वरीय नियम–विधि का विधान है।

व्रत की यही उत्पत्ति–व्रत का यही फल है।

(ग) 'श्रम का महत्त्व'।

अभ्यास-2

पर्वतराज हिमालय भारत का मुकुट है। इसकी विस्तीर्ण पर्वतमालाएँ, हिमाच्छादित गगनचुम्बी शिखर, गहन कंदराएँ, सुरम्य वन प्रदेश, हरहराती नदियाँ, अनेक जल प्रपात तथा जल-कुंड अनादि काल से मानव के आकर्षण का केंद्र रहे हैं। गंगा, यमुना, सिंधु, ब्रह्मपुत्र तथा इसकी अनेक सहायक नदियाँ इसी के हिमखण्डों से निकलकर आर्यावर्त्त के पावन भू-भाग को जीवन दान देती हैं। इस मैदान की रचना भी हिमालय से बहकर आई मिट्टी से हुई है।

(क) रेखांकित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ख) उपर्युक्त गद्यांश का भावार्थ लिखिए।

(ग) शीर्षक बताइए।

अभ्यास-3

हमारी मातृभूमि सदा से ही संकट की स्थिति में किसी न किसी महामानव को जन्म देती आई है जिसके मार्गदर्शन, त्याग तथा साहस से राष्ट्र उन्नति की ओर अग्रसर हुआ है। परतंत्रता की बेड़ी में बंधे हुए देश पर विदेशी शासन के अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच रहे थे। तब सन् 1896 में रतनगिरी जनपद के चिरबल नामक गाँव में बालगंगाधर तिलक का जन्म हुआ। निर्धन परिवार में जन्म होने पर भी उनके विचारों में हीनता नहीं थी।

(क) रेखांकित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ख) गद्यांश का भावार्थ लिखिए।

(ग) तिलक का जन्म कहाँ हुआ था ?

(घ) बाल गंगाधर तिलक के जन्म के समय देश की दशा कैसी थी ?

अभ्यास-4

यह वस्तु मेरी होकर रहेगी, इसी में संघर्ष और कलह होती है। सेवाभाव में कभी संघर्ष नहीं हो सकता। हम, तुम सभी सच बोलें, धर्मचरण करें, उपासना करें, लोगों के दु:ख निवारण करें, इसमें कोई झगड़ा नहीं है। क्योंकि उस वस्तु का उपयोग एक समय में प्राय: एक ही व्यक्ति कर सकता है। गाना हो रहा हो, आकाश में तारे खिले हों तथा फूलों के स्वाद से लदा समीर बह रहा हो, ऐसे में आकाश-सुख का आनन्द एक साथ लाखों लोग ले सकते हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

(ख) रेखांकित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अभ्यास-5

पुस्तकों का **हम सबको ऋणी होना चाहिए**। मनुष्य जाति ने जितना भी ज्ञान तथा अनुभव प्राप्त किया है, जो भी अन्वेषण और आविष्कार किए हैं, वे सब इनमें संचित हैं। **ये अध्यापक हमको बिना दण्ड प्रहार के, बिना कुटिल शब्द कहे और बिना शुल्क लिए ही शिक्षा दे सकते हैं।** यदि हम इनके निकट जाएँ, तो ये सोते या किसी कार्य में संलग्न न मिलेंगे।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

(ख) काले छपे अंशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

अभ्यास-6

जीवन में **व्यायाम का विशेष महत्व** है। पशु और पक्षी भी अपने-अपने ढंग से शारीरिक व्यायाम करते हैं। व्यायाम से **रक्त संचार तीव्र होता है, भोजन पचता है तथा भूख अच्छी तरह लगती है।** व्यायाम करने वाले को कभी थकान नहीं आती है। उसका उत्साह कभी मंद नहीं पड़ता है। वह निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

(ख) व्यायाम से क्या लाभ है ?

(ग) काले छपे अंशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

पद्यांश भाग

जो सिद्धांत अपठित गद्यांश के बारे में लागू होता है वही सिद्धांत अपठित पद्यांश के बारे में भी लागू होता है। परीक्षा में तीन बातें अपठित पद्यांश के संबंध में पूछी जाती हैं– (i) पद्यांश का भावार्थ, (ii) पद्यांश का शीर्षक, (iii) पद्यांश पर आधरित प्रश्नों के उत्तर।

कुछ अभ्यासों द्वारा यह बात स्पष्ट हो जाएगी–

अभ्यास-1

वनिता की ममता न हुई, सुत का न मुझे कुछ छोह हुआ।
ख्याति, सुयश, सम्मान विभव का, त्यों ही कभी न मोह हुआ।।
जीवन की क्या चहल-पहल है, इसे न मैंने पहचाना।
सेनापति के एक इशारे पर, मिटना केवल मैंने जाना।।

प्रश्न–

(क) कविता में सैनिक के कौन-कौन से कर्त्तव्य बताए गए हैं ?

(ख) उपर्युक्त कविता का शीर्षक बताइए।

(ग) अंतिम दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

उत्तर–

(क) इस कविता के द्वारा बताया गया है कि देश-प्रेम के सामने सिपाही अपनी स्त्री-पुत्र, ख्याति-यश तथा सांसारिक सुख सब कुछ ठुकराकर सेनापति के एक संकेत पर मर-मिटने के लिए तैयार रहता है।

(ख) शीर्षक–सिपाही।

(ग) सैनिक में देश-प्रेम की इतनी बड़ी भावना होती है कि उसके सामने वह अपनी सुख-सुविधा सब कुछ त्याग देता है। अपने सेनापति के आदेश पर मर-मिटने की उसमें लगन और उत्साह है।

अभ्यास-2

वीर थे तुम, धीर थे तुम, सत्य के अवतार थे तुम।
थे अहिंसा के पुजारी, धर्म के अवतार थे तुम।।
एकता की तान थे तुम, देश की पतवार थे तुम।
दीन-जन का भुखमरों का, कर रहे कल्याण थे तुम।।

प्रश्न–

(क) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ख) पद्यांश का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) अंतिम पंक्ति का अर्थ लिखिए।

अभ्यास-3

उसी उदार की कथा, सरस्वती बखानती।
उसी उदार की धरा, कृतार्थ भाव मानती।।
उसी उदार की सदा, सजीव कीर्ति कूजती।
तथा उसी उदार को, समस्त सृष्टि पूजती।।

प्रश्न–

(क) समस्त सृष्टि किसका पूजन करती है ?

(ख) इस पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ग) रचना का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

अभ्यास-4

कोलाहल पर कोलाहल सुन, शस्त्रों की सुन झनकार प्रबल।
मेवाड़ केसरी गरज उठा, सुनकर अरि की ललकार प्रबल।।
लड़-लड़कर अखिल महीतल को, शोणित से भर देने वाली।
राणा का ओज भरा आनन, सूरज समान चमचमा उठा।।

प्रश्न–

(क) उपर्युक्त कविता का शीर्षक लिखिए।

(ख) कविता का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) पंक्तियों में कवि ने हमें क्या उपदेश दिया है ?

(घ) अंतिम दो पंक्तियों का अर्थ लिखिए।

अभ्यास-5

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुयी न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिये,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिये।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रश्न–

(क) कवि किस प्रकार की मृत्यु को श्रेष्ठ समझता है ?

(ख) इन पंक्तियों द्वारा कवि ने हमें क्या उपदेश दिया है ?

(ग) अंतिम दो पंक्तियों का अर्थ लिखिए।

अभ्यास-6

है कार्य ऐसा कौन-सा, साधे न जिसको एकता ?
देती नहीं अद्भुत अलौकिक, शक्ति किसको एकता ?
दो एक एकादश हुए किसने नहीं देखे-सुने ?
हाँ, शून्य के भी योग से हैं अंक होते दस गुने।

प्रश्न–

(क) पद्यांश का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) चौथी पंक्ति का आशय बताइए।

(ग) पद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

28 संवाद-लेखन
(Dialogue-Writing)

सृजनात्मक लेखन की एक प्रमुख विधा **संवाद-लेखन** है। जब दो व्यक्ति किसी भी विषय को लेकर परस्पर बातचीत करते हैं तो उसे **संवाद** कहा जाता है। नाटकों में पात्रों के कथन भी **संवाद** कहलाते हैं। जब उस बातचीत को लिपिबद्ध कर दिया जाता है तो वह **संवाद-लेखन** कहलाता है।

संवाद लेखन के समय ध्यान देने योग्य बातें–

(क) संवाद किए गए विषय से संबंधित होना चाहिए।

(ख) संवाद की भाषा सरल, सहज और भावानुकूल होनी चाहिए।

(ग) संवाद छोटे, स्वाभाविक और रोचक होने चाहिए।

(घ) पात्रों के हाव-भाव विभिन्न और रोचक होने चाहिए।

(ङ) विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करना चाहिए।

(च) संवाद में आत्मीयता लाने के लिए यथास्थान उचित संबोधन प्रयोग में लाने चाहिए।

संवाद-लेखन के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

1. देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर दो नागरिकों के बीच संवाद

सौरभ – अरे कपिल! बड़े परेशान नजर आ रहे हो।

कपिल – अरे, क्या बताऊँ मित्र, टेलीफ़ोन के दफ़्तर से आ रहा हूँ।

सौरभ – अरे! क्या हुआ है मुझे तो बताओ?

कपिल – इस माह हमारा टेलीफ़ोन का बिल पाँच हजार रूपये का आ गया था। बिल को ठीक करवाने के लिए टेलीफ़ोन के दफ़्तर गया था।

सौरभ – तो क्या उन्होंने बिल ठीक कर दिया?

कपिल – नहीं मित्र! बिल ठीक करवाने के लिए क्लर्क 500 रू की रिश्वत माँग रहा है।

सौरभ – तो क्या तुमने उसे 500 रू दे दिए?

कपिल – दिए तो नहीं! लगता है देने ही पड़ेंगे। इसके अलावा कोई उपाय भी नजर नहीं आ रहा।

सौरभ – उपाय तो है, जिससे हमारा काम भी हो जाएगा और क्लर्क को रिश्वत लेने का दंड भी।

कपिल – इसके लिए मुझे क्या करना होगा?

सौरभ – तुम्हें 'सर्तकता विभाग' की मदद लेनी चाहिए।

कपिल – वहाँ जाकर क्या होगा?

सौरभ – वहाँ जाकर तुम अपनी शिकायत दर्ज कराओ।

कपिल – चलो, ठीक है। हमें भ्रष्टाचार के विरूद्ध कदम तो उठाना ही चाहिए।

सौरभ – हाँ मित्र! यदि हर नागरिक सतर्क हो जाए तो भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म किया जा सकता है।

2. नैनीताल भ्रमण से लौटे हुए एक मित्र का दूसरे मित्र के साथ संवाद

चिराग – अरे मित्र! बड़े प्रसन्न नजर आ रहे हो। तुम्हारा नैनीताल का भ्रमण कैसा रहा?

प्रशांत – बहुत ही मज़ेदार रहा। अगर तुम भी चलते तो और मजा आता।

चिराग – क्या बताऊँ मित्र? मेरे चलने का तो बहुत मन था, लेकिन माँ की तबियत ठीक नहीं थी। चलो छोड़ो। बताओ, नैनीताल कैसी जगह है?

प्रशांत – नैनीताल तो बहुत सुंदर जगह है। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य तो देखने लायक है।

चिराग – क्या तुमने ताल में नौकाविहार भी किया?

प्रशांत – हाँ, हम नाव से मल्लीताल से तल्लीताल तक गए। स्वयं नाव चलाने में तो बहुत आनंद आया।

चिराग – क्या तुमने नैनीताल के अतिरिक्त वहाँ के आस-पास की जगह भी देखी?

प्रशांत – वहाँ आस-पास भी कई दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें भीमताल, सात-ताल, नौकुचियाताल, सूखाताल और घोड़ाखाल का मंदिर प्रमुख हैं। इन सभी जगहों को देखकर मन प्रसन्न हो गया।

3. पानी की बर्बादी के विषय में पिता और पुत्र के बीच संवाद

पिता – बेटा! तुम ये पाइप से गाड़ी क्यों धो रहे हो? अरे! तुमने इतना पानी बर्बाद कर दिया।

पुत्र – पिताजी पानी की बर्बादी कैसी? कार बहुत गंदी हो गई है, इसलिए पाइप लगाकर पानी से कार को ही तो धो रहा हूँ।

पिता – बेटा, पानी का प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए। तुम्हें मालूम नहीं कि आजकल पानी की कितनी कमी होती जा रही है। कई लोगों को तो पानी तक नसीब नहीं हो रहा है।

पुत्र – हाँ! मैंने भी अखबारों में पढ़ा है और दूरदर्शन पर देखा है कि कई इलाकों में पानी बिलकुल ही नहीं आ रहा है। लोग पानी के लिए तरस रहे हैं।

पिता – मैं भी तुम्हें यही समझाना चाहता हूँ कि तुम कार धोने में इतना सारा पानी स्वर्थ में बहा रहे हो। इस पानी की तुम बचत कर सकते थे। पानी की एक-एक बूँद अमूल्य है। आज बचाया गया पानी कल काम आ सकता है।

पुत्र – पिताजी, मैं आपकी बात समझ गया हूँ। आज से मैं पानी बिलकुल बर्बाद नहीं करूँगा। मैं केवल एक बाल्टी पानी से ही कार को साफ़ कर लूँगा। भविष्य में भी हमेशा पानी का उपयोग मितव्ययता के साथ करूँगा।

अभ्यास

1. चित्र देखकर संवाद लिखिए–

2.

3. इन संवादों को अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए–

(क) बस कंडक्टर और यात्री के बीच संवाद।

(ख) प्रदूषण की समस्या पर चिंता करते हुए दो मित्रों के बीच संवाद।

(ग) गरमी और सरदी के बीच संवाद।

29

कहानी-लेखन
(Story-Writing)

कहानी की उत्पत्ति कब से हुई, यह तो ठीक से ज्ञात नहीं है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि मनुष्य के जन्म के साथ ही कहानी का भी जन्म हुआ होगा। कहा जा सकता है कि जितना पुराना मनुष्य का इतिहास है, कहानी भी उतनी ही पुरानी है।

कहानी के अंग

कहानी के चार प्रमुख अंग होते हैं–

(क) कथा-वस्तु

(ख) कथोपकथन

(ग) पात्र

(घ) उद्देश्य

कहानी लिखने में सावधानियाँ–

1. कहानी में कथावस्तु इतनी रोचक हो कि पढ़ने वाले में रुचि पैदा हो।
2. कहानी वातावरण के अनुकूल होनी चाहिए।
3. कहानी के कथोपकथन छोटे, सरल व सरस होने चाहिएँ।
4. कहानी लिखने का उद्देश्य बच्चे की रुचि के अनुकूल हो।
5. कहानी शिक्षाप्रद होनी चाहिए, जो बच्चों को प्रेरित कर सके।

कुछ आदर्श कहानियाँ

1. व्यर्थ कदापि न बोलो

किसी जलाशय में एक कछुआ रहता था। उसी जलाशय में दो बगुले भी रहते थे। बगुलों और उस कछुए में बड़ी मित्रता हो गई। अचानक गर्मी की ऋतु में जलाशय सूखने लगा। इससे कछुए की चिंता बढ़ने लगी। एक दिन कछुए को दु:खी देकर बगुलों ने पूछा—"मित्र ! तुम परेशान क्यों हो ?" इस पर कछुए ने अपनी चिंता का कारण बताया। इस पर बगुले भी चिंतित हो गए। बगुलों ने कहा—"मित्र होने के नाते एक मित्र की सहायता करना हमारा कर्त्तव्य है। क्या हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं ?"

कुछ देर सोचने के बाद कछुए ने कहा—"जरूर, आप लोग एक लकड़ी का सीधा डंडा लाकर उसे दोनों ओर से अपनी चोंच में पकड़ कर उड़ेंगे और मैं डंडे को बीच में पकड़ूँगा। इस प्रकार आप मुझे किसी बड़े जलाशय में डाल सकते हैं।"

बगुलों ने ऐसा ही किया। वे एक लकड़ी का डंडा ले आए और एक बड़ा-सा जलाशय भी देख आए। उन्होंने कछुए से कहा—"मित्र! तुम किसी भी दशा में मुँह मत खोलना और डंडे को मजबूती से पकड़े रहना, अन्यथा गिर जाओगे।" कछुए ने कहा—"मैं कदापि मुँह नहीं खोलूँगा।" अब बगुले इस डंडे को लेकर उड़ चले। कुछ देर बाद वे नगर के

ऊपर से गुजर रहे थे। वहाँ बच्चों ने इस विचित्र दृश्य को देखा तो शोर मचाने लगे कि देखो-देखो बगुले एक केकड़े को ले जा रहे हैं।

कछुआ यह सुनकर अपने को रोक न सका और बोल पड़ा ''मूर्खों ! मैं केकड़ा नहीं कछुआ हूँ।'' किंतु मुँह खुलते ही डंडा कछुए के मुँह से छूट गया और जमीन पर गिरकर वह मर गया।

2. शेर की बन आई

एक जंगल में चार गाएँ रहती थीं। उनमें गहरी मित्रता थी। वे हमेशा साथ-साथ घूमने जातीं, साथ-साथ चरतीं। वे बहुत सुख से रहती थीं। जंगल के सभी जानवर उनसे डरते थे। यदि कोई जानवर उन पर आक्रमण करता तो वे चारों मिलकर उसे हरा देती थीं।

इन चारों की दोस्ती शेर को खटकती थी। वह उन गायों को मारकर खा लेना चाहता था। लेकिन जब वे उन चारों की एकता देखता तो डरकर पीछे हट जाता था। एक दिन शेर ने एक चाल चली। उसने एक गाय को अपने पास बुलाकर उसके कान में दूसरी गाय के बारे में कुछ कहा। उसकी बात सुनकर वह गाय अपने साथियों से अलग रहने लगी। उसकी तरकीब काम आ गई। फिर उस शेर ने बाकी तीन गायों को बहला-फसलाकर उनमें फूट डलवा दी।

एक दिन चारों गायों ने खूब झगड़ा हो गया और चारों गाएँ अलग-अलग चरने लगीं। शेर तो इसी ताक में था। उसने मौका देखकर एक गाय पर हमला किया। आपसी दुश्मनी के कारण दूसरी गायों ने उसकी मदद नहीं की। शेर ने उसे मारकर खा लिया। फिर उस शेर ने एक-एक करके चारों गायों को मार कर उनका मांस खा लिया।

3. हठ का परिणाम

एक गाँव के पास एक नदी बहती थी। गाँव वालों ने उसे पार करने के लिए उस पर टूटें हुए पेड़ का तना डाल दिया था। उस पर धीरे—धीरे पैर जमाकर लोग नदी को पार जाते थे।

एक दिन पेड़ के तने के पुल से एक बकरी पार जा रही थी। अचानक उसे सामने से एक दूसरी बकरी आती दिखाई दी। पुल पर इतनी जगह नहीं थी कि दोनों बकरियाँ एक साथ पुल पार कर पातीं। दोनों ही जिद्दी और अड़ियल थीं। चलते—चलते पुल के बीच में दोनों एक दूसरें के आमने—सामने आ गईं। वे एक—दूसरे को घूरने लगीं और एक—दूसरे को हटने के लिए कहने लगीं। किसी ने भी एक—दूसरे की बात नहीं मानी और लड़ने लगीं। एक—दूसरे के सींग—में—सींग फँसाकर वह दूसरे को धकेलकर पीछे हटने को कहतीं। दोनों अपनी हठ पर अड़ी रहीं और लड़ते—लड़ते दोनों ही नदी में गिर गईं।

4. हिस्सेदार

खरगोश को मिठाई खाने का बड़ा शौक था। अपने दोस्त रामू के यहाँ पार्टी में खरगोश ने जी भरकर मिठाई खाई थी। उस बात को पूरा साल भर हो गया था, तब से एक बार भी खरगोश को मिठाई नहीं मिली थी। खरगोश मेहनती ईमानदार था। एक दिन एक धूर्त भेड़िया उसके पास आया और बोला ''मेरे साथ चलो, एक जगह पेट भर मुफ्त मिठाई उड़ाएँगे।'' भेड़िये को पूरी उम्मीद थी कि खरगोश मिठाई के लालच में उसका साथ देने को तैयार हो जाएगा, परंतु खरगोश के साफ़ मना कर देने से उसकी योजना पर पानी फिर गया। इधर शाम को टहलता हुआ खरगोश बाज़ार गया तो उसे टिंकू की मिठाई की दुकान दिखी।

मिठाई देखकर खरगोश का मन मचल उठा कि काश ! उसे यह मिठाई मिल जाती तो कितना अच्छा होता। दुकान वाले ने खरगोश से कहा-'क्या तुम मेरी गैरहाजिरी में दुकान का ख्याल रख सकते हो ? यह वक्त ग्राहकों का है,

वरना बंद करके चला जाता।' खरगोश तैयार हो गया। खरगोश ने खाना तो दूर रहा, मिठाई को छुआ तक नहीं। जो भी ग्राहक आया उसे तोलकर मिठाई दी और पैसे गल्ले में रख दिए।

थोड़ी देर बार वही धूर्त भेड़िया आ गया। उसने खरगोश को वहाँ बैठे देखा तो खुशी से बोला, आज खूब दावत उड़ाऊँगा।

खरगोश ने गरजकर उसे साफ़ मना करते हुए वहाँ से भगा दिया। तभी टिंकू आ गया। खरगोश उसे बिक्री का हिसाब बताकर जाने लगा।

टिंकू ने खरगोश से कहा–''मैं तुम्हारा इम्तिहान ले रहा था, जिसमें तुम सफल रहे। क्या तुम मेरे साथी बनोगे?''

खरगोश यह प्रस्ताव पाकर खुशी से उछल पड़ा। ईमानदारी के रास्ते पर चलकर उसे एक अच्छा रोज़गार मिल गया।

5. जैसे को तैसा

पहाड़ों तथा घाटियों से घिरे वन में बहुत से पशु-पक्षी रहा करते थे। उस वन में एक नदी बहती थी। वन के ऊपरी भाग में हाथियों का झुंड रहता था। स्वच्छ पानी में वहाँ हाथियों को नहाना बहुत पसन्द था।

झुंड के हाथियों ने एक तरकीब सोची। उन्होंने बड़े-बड़े पत्थर इकट्ठे किए और पहाड़ी के एक समतल हिस्से में नदी के आर-पार उन्हें दीवार की तरह खड़ा कर दिया। इस प्रकार वहाँ पर एक डैम सा बन गया। अब सभी हाथी बहुत खुश थे। उस घाटी में रहने वाले शेष जानवरों की हालत बहुत खराब हो गई। पत्थरों से होकर जो पानी बहता था, वही घाटी में जाता था जो बहुत कम था। अत: जानवर प्यासे ही रह जाते थे। एक दिन सभी जानवर इकट्ठे होकर हाथियों के सरदार के पास गए और उससे विनती की कि वह उस दीवार को तुड़वा दें, ताकि नदी का पानी सबको मिल सके। हाथियों के सरदार ने ऐसा करने से मना कर दिया।

पानी की परेशानी से वन के सभी छोटे-बड़े जानवर परेशान थे। उन्हें ऊपर जाकर प्यास बुझानी पड़ती थी। गर्मी के मौसम में हालत खराब होने लगी। जानवरों ने बार-बार हाथियों के सरदार से विनती की, पर उस पर विनती का कोई असर नहीं हुआ। दिन-प्रतिदिन घाटी के जानवरों का क्रोध बढ़ता जा रहा था। परंतु सभी जानते थे कि ताकतवर हाथियों के खिलाफ कुछ नहीं किया जा सकता।

सभी सोच रहे थे कि वे हाथी हमारे यहाँ पानी आने नहीं देते, लेकिन हर बार हमारे खेतों में आकर गन्ने खा जाते हैं। पहाड़ी का ज्यादातर इलाका बंजर था, इसलिए हाथियों का झुंड नीचे आकर गन्ने और घास चट कर जाता। लेकिन उन्हें रोका कैसे जाए ? प्रत्येक ने अपने सुझाव दिए, लेकिन ताकतवर हाथियों के सामने इन उपायों से कुछ नहीं होने वाला था।

अब उनके मन में एक विचार आया कि घाटी व पहाड़ी के बीच खाई खोद दी जाए, जिसे हाथी पार कर पाने में असमर्थ हो जाएँ। अत: जैसे ही अंधेरा हुआ, सबने मिलकर खाई खोदना शुरू कर दिया। उसमें से निकली मिट्टी को भी दूर फेंक दिया, जिससे हाथी खाई को पाट न सकें। प्रात: होने से पहले ही खाई खोद दी गई।

प्रात: हाथियों को जब भूख सताने लगी तो वे भोजन की तलाश में नीचे आए। उस गहरी खाई के पास आकर वे रुक गए और सब पैर पटकते हुए चिंघाड़ने लगे, लेकिन खाई को पार करने की हिम्मत किसी भी हाथी में न हुई। जैसे-जैसे भूख बढ़ती गई , वे और जोर से चिंघाड़ने लगे । हाथियों के सरदार ने जानवरों को बुलाकर कहा, ''यह क्या बकवास है ?''

''जब तुम दीवार खड़ी करके पानी रोक सकते हो तो हम तुम्हें यहाँ आने से रोकने के लिए खाई क्यों नहीं खोद सकते?'' एक बूढ़े जानवर ने कहा। हाथी क्रोधित तो हुए पर कुछ कर नहीं सके। एक-दो दिन के बाद भूख से उनकी हालत बुरी हो गई। उन्होंने पहाड़ी पर उगी झाड़ियों को खाना चाहा पर काँटों के कारण उनकी सूँड घायल हो गई।

आखिरकार हाथियों के सरदार ने एक जोरदार टक्कर मार कर दीवार गिरा दी। अब सूखी नदी को पानी से भरा देख घाटी के जानवर बहुत खुश हुए और नाचने लगे। अब उन्होंने भी खाई को फिर से भर दिया। अपने ताकतवर साथियों का स्वागत भी किया। किसी ने ठीक ही कहा है कि – ''जब जैसे को तैसे ही मिलते हैं तभी सबकी आँखें खुलती हैं।''

6. फुलवारी

राम, श्याम, राजन छुट्टी होते ही स्कूल से बाहर आ गए। उस दिन गणतंत्र दिवस था। स्कूल में झंडा फहराया गया था। मास्टर जी ने बताया था कि अब हम आजाद हैं, अत: तीनों आजादी मनाने निकल पड़े। राम बोला–हम आजादी का त्योहार मनाएँगे।

श्याम, राम तथा राजन सड़क के किनारे बैठे चाट वाले के पास पहुँचे। जब चाट खाकर राजन पैसे देने लगा तो श्याम ने रोक लिया और बोला–नहीं, आज आजादी है, हम पैसे नहीं देंगे।

चाट वाला पैसे माँगता ही रह गया और वे तीनों वहाँ से चल दिए। आगे एक पार्क में कुछ फूल लगे हुए थे। तीनों पार्क में घुसकर फूल तोड़ने लगे।

पार्क में बैठे माली ने कहा–बच्चों फूल मत तोड़ो।

राम गुलाब तोड़ते हुए बोला–''आज आजादी है। ''

''अरे बेटा! आजादी का मतलब यह नहीं होता कि नुकसान करो।'' बूढ़ा माली बोला ''तुम लोगों ने आजादी का अर्थ गलत लगाया है।'' आजादी का मतलब होता है, हड़ताल पर काम बंद करना, बाज़ार बंद करना, तोड़-फोड़ करना। श्याम बोला।

''नहीं, आजादी का मतलब तुम ऐसे समझो कि यह तुम्हारी फुलवारी है और मैं इसका मालिक बन बैठा हूँ। तुम लोगों से इसकी गुड़ाई कराता हूँ और फल-फूल मैं ले लेता हूँ। फिर तुम लोग मिलकर मुझे भगा देते हो। अब अपनी फुलवारी के तुम मालिक हो, अब अगर इसकी निराई-गुड़ाई करोगे, तो इसके फल-फूल भी तुम्हें ही तो मिलेंगे न।'' माली ने कहा।

''हाँ!'' राजन ने कहा।

माली फिर बोला–''अब अगर तुम फुलवारी की देखभाल न करो और वह नष्ट हो जाए तो नुकसान किसका होगा?''

श्याम बोला–''नुकसान हमारा ही होगा।''

''बस ऐसे ही देश हमारी फुलवारी ही है। इसे सँवारना हमारे हाथ में है।'' माली ने कहा।

यह सुनकर श्याम बोला ''हम समझ गए, अब हम अपनी फुलवारी को संवारेंगे।''

7. सही रास्ता

मुर्गी अपने नष्ट हुए घर के पास बैठी आँसू बहा रही थी। यह तीसरा मौका था, जब किसी दुष्ट जानवर ने उसके दो बच्चों को मार डाला तथा उसका घर भी नष्ट कर दिया। उसके बच्चों को भीखू नामक एक लोमड़ी ने चट कर दिया था।

उधर मुर्गी अपनी शिकायत लेकर कई जानवरों के पास गई पर किसी ने भी दुष्ट लोमड़ी के विरुद्ध अपना मुँह नहीं खोला। मुर्गी निराश होकर मरने का इरादा कर बैठी थी। मुर्गी गाड़ी के नीचे आकर अपनी जीवन लीला समाप्त करना चाहती थी। वह चलते-चलते काफी दूर निकल गई। रास्ते में दो-तीन नन्हे चूहे आपस में खेल रहे थे। उनसे थोड़ी दूरी पर एक बिल्ली धूप सेंक रही थी।

मुर्गी को यह देखकर बड़ी हैरानी हुई। उन नन्हे चूहों के चेहरे पर डर का नामोनिशान न था। वे आराम से उछल-कूद कर रहे थे। तभी अचानक घात लगाकर बैठी बिल्ली उन चूहों पर झपटी। वे झट से इधर-उधर हो गए। बिल्ली मन

मारकर फिर से अपनी जगह जा बैठी। कुछ देर बाद फिर बच्चे वैसे ही खेलने लगे जैसे कुछ हुआ ही न हो। मुर्गी यह देखकर दंग रह गई।

मुर्गी ने निश्चय किया कि वह चूहों की माँ से इस बात की वजह जरूर पूछेगी। अत: उसने एक चूहे से पूछा–तुम्हारी माँ कहाँ है?

तभी चूहे की माँ बाजार से वापस आ गई। मुर्गी ने उससे पूछा–''क्या आपको बाज़ार जाते वक्त इस बात का जरा भी डर नहीं लगता कि कोई बिल्ली आपके नन्हे बच्चों को मार भी सकती है ?''

''मैं अपने बच्चों पर हमेशा छाया बनकर नहीं रहती, मैंने उन्हें खुद बाहर के खतरों से बचाव करने और मुकाबला करने की शिक्षा दी है। वे अपना बचाव खुद ही कर लेते हैं। चुहिया ने कहा।''

''बहन सही रास्ता दिखाने के लिए बहुत धन्यवाद। अच्छा मैं अब चलती हूँ।'' मुर्गी बोली और अपने घर की तरफ लौट पड़ी।

निराशा से उबर चुकी मुर्गी अपने नष्ट हो चुके घर को फिर से संवारने लगी। वह एक नई ज़िंदगी की शुरुआत करने में जुट गई।

आपने क्या सीखा

(1) जितना पुराना मनुष्य का इतिहास है, उतनी पुरानी कहानी है।

(2) कहानी के चार प्रमुख अंग हैं।

अभ्यास

1. दी हुई रूपरेखाओं के आधार पर कहानियाँ लिखिए–

'रंगा सियार'

एक सियार भोजन की तलाश में–धोबी के नीले पात्र में गिर जाना–प्रात: पानी पीते हुए अपनी परछाई देखना तथा नीलवर्ण होने से वन में राजा होने की घोषणा करना–सभी जानवरों द्वारा उसे राजा मानकर उसके आदेश का पालन करना–उसे मांसादि लाकर खिलाना–सियार का मोटा-ताजा होकर अन्य सियारों को अपने से दूर रखना।

एक रात सभी सियारों का एकत्र होकर हुआँ-हुआँ स्वर में चिल्लाना–सब जानवरों को उसके सियार होने का ज्ञान हो जाना तथा क्रोध में आकर सिंह द्वारा उसका अंत करना।

शिक्षा–कपटी का अंत बुरा।

2. संक्षिप्त रूपरेखाओं पर निम्न कहानी बनाकर लिखें–

'शेर और चूहा'

सोये हुए शेर के मुख पर चूहे का उछलना-कूदना। शेर की नींद का खुल जाना–चूहे का गिड़गिड़ाकर सिंह से क्षमा माँगना–शेर द्वारा दया करके उसे छोड़ देना–कुछ माह बाद शेर का किसी बड़े जाल में फँस जाना–चूहे का शेर की आवाज सुनकर अपने बिल से बाहर आना–जाल काटकर शेर को मुक्त कर देना।

शिक्षा–दया तथा सहयोग की भावना।

30 निबंध लेखन
(Essay-Writing)

निबंध की परिभाषा–निबंध शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है–नि + बंध, अर्थात् 'सही ढंग से बँधा हुआ।'

इस प्रकार (सही ढंग से बँधी हुई) सुगठित तथा क्रमबद्ध वाक्य रचना पर आधारित रचना को ही 'निबंध' कहते हैं।

निबंध रचना हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। आधुनिक युग में प्रायः प्राइमरी स्कूलों, इंटर कॉलेजों से लेकर विश्वविद्यालय की भी परीक्षाओं में निबंध लिखने का एक प्रश्न अवश्य पूछा जाता है। इसमें प्राप्त अंकों का विद्यार्थी की श्रेणी पर बहुत प्रभाव पड़ता है जबकि छात्र प्रायः अपनी पाठ्य-पुस्तकों को पढ़ने में ही अधिक ध्यान देते हैं, निबंध लेखन पर नहीं।

निबंध लेखन भी एक आवश्यक कला है। अतः छात्र को इस ओर भी ध्यान देना अत्यावश्यक है। निबंध में सीमित समय में अपने भावों एवं मूल विचारों को क्रमबद्ध तरीके से, सीमित शब्दों में, प्रभावकारी ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।

निबंध मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं–

1. **विवरणात्मक**–इस प्रकार के निबंधों में घटनाओं, यात्राओं, संस्मरणों आदि का वर्णन किया जाता है।
2. **वर्णनात्मक**–इनमें नगरों, दृश्यों, ऋतुओं तथा वस्तुओं आदि का वर्णन किया जाता है।
3. **विचारात्मक**–इस प्रकार के निबंधों में किसी विषय से संबंधित कारणों, परिणामों, प्रभावों, लाभ-हानि, महत्त्व आदि पर अपने विचार प्रकट किए जाते हैं।
4. **भावात्मक**–ऐसे निबंधों में सूक्तियों आदि पर अपने विचार प्रकट किए जाते हैं।

अच्छे निबंध की विशेषताएँ

(क) निबंध एक निश्चित शब्द-सीमा में ही होना चाहिए।

(ख) निबंध के वाक्य क्रमबद्ध तथा सुस्पष्ट होने चाहिएँ।

(ग) निबंध में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।

(घ) निबंध की भाषा प्रभावशाली तथा विषयानुरूप होनी चाहिए।

यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण निबंध दिए जा रहे हैं, छात्र इनका भली प्रकार अभ्यास करें–

1. रंगों का त्योहार : होली

1. प्रस्तावना, 2. क्या, क्यों तथा कब मनाया जाता है ?, 3. कैसे मनाते हैं ?, 4. आनन्द एवं कष्ट, 5. उपसंहार।

हमारा धर्म जो भी हो, समाज की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए ही है। धर्म का साधारण अर्थ कर्म भी लगा सकते हैं। समय-समय पर उत्सव या त्योहार आदि की योजनाएँ ऋषियों ने उत्साह प्रदान करने की भावना को लेकर की हैं।

होली का त्योहार अथवा पर्व अपने में एक धार्मिकता को लिए हुए है। एक छोटी-सी कथा के अनुसार–जिसमें हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र प्रह्लाद को अग्नि में जला दिया। जिसकी गोद में प्रह्लाद बैठे थे, उसका नाम होलिका था। वह जल गई। प्रह्लाद के बच जाने से उसी के नाम पर लोगों ने यह उत्सव मनाया। इसी कारण इसे होली के नाम से पुकारते हैं तथा आनन्द उठाते हैं। इस दिन किसान अपने अधपके अन्न को लेकर अग्निदेव को समर्पित करते हैं। इस दिन हम लोग अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं। यह त्योहार फाल्गुन मास में मनाया जाता है। जिसे छोटे-बड़े प्रत्येक जाति के लोग बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं।

होली वाले दिन सायंकाल एक स्थान पर लकड़ियाँ, कट्ठे, ईंधन आदि इकट्ठा कर मंत्रोच्चारण के साथ अग्नि प्रज्ज्वलित करते हैं। वास्तव में होली का दिन यही होता है, लेकिन दूसरे दिन प्रातः से ही उल्लास और उमंग के साथ सब छोटे-बड़े अपने मन के द्वेष भाव को समाप्त कर आपस में अनुराग के रंग से अपने तन और मन को रंगते हुए एक आनन्दित वातावरण का निर्माण करते हैं, जिसमें एक प्रकार का सुख प्राप्त होता है, जो चिरस्मरणीय होता है। इस प्रकार दोपहर तक रंग और गुलाल के बादल उड़ाते हुए, ठिठोलें करते हुए अपने मन में संजोए अरमान पूरे करते हैं।

सायंकाल स्नानादि कर स्वच्छ और सुन्दर कपड़े पहनकर एक दूसरे को अपने सीने से लगाते हैं। आपस में इस होली–मिलाप के समय कुछ मिष्ठान भी मिलता है।

लोग शराब के नशे में धुत एक बेहोशी का नजारा-सा उपस्थित कर देते हैं, जिससे समाज पर अच्छा प्रभाव नहीं होता। हमारे ही कस्बे में कुछ लोग रंग और गुलाल के स्थान पर मल-मूत्र का प्रयोग भी करते हैं, जो बुराई का प्रतीक है।

इस त्योहार को मनाकर हम अपने में नई चेतना और स्फूर्ति का संचार पाते हैं, जिससे जीवन के कार्य बड़े ही उत्साह से करते हैं।

2. गाय

1. प्रस्तावना, 2. गाय का महत्त्व, 3. गाय सभी देवों की माता है, 4. गाय की उपयोगिता, लाभ, 5. गाय कृषि का आधार है।

गाय भारतवर्ष में जानवर नहीं अपितु माँ के रूप में मानी ही नहीं पूजी भी जाती है। माता जो बच्चों को जन्म देती है, वह केवल छः माह या साल भर दूध पिलाती है, परंतु गौ माता जीवन भर दूध पिलाकर रक्षा करती है तभी कवि ने कहा है कि–

जननी जनकर दूध पिलाती केवल साल छमाही भर।
गौमाता पय सुधा पिलाकर रक्षा करती जीवन भर॥

गाय के अनेक गुणों के कारण ही उसे देवताओं की भी माता कहा गया है। जब पृथ्वी पर अनेक अत्याचार हुए तो पृथ्वी गाय का रूप धारण कर भगवान विष्णु के पास गई और पुकार की। गाय में अनेक देवताओं का वास कहा गया है। कहा गया है कि प्रातः उठकर गाय के दर्शन करने चाहिएँ, शुभ होता है। गाय सभी देवताओं, भूतों की माँ है और सभी प्राणियों को सुख देने वाली है। ऋषि-मुनियों ने गाय के गुण गाए हैं और गाय की रक्षा के लिए दिलीप ने अपना शरीर सिंह के सामने अर्पण किया–'मेरी जान ले लो, गाय को छोड़ दो'। महर्षि वशिष्ठ की नन्दिनी गाय की महिमा ने विश्वामित्र को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। गाय की महिमा वर्णन करते हुए कहा गया है–

'मातेव सर्व भूतानाम्, गवां सर्व सुखप्रदां।'

गाय बहुत उपयोगी एवं सीधा पशु है। गाय कृषि का भी आधार है। गाय आर्थिक उन्नति का भी आधार है, आर्थिक दृष्टि से भी गाय का बहुत महत्त्व है। गाय की जो सेवा करता है, उसे गाय सब कुछ दे देती है। गाय धावल, कृष्ण, भूरी, चितकबरी आदि रंग वाली होती है और हरियाणा नस्ल की गाय सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

अनेक गुणों के कारण गाय भारत की पूज्या है। धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक सभी प्रकार से महत्त्वपूर्ण है। आज के शासक गौ को इतना महत्त्व नहीं देते हैं, परंतु अमेरीका में आज भी गाय का पालन-पोषण बड़ी उत्तम रीति से होता है। इसी कारण वहाँ की गाएँ 20-20 किलो, 25-25 किलो से भी अधिक दूध देती हैं।

बैल के द्वारा खेती होती है और अनेक कार्य लिए जाते हैं। ग्राम में बैलगाड़ी ही यातायात का साधन है जो बैल ही खींचते हैं। गाय-बैल आदि के गोबर की बनी खाद होती है, जो सर्वाधिक उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

अत: गाय लोगों की माता है और कोई शुभ कार्य करने से पहले गौमाता का आशीर्वाद लेना चाहिए जिससे सभी कार्य फलीभूत हो जाते हैं।

3. गणतंत्र दिवस

भारत ने अंगड़ाई ली और पुरानी दो सौ वर्षों की दासता को अपने ऊपर से उतार फेंका। माँ के सपूतों ने अपने प्राणों का बलिदान किया और दासता की जंजीरों को काट फेंका। देश के उबलते खून ने किसी भी सत्ता को अपने पर शासन करने की स्थिति में नहीं रखा।

स्वतंत्र देश के वासी अपना शासन किस रीति से चलाएँ, इस पर विचार-विमर्श हुआ और एक संविधान की निर्मिति हुई। इस संविधान के द्वारा भारत में जनता द्वारा, जनता की और जनता-हित के लिए सरकार बनाई गई। इस संविधान को 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया, जिसके अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने विकास के लिए स्वतंत्र अवसर प्रदान करने की व्यवस्था की गई। अपने संविधान और सिद्धान्तों पर विचार करने के लिए हम प्रत्येक 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं।

जहाँ तक विचारधारा का प्रश्न है, विद्वानों का कथन है कि कई लोगों के विचारों से सत्य का अवलोकन होता है। गणतंत्र दिवस पर अपने गत वर्षों के क्रिया-कलापों पर एक दृष्टिपात करते हैं। प्रत्येक सामाजिक, रचनात्मक स्थान पर हम गणतंत्र दिवस मनाते हैं तथा विचारों का आदान-प्रदान करके अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने का संकल्प लेते हैं। यह गणतंत्र दिवस सभी स्कूलों, कॉलेजों तथा सरकारी, गैर-सरकारी आदि भवनों में मनाया जाता है।

आबाल-वृद्ध बड़ी प्रसन्नता के साथ इस पर्व को मनाते हैं। इस पर्व पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, कवि-सम्मेलन तथा भजन-कीर्तन आदि का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है।

एक ही वस्तु को विभिन्न लोग भिन्न-भिन्न दृष्टियों से देखा करते हैं। भारत के इतिहास में 'गणतंत्र-दिवस' (26 जनवरी) स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। यह दिन भारत के नागरिकों के लिए सुखदायक है। इस दिन नए जीवन का संचार हुआ था। भारत का कोना-कोना नए रक्त से संचारित होने लगा। भारत ने अपने जीवन में स्वतंत्रता प्राप्त करके, अपने संविधान के अनुसार चलकर, अन्य सैंकड़ों देशों को स्वतंत्र होने का संदेश दिया। प्रत्येक व्यक्ति राहत की साँस ले सके, ऐसा वातावरण भारत ने 26 जनवरी 1950 को संकल्प लेकर बनाया।

26 जनवरी या गणतंत्र दिवस हमारे नए जीवन का सूत्रपात लेकर आया।

4. विद्यालय का वार्षिकोत्सव

1. प्रस्तावना, 2. उत्सव की तैयारियाँ, 3. उत्सव का आरंभ, 4. पुरस्कार वितरण, 5. उपसंहार।

जैसे ही हमारे प्रधानाचार्य ने घोषणा की कि हम 26 नवम्बर, 2006 को वार्षिक उत्सव मना रहे हैं, सभा में बैठे सभी छात्रों ने हर्ष ध्वनि के साथ इस घोषणा का स्वागत किया। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ उठी। इसका मुख्य कारण यह था कि वर्ष भर पढ़ाई करके परिश्रम तथा ऊबे मन को उत्सव नई चेतना तथा स्फूर्ति से भर देते हैं।

विद्यालय का वार्षिक उत्सव होने के मात्र दो दिन शेष रह गए थे। प्रधानाचार्य ने उत्सव के कार्यक्रमों के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया। सभी समितियाँ अपने-अपने काम में जुट गईं। छात्र-शिक्षक एक-दूसरे का सहयोग कर रहे थे। उत्सव की तैयारियों का दृश्य देखने योग्य था। कहीं सफाई और साज-सज्जा हो रही थी तो कहीं पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का पूर्वाभ्यास देखते ही बनता था। कहीं खेल-कूद की तैयारी चल रही थी तो कहीं स्थानीय संभ्रान्त व्यक्तियों को निमंत्रण-पत्र लिखे जा रहे थे। इस प्रकार विद्यालय का वातावरण अत्यन्त दर्शनीय तथा मनमोहक था।

अन्ततः वह दिन आ ही गया जिसकी हम सब व्याग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे। यह 26 तारीख थी। शाम के छः बजते ही नगर के गणमान्य व्यक्ति और विद्यालय के सभी छात्र आने आरंभ हो गए। हम सभी अत्यंत उल्लास के साथ कार्यक्रम के आरंभ होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। हमारे प्रधानाचार्य ने कार्यक्रम प्रारंभ होने की घोषणा की।

सभापति जी ने पद भार के प्रति आभार प्रकट करते हुए कार्यक्रम का उद्घाटन किया। आज रात लोक-गीतों का कार्यक्रम संपन्न होना था। धीरे-धीरे मंच पर कलाकार आते रहे और नाना प्रकार के लोकगीतों को मधुर कंठ से गा-गाकर श्रोताओं का मनोरंजन करते रहे।

इस वर्ष हमारे उत्सव के सभापति नगर के गणमान्य व्यक्ति भूतपूर्व डिप्टी कमिश्नर एवं संसद सदस्य श्री हुकुम सिंह थे। सभापति का आभार प्रदर्शन करते हुए प्रधानाचार्य महोदय ने छात्रों के लिए अनुशासन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् सरस्वती वन्दना के उपरान्त पुरस्कार वितरण प्रारंभ हुआ। सभी प्रतियोगी छात्रों को नाना प्रकार के मनभावन पुरस्कार प्रदान किए।

पुरस्कार वितरण के उपरान्त हमारे कॉलेज के प्रधानाचार्य जी ने सभी आगन्तुकों, छात्रों एवं सभापति के प्रति इस उत्सव में सहयोग के लिए आभार प्रकट किया और उत्सव के समापन की घोषणा करते हुए मिष्ठान वितरण की व्यवस्था की।

हमारे विद्यालय का यह वार्षिकोत्सव अत्यंत धूमधाम से संपन्न हुआ। सचमुच विद्यालय के वार्षिक उत्सव विद्यार्थियों के जीवन में रचनात्मक प्रवृत्ति को जन्म देते हैं। इनसे हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है और हमारे अंदर उमंग और उत्साह का संचार होता है।

5. विज्ञान से लाभ-हानि

1. विज्ञान के विविध चमत्कार, 2. संचार के क्षेत्र में, 3. चिकित्सा के क्षेत्र में, 4. कृषि के क्षेत्र में, 5. उपसंहार

आज का युग विज्ञान के चमत्कारों का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान ने क्रांति उत्पन्न कर दी है। विज्ञान ने लोगों का जीवन सुखमय तथा आनन्द युक्त बना दिया है। बिजली के बल्ब, पंखे, हीटर, ग्रामोफ़ोन, रेडियो, टेलीविजन

आदि से हमें कई तरह के आराम तथा सुविधाएँ मिलती हैं। बिजली हमारा भोजन पकाती है, पंखा चलाती है, प्रकाश प्रदान करती है। विज्ञान में अपार शक्ति है। प्राचीनकाल में विज्ञान का अर्थ अध्यात्म से संबंधित विशेष ज्ञान से लिया जाता था, किंतु आज विज्ञान का क्षेत्र आध्यात्मिक न होकर भौतिक हो गया है। चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो, चाहे संचार और यातायात का, चाहे कृषि और उद्योग का क्षेत्र हो–हर क्षेत्र में विज्ञान ने अपना आधिपत्य स्थापित किया है। विज्ञान की अद्भुत उपलब्धि पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रकवि 'दिनकर' जी ने कहा है–

''यह समय विज्ञान का, सब भाँति पूर्ण समर्थ,
खुल गए हैं, गूढ़ संस्कृति के अमित गुरु अर्थ।
चीरता तम को संभाले बुद्धि की पतवार,
आ गया है ज्योति की नवभूमि में संसार॥''

संचार के क्षेत्र में भी विज्ञान ने भारी सफलता का परिचय दिया है। प्राचीन युग में जो संदेश व्यक्ति के द्वारा कई महीनों में भेजे जाते थे, वे आज टेलीफ़ोन, रडार तथा बेतार के तार द्वारा क्षण भर में एक देश से दूसरे देश को भेजे जा सकते हैं। इतना ही नहीं, आज तो चन्द्रमा और मंगल ग्रह के संदेश भी पल भर में धरती पर सुने जा सकते हैं।

विज्ञान ही ने मनुष्य को स्वस्थ बनाया है। उसने अंधे को आँखें, बहरे को कान और लंगड़े को टाँगें दी हैं। उसने पागलों को वश में किया है और किसी सीमा तक मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की है। इतना ही नहीं, उसने एक्स-रे के माध्यम से उन गुप्त रोगों को खोज निकाला है, जो सदियों तक मानव-जीवन के लिए पहेली बने रहे। चेचक और हैजे के टीके, पेनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन आदि औषधियाँ मानव के हर रोग के लिए रामबाण सिद्ध हुईं। शल्य चिकित्सा द्वारा कुरूप रूपवान बनने लगे और हृदय भी बदले जाने लगे।

कृषि तथा उद्योग के क्षेत्रों में भी विज्ञान ने अद्भुत चमत्कार दिखाए हैं। ट्रैक्टर, ट्यूबवैल, रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाइयाँ और फसले उठाने की मशीनों का निर्माण करके आज किसान का भाग्य ही पलट दिया है। आज का किसान वर्षा पर ही निर्भर नहीं रहता। विज्ञान ने उसे कृत्रिम वर्षा उपलब्ध करा दी है।

विज्ञान का यदि सदुपयोग किया जाए, तो वह मानव के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। विज्ञान के उपयोग से संसार में विश्व-बन्धुत्व की भावना जागृत हो गई है। परंतु यदि उसका दुरुपयोग किया जाता है, तो उसमें मानव का सर्वनाश निहित होता है। अत: विज्ञान के सदुपयोग में ही मानव का एकमात्र कल्याण निहित है।

6. किसी मेले का वर्णन

1. प्रस्तावना, 2. भारत : मेलों का देश, 3. सामाजिक जीवन में मेलों का महत्त्व, 4. गढ़मुक्तेश्वर का मेला, 5. मेला देखने की योजना, 6. उपसंहार।

मेले मानव को स्फूर्ति, ताज़गी तथा आनन्द देते हैं। इनसे उसे पारस्परिक स्नेह तथा मिलन प्राप्त होता है। मानव इन मेलों में जाकर कुछ दिनों के लिए जीवन की समस्याओं को भूल जाता है।

भारत एक विशाल देश है। यहाँ पर अनेक धर्मों, संप्रदायों, जातियों और देशों के लोग निवास करते हैं। भारत के हर प्रांत में कोई न कोई मेला हर वर्ष लगता है। मानव मेलों के अतिरिक्त भारत में पशुओं के मेलों का भी आयोजन किया जाता है। इनमें अनेक प्रकार की नुमाइशें, प्रदर्शनियाँ तथा रामलीलाओं की भी व्यवस्था होती है। इसी कारण भारत को मेलों का देश कहा जाता है।

हमारे सामाजिक जीवन में पर्वों की भाँति मेलों का भी बहुत महत्व है। उत्सव तथा पर्वों की अपेक्षा मेलों की उपयोगिता कहीं अधिक है। उत्सव और पर्वों को तो लोग सीमित क्षेत्र में मनाते हैं किंतु मेलों में सभी संप्रदाय, धर्मों तथा जातियों के लोग सम्मिलित होते हैं। वास्तव में मेले हमारी सांस्कृतिक विरासत हैं। मेलों से मनुष्य को सच्चा सुख प्राप्त होता है। आर्थिक दृष्टि से भी इन मेलों की विशेष उपयोगिता है। मेलों में जाकर मनुष्य पारस्परिक स्नेह तथा सौहार्द्र प्राप्त करता है।

यों तो हमारे प्रांत में अनेक मेलों का आयोजन होता है किंतु गढ़मुक्तेश्वर का मेला हमारे उत्तर प्रदेश का मुख्य आयोजन है। यह गंगा के किनारे स्थित एक धार्मिक एवं पवित्र स्थान है। यहाँ कार्तिक माह के अंतिम सप्ताह से पूर्णमासी तक कार्तिक स्नान का मेला रहता है। इस अवसर पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु स्नान कर पुण्य के भागी होते हैं। ग्रामीण जनता में, तो इस मेले का बहुत ही महत्त्व स्वीकार किया जाता है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कार्तिक माह में गढ़मुक्तेश्वर का मेला आयोजित किया गया। मेरे पूज्य पिताजी ने मेरी अर्द्धवार्षिक परीक्षा समाप्त होने पर मुझसे कहा कि ''बेटे विवेक ! तुम्हें खुश होना चाहिए कि इस बार हम तुम्हें गढ़मुक्तेश्वर का कार्तिक मेला दिखाने ले जा रहे हैं।'' मैं पिताजी के निर्णय को सुनकर खुशी से फूल गया। दूसरे ही दिन हमारे विद्यालय में एक सप्ताह की छुट्टी हो गई। सपरिवार हम मेला देखने के लिए चल पड़े।

मेले में आकर हमने देखा कि यह मेला कही दूर-दूर तक फैला था। चारों ओर जन-समुदाय उमड़ा पड़ रहा था। लोगों ने वहाँ छोटे-छोटे तंबुओं के घर बना रखे थे। मेले में लंबा-चौड़ा बाज़ार लगा हुआ था। लोग अपनी-अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ खरीद रहे थे। हलवाइयों, चाट वालों तथा खिलौनों की दुकानों पर काफी लोग खरीद तथा खा-पी रहे हैं। पिता जी ने हम सब भाई-बहनों को चरखे तथा झूलों में झुलाया। हम सभी इस मेले में मनोरंजन से काफी खुश थे।

मेले सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक दृष्टि से बहुत उपयोगी होते हैं। इनसे मनुष्य के अंतर्गत स्नेह, सौहार्द्र तथा एकता की भावना जाग्रत होती है। हमारी सरकार को चाहिए कि वह मेलों में उत्पन्न बुराइयों को दूर करके इनके प्रबंध को उत्तम बनाए ताकि इन मेलों की परंपरा अक्षुण्ण बनी रहे।

7. राष्ट्रनायक : जवाहर लाल नेहरू

1. प्रस्तावना, 2. जन्म - मृत्यु, 3. शिक्षा एवं देश-प्रेम, 4. स्वतंत्रता के योद्धा, 5. शांतिदूत, 6. उपसंहार।

हमारी सृष्टि का शाश्वत धर्म है—जीवन एवं मृत्यु। जो संसार में जन्मा है उसकी मृत्यु भी निश्चित ही है। परंतु कुछ ऐसे व्यक्ति संसार में आते हैं जिनके कार्यों से देश उनके पीछे चलता है और मृत्यु पर रोता है। ऐसे पुरुष समाज, देश, धर्म और उत्थान के लिए अपना सर्वस्व लगा देते हैं। उन्हीं में एक हैं, राष्ट्रनायक जवाहर लाल नेहरू जो इलाहाबाद में पं॰ मोतीलाल नेहरू जैसे सर्वगुण संपन्न परिवार में जन्मे और 27 मई, 1964 को जिनकी मृत्यु हो गई।

पं॰ मोतीलाल जैसे रईस घराने में जवाहर लाल अपने पिता के इकलौते पुत्र थे। ब्रिटेन से शिक्षा प्राप्त कर जब लौटे तो बड़े शान-शौकत से रहते थे। चाहते तो वे श्रेष्ठ वकील बन सकते थे, परंतु ऐसा नहीं किया। भारत माता का करुण क्रन्दन और देश की परतंत्रता, उन्हें उद्धार के लिए गांधी जी ने जब आह्वान किया तो जवाहर लाल उस स्वतंत्रता आंदोलन यज्ञ में कूद पड़े। वर्षों जेल की यातनाएँ सहीं, माता-पिता तथा पत्नी सभी का बलिदान हुआ, फिर भी हिम्मत न हारी और पुनः आवेग से स्वतंत्रता-यद्ध में कूद पड़े।

गोरों के अनेक भीषण अत्याचारों को सहन किया। कष्टों से भयभीत होकर भी मार्ग नहीं छोड़ा। सैंकड़ों कष्ट आए, उन्हें पार किया, धैर्य और संयम से। नवयुवकों के असंख्य बलिदानों से 1947 में भारत की परतंत्रता की बेड़ियाँ कटीं। देश में स्वतंत्रता का सूर्य उदित हुआ तथा राष्ट्र के संचालन का भार प्रधानमंत्री के रूप में पं॰ जवाहर लाल को सौंपा गया।

विश्व में बढ़ रहे युद्ध के बादलों को शांति के बादलों में बदलने का कार्य भी पं॰ जवाहर लाल ने किया और उसमें सफलता भी प्राप्त की। अपनी पंचशील की गंगा से ज्वाला को शांत करने का अथक प्रयास किया, चाहे भारत को इसके लिए हानि भी उठानी पड़ी हो, पर वे विश्व शांति के लिए जुटे रहे। कोरिया आदि अन्य देशों में शांति की धारा को बहाया। इस कारण पं॰ जवाहर लाल नेहरू अंतर्राष्ट्रीय महापुरुष प्रसिद्ध हुए और शांतिदूत कहलाए।

पं॰ जवाहर लाल के अनेक गुणों-उनकी वाक्पटुता, दृढ़ विश्वास, संसद में या बाहर कहा गया उनका एक-एक शब्द और समय आने पर चीन को ललकारने की आवाज सुनाई दी, इन सभी का आदर होगा और विश्व के राष्ट्र भी शांतिदूत के नाम से स्मरण करेंगे। राष्ट्रनायक पं॰ जवाहर लाल नेहरू अमर हैं।

8. मेरा गाँव

1. प्रस्तावना, 2. गाँव के जीवन के आनन्द, 3. वर्तमान समय में गाँवों की दुर्दशा, 4. उपसंहार।

''जगमगाते नगरों से दूर हैं जहाँ न ऊँचे महल,
टूटे-फूटे कच्चे घर देखते खेतों में चलते हल।
पुरई पाल खपरैलों में रश्मि रमुआ की नावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ ? यह बसा हमारे गाँवों में।।''

भारत गाँवों का देश है। यहाँ अस्सी प्रतिशत जनता गाँवों में ही निवास करती है। बापू का कहना तो यह था कि सच्चा भारत गाँवों में ही निवास करता है। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं होगा कि ग्राम ही भारतवर्ष की आत्मा हैं। साढ़े पाँच लाख से अधिक भारत के ये गाँव देश की वास्तविक प्रगति के सूचक हैं।

गाँव हमारी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक हैं। किंतु आज गाँव की स्थिति अच्छी नहीं है। शहरों का समुचित प्रभाव आज गाँवों पर पड़ रहा है। वे मानवतावादी मंदिर न रहकर व्यापार के अड्डे बन गए हैं या फिर राजनीति के अखाड़े का रूप धारण करते जा रहे हैं।

गाँव प्रकृति की अमूल्य धरोहर होते हैं। वहाँ प्रकृति का शुद्ध रूप देखने को मिलता है। छोटे-बड़े बाग-बगीचे, फसलों के लहलहाते खेत, कच्चे-लिपे-पुते घर। इन सबसे ग्राम्य-जीवन अत्यंत शांतिमय और सुंदर दिखाई पड़ता है। प्राकृतिक शोभा ही उसके और अभावों को दूर कर मनोरंजन करती है।

नगरों में अत्यधिक कल-कारखानों की स्थापना से वातावरण दूषित हो जाता है, परंतु गाँवों में व्यक्ति को स्वच्छ जलवायु प्राप्त होती है। ग्रामीण जन शहरी व्यक्तियों की तरह कृत्रिम जीवन नहीं बिताते हैं, वे तो सादा जीवन और उच्च विचारों में विश्वास रखते हैं। ग्रामीण जीवन सस्ता है। यहाँ पर सभी चीजें सस्ते दामों में उपलब्ध हो जाती हैं।

आज जबकि देश में नगर सभ्यता अपने चरम विकास पर है तब भी गाँव अत्यंत दयनीय स्थिति से गुजर रहे हैं। आज के गाँव दुर्गुणों, बुराइयों, रूढ़ियों और हानिकारक रीति-रिवाजों के अड्डे बन गए हैं। आज गाँवों में प्राचीनकाल जैसी संपन्नता, स्नेह, सद्भावना, सरलता और पवित्रता नहीं रही। गाँव का आर्थिक स्वावलम्बन समाप्त हो चुका है। वे गरीबी और भुखमरी की आग में जल रहे हैं। शिक्षा के अभाव ने ग्रामीण लोगों का नैतिक विकास रोक दिया है, परिणाम स्वरूप आज वहाँ सुख-शांति गूलर का फूल बनकर रह गई है। गाँवों की बढ़ती हुई बेकारी ने ग्रामीणजनों को और निराश कर दिया है।

एक आदर्श ग्राम की स्थापना एक दिन में नहीं की जा सकती। इसके लिए सरकार और जनता दोनों को ही प्रयत्न करने होंगे। सरकार को योजनाएँ बनानी होंगी और ग्रामीण जनों को योजनाओं में सहयोग देना होगा। चकबन्दी, सरकारी बैंकों और समितियों का सफल उपयोग, सिंचाई की उचित व्यवस्था, बेकारी का उन्मूलन, शिक्षा का प्रसार तथा पंचायतों का पुनर्गठन आदि कतिपय ऐसे प्रभावशाली कार्य हैं जो किसी भी गाँव को आदर्श बना सकते हैं, गांधी जी के स्वप्न को पूरा कर सकते हैं।

9 पुस्तकालय के लाभ

1. प्रस्तावना, 2. पुस्तकालय की उपयोगिता, 3. पुस्तकालय के भेद, 4. पुस्तकालय से लाभ, 5. उपसंहार।

अज्ञान बुराइयों का घर है। संसार में कौन-सा ऐसा व्यक्ति है जो जान-बूझकर अज्ञान के अंधकार में डूबना चाहेगा ? ज्ञान की प्यास मानव का प्राकृतिक गुण है। पुस्तकालय उस प्रकाश भवन के समान है, जिसमें प्रवेश करके मानव का संपूर्ण अज्ञान तिरोहित हो जाता है। वस्तुतः पुस्तकालय ज्ञान-वृद्धि का शक्तिशाली भंडार है। पुस्तकालय ज्ञान-साधना के पुनीत मंदिर हैं।

पुस्तकालय की हमारे जीवन में बहुत उपयोगिता है। विद्वान और मनीषियों ने पुस्तकालयों की उपयोगिता पर निम्न प्रकार से अपने विचारों की अभिव्यक्ति की है-

(i) आज का युग आर्थिक संग्राम का युग है। आर्थिक रूप से अपाहिज होने के कारण व्यक्ति सभी पुस्तकों को नहीं खरीद सकता।

(ii) आज का युग ज्ञान-विज्ञान का युग है। प्रत्येक व्यक्ति में ज्ञान-पिपासा शांत करने की तीव्र भावना है। पुस्तकालयों का निर्माण इस ज्ञान पिपासा को शांत करने की आवश्यकता को लेकर किया गया है।

(iii) आज हम भूतकाल या वर्तमान की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि का सहज परिचय करना चाहते हैं।

मुद्रण व्यवस्था में सुधार होने के कारण हमारे देश में दिनों-दिन पुस्तकालयों की संख्या एवं उनके भेदों में वृद्धि हो रही है। हमारे देश में निम्नलिखित प्रकार के पुस्तकालय देखने को मिलते हैं-

निजी पुस्तकालय-ये पुस्तकालय व्यक्तिगत होते हैं। कुछ साहित्य-प्रेमी व्यक्ति पुस्तकों का संग्रह करके निजी पुस्तकालय बना लेते हैं।

संस्थागत पुस्तकालय-इस प्रकार के पुस्तकालय अधिकांश रूप में जाति, समुदायों तथा संस्थाओं की ओर से चलते हैं। जैन पुस्तकालय, रोटरी क्लब पुस्तकालय आदि इसी प्रकार के पुस्तकालय होते हैं।

विद्यालयों में पुस्तकालय-पुस्तकें विद्या की आधार होती हैं। प्रत्येक विद्यालय में बच्चों और अध्यापकों की आवश्यकता देखते हुए एक पुस्तकालय की स्थापना की जाती है, इसमें विभिन्न प्रकार की पुस्तकें संग्रहीत होती हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालय-सार्वजनिक पुस्तकालय सभी वर्गों के लोगों के लिए होते हैं। इन्हें अधिकांश रूप से स्वायत्त संस्थाएँ चलाती हैं। इन्हें सरकारी अनुदान भी मिलता है।

पुस्तकालय ज्ञान प्राप्ति के पवित्र मंदिर होते हैं। ये राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। इनसे अधिक लाभ प्राप्त होते हैं। समय का सदुपयोग ही सफलता की कुंजी है। पुस्तकालयों में समय का सर्वोत्तम उपयोग किया जा सकता है। एक संस्कृत कहावत है कि-काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्। अर्थात् बुद्धिमान लोगों का समय काव्य और शास्त्रों के अध्ययन में ही व्यतीत होता है।

आत्म-निर्माण के क्षेत्र में पुस्तकालयों का स्थान अद्वितीय है। उच्च कोटि की विविध प्रकार की पुस्तकों के सत्संग से व्यक्ति की बुद्धि और आत्मा का विकास होता है। पुस्तकालयों में संग्रहीत पुस्तकों के अध्ययन से लोगों में कुरीतियों के प्रति वितृष्णा, त्याग, सेवा, सहानुभूति की भावना जागृत होती है। शिक्षा के प्रसार एवं प्रचार में भी पुस्तकालयों का अपूर्व योगदान होता है।

पुस्तकालय हमारे जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। ये ज्ञान के अनन्त सागर हैं। सुयोग्य नागरिक निर्माण में पुस्तकालयों का अपूर्व योगदान होता है। ये व्यक्ति को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। वस्तुतः ये 'असतो मा सद्गमय, तमसो माज्योतिर्गमय' के प्रतीक हैं। इनका विकास मानव बुद्धि का विकास है।

10. रेलयात्रा

1. प्रस्तावना, 2. रेलयात्रा का विवरण, 3. पहुँचने का स्थान, 4. उपसंहार।

परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी थीं। सहसा एक दिन मेरे कुछ दोस्तों ने मुझसे कहा कि ''भाई, इस बार गर्मी की छुट्टियाँ इलाहाबाद त्रिवेणी संगम पर व्यतीत करनी हैं।'' सभी मित्रों ने इलाहाबाद की तैयारी प्रारंभ कर दी और सोचने लगे कि इस बहाने तीर्थयात्रा भी हो जाएगी। प्रकृति के सुंदर दृश्यों को भी देखने का सुअवसर प्राप्त होगा।

एक गाड़ी करके हम और हमारे सभी दोस्त स्टेशन पहँचे। हमारे दो मित्र स्टेशन पर टिकटें लेकर गाड़ी आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अभी गाड़ी आने में 20 मिनट का समय था। अत: हम लोग प्लेटफॉर्म पर इधर-उधर घूमने लगे। अपने निश्चित समय पर ट्रेन आ गई। गाड़ी रुकी, कुछ यात्री उतरे तथा कुछ ट्रेन पर चढ़ने लगे। प्लेटफॉर्म पर यात्री इधर-उधर भागते दिखाई दे रहे थे। प्लेटफॉर्म पर खोमचे वालों की ध्वनि गूँज रही थी। कहीं पर पान-बीड़ी व सिगरेट वाले अपना राग अलाप रहे थे। हम लोग बड़ी भीड़ होने के बावजूद भी परिश्रम से डिब्बे में चढ़ गए। गर्मी के मारे बुरा हाल था। बरेली से गाड़ी चली। हवा का हल्का-सा झोंका लगा। अनेक स्टेशन आकर निकल गए।

सायंकाल का समय अत्यंत ही मनोरम था। शीतल वायु के झोंके आ रहे थे। मार्ग में खेत-खलिहान, बाग-बगीचे तथा जंगलों का दृश्य अति मनोरम था। गाड़ी लखनऊ स्टेशन पर रुकी। हमारे मित्रगण गाड़ी से उतरकर चाय-नाश्ता आदि करने लगे। कुछ समय पश्चात् ट्रेन फिर से अपने लक्ष्य की ओर रवाना हो गई। मार्ग के दृश्यों को देखते तथा आनन्द लेते हुए हम लोग इलाहाबाद पहुँचे। दूसरे दिन विश्राम करके हमने अपनी थकान मिटाई। तीसरे दिन सभी मित्र त्रिवेणी संगम स्थान पर गए जहाँ पर गंगा, यमुना तथा सरस्वती नदियों का मेल दिखाई देता है। वहाँ पर लोगों की अपार भीड़ थी। कोई स्नान कर रहा था तो कोई भजन-कीर्तन में मग्न था। हम लोग वहाँ पर तीन दिन व्यतीत करके पुन: अपने घर को लौट आए।

ऐसी यात्राएँ मानव के लिए बहुत ज्ञानवद्र्धक तथा लाभप्रद प्रतीत होती हैं। इनसे देश-विदेश का भी ज्ञान बढ़ता है। प्रकृति का निखरा हुआ सौंदर्य ऐसे स्थानों पर ही देखने को मिलता है। धार्मिक स्थानों की यात्रा करने से धार्मिक भावना का विकास होता है। कितने ही अपरिचित व्यक्तियों से परिचय हो जाता है और जीवन-मरण तक का साथ हो जाता है। व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है। अत: ऐसी यात्राएँ आनन्ददायक होती हैं।

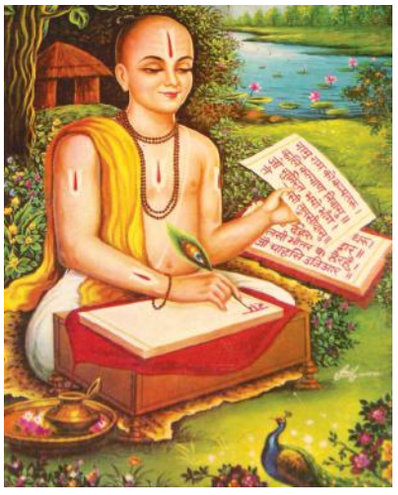

11. मेरा प्रिय कवि : तुलसीदास

1. प्रस्तावना, 2. मेरा प्रिय कवि : तुलसीदास, 3. तुलसी का जीवन परिचय, 4. तुलसी का हिंदी साहित्य में स्थान, 5. उपसंहार।

कवि विश्व की अद्भुत वस्तु है। उसका जीवन उपकार का जीवन है। वह गिरे हुए उत्साह को उठाता है, रोती हुई आँखों को पोंछता है और निराशावादियों के सामने आशा का दीपक आलोकित करता है। कवि सौंदर्य का उपासक है, चाहे वह सौंदर्य बहिर्जगत् का हो या अंतर्जगत् का।

साहित्य सागर में अनेक कवि रूपी रत्न उपलब्ध होते हैं-चन्द्रबरदायी, कबीर, सूर, जायसी, बिहारी, भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त आदि कवि प्रमुख हैं।

तुलसीदास हिंदी साहित्य के जिस स्थान पर विराजमान हैं, उस पर हिंदी के किसी अन्य कवि की पहुँच नहीं है। इसका कारण यह है कि तुलसी हिंदी-साहित्य उपवन के सबसे सुंदर वृक्ष हैं। इस वृक्ष के अपूर्व साहित्यिक वैभव से भारतीय कवि ही आकर्षित नहीं हुए बल्कि विश्व-मानवता ज्ञान और सम्मान की दृष्टि से उसे निहारती रही है। तुलसी ने अपने नाम के अनुरूप राम-नाम की मंजरी विश्व के प्रांगण में ऐसी बिखेरी है कि उसकी महक से समस्त मानवता धन्य हो गई है।

गोस्वामी तुलसीदास ने भारत-भूमि पर भादों सदी ग्यारह मंगलवार, संवत् 1589 को जन्म लिया और सावन कृष्ण तीज, शनिवार संवत् 1680 को असी घाट बनारस में इस नश्वर संसार को त्याग दिया। तुलसीदास सूरयपारीण ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे, माता का नाम हुलसी और पत्नी का नाम रत्नावली था। आपके जन्म के कुछ दिनों बाद ही माता-पिता का देहांत हो गया। इनके बचपन का नाम रामबोला था। कहा जाता है कि तुलसी को महाकवि उनकी पत्नी की फटकार ने ही बना दिया।

तुलसी महान् कवि थे। काव्य कला की दृष्टि से उनकी गणना उन महान् कलाकारों में की जाती है, जो हिंदी साहित्य के विकास में आगे बढ़ने वाले युगीन कवियों के आदर्श बने। तुलसीदास एक भावुक कवि थे। उनका हृदय रूपी पक्षी सदैव भावरूपी आकाश में विचरण करता रहता था।

तुलसीदास जी राम के अनन्य भक्त थे। उन्होंने अपने आराध्यदेव राम की भक्ति विविध प्रकारों से की है। उन्होंने स्वयं को हीन और अपने आराध्य को महान् दिखाया। दास्यभाव उनकी भक्ति का प्रधान गुण है। इसीलिए उन्होंने कहा है-

राम सो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो।
राम सो खरो है कौन, मोसो कौन खोटो॥

तुलसी का काव्य कलापक्ष की दृष्टि से हिंदी साहित्य की अनूठी वस्तु है। उसमें भाषा, शैली, छंद, अलंकार और संवाद का अपूर्व कौशल दिखाई देता है। उन्होंने तत्कालीन समय में प्रचलित सभी शैलियों को अपनाया तथा ब्रज और अवधी-भाषा को अपने काव्य का माध्यम बनाया है।

तुलसीदास हिंदी साहित्यकारों के उन जगमगाते हुए नक्षत्रों में से हैं, जो युगों-युगों तक भारतीय जन-मानस को अन्धकार से मुक्त करते रहेंगे। हिंदी-साहित्य रूपी कानन के वे सबसे अधिक सुरभित और सुंदर पुष्प हैं। हिंदी साहित्य को सदा ही उन पर गर्व है।

तुलसी ने अपने गहन और व्यापक व्यक्तित्व के अनुसार समन्वय की भावना साकार की। सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों को उन्होंने अपनाया तथा अशांति, अनाचार, अधार्मिकता तथा विषमता आदि को दूर करने का सफल प्रयास किया।

वस्तुतः सोलहवीं शताब्दी में उन जैसा भक्त, पंडित, दार्शनिक, समाज-सुधारक तथा राजनीतिज्ञ और कोई उत्पन्न नहीं हुआ। अपनी ज्ञान गरिमा से मण्डित होने के कारण ही वे आज 'लोकनायक' कहे जाते हैं। उनकी कविता के बारे में किसी कवि ने कहा है कि-

''ऊख में मयूख में, पीयूष में न पाई जात।
जैसी मधुराई तुलसी की कविताई में॥''

31 अंतर्कथाएँ (Internal Stories)

अंतर्कथाएँ वे कथाएँ हैं जिनके अंतर्गत पाठ्य पुस्तक से संबंधित ऋषियों या वीर पुरुषों के बारे में जानकारियाँ मिलती हैं। इनके बारे में प्रत्येक विद्यार्थी को जानना अत्यावश्यक होता है। नीचे कतिपय अंतर्कथाएँ दी जा रही हैं। छात्र इन्हें भली भाँति कंठाग्र कर लें-

1. भीष्म पितामह-भीष्म महाराज शांतनु की स्त्री गंगा के प्रिय पुत्र थे। बचपन में इनका नाम देवव्रत था। एक बार शांतनु शिकार खेलने वन में गए। मार्ग में उन्हें नदी पार करनी थी। नदी के तट पर शांतनु एक सुंदर युवती को देखकर उस पर मोहित हो गए। वह युवती मल्लाह की पुत्री थी। उन्होंने उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट की। युवती के पिता ने शांतनु से एक शर्त रखी कि मेरी कन्या से उत्पन्न पुत्र ही राज्य का अधिकारी होगा। महाराज सोच में पड़ गए और वापस घर लौट आए। जब यह बात देवव्रत को ज्ञात हुई, तो वह मल्लाह के निकट गए और उससे विवाह के लिए कहा। उसने वही रखी गई शर्त देवव्रत को भी बताई। देवव्रत ने वहीं प्रतिज्ञा की कि मैं आजन्म ब्रह्मचारी ही रहूँगा। इसी कठोर प्रतिज्ञा के कारण वह 'भीष्म' कहलाए।

भीष्म बड़े ही पराक्रमी तथा अपने समय के महान् धनुर्धर थे। यहाँ तक कि महाभारत के भीषण युद्ध में उनकी बाण-वर्षा को रोकने के लिए श्री कृष्ण को रथ का पहिया तक उठाना पड़ा था। अत्यधिक वृद्ध होने के कारण उन्हें पांडव एवं कौरव भीष्म-पितामह के नाम से संबोधित करने लगे थे। पिता द्वारा दिए वरदान के कारण ही भीष्म की मृत्यु उनकी इच्छानुसार हुई।

2. शबरी-शबरी मतंग ऋषि की प्रिय सेविका थी। सीता का हरण होने के बाद जब राम उन्हें खोजने के लिए निकले तब उन्हें मार्ग में शबरी का आश्रम दिखाई पड़ा और वे लक्ष्मण सहित वहाँ रुक गए, शबरी ने मीठे-मीठे बेर चख-चख कर रामचंद्र जी को खिलाए। परंतु लक्ष्मण ने वे बेर फेंक दिए।

3. त्रिशंकु-कहा जाता है कि त्रिशंकु बैकुंठ में सशरीर जाना चाहते थे। इस कार्य के लिए वे वशिष्ठ जी पास गए, उन्होंने अस्वीकार कर दिया क्योंकि शरीर सहित बैकुंठ नहीं जाया जा सकता। उसके बाद वे विश्वामित्र जी के पास गए। विश्वामित्र ने अपनी तपस्या के बल पर त्रिशंकु को स्वर्ग लोक भेजना चाहा, मगर इंद्र ने ऊपर नहीं आने दिया। इसी कारण वे अधर में लटके रह गए।

4. वाल्मीकि-इनके बचपन का नाम रत्नाकर था। इनका काम राहगीरों को लूटना ही था। एक बार साधु के रूप में साक्षात् नारायण उस ओर निकले। वाल्मीकि ने उन्हें पकड़ लिया और उनसे माल देने को कहा। तब साधु ने उनसे कहा-''तुम यह जो कार्य करते हो वह किसके लिए करते हो?'' वाल्मीकि बोले, ''अपने परिवार के लिए।'' साधु ने कहा, ''जाकर अपने घर वालों से पूछो कि क्या वे इस पाप के भागीदार हैं ?'' घर से नकारात्मक उत्तर पाकर वाल्मीकि की आँखें खुल गईं और वे साधु के चरणों में गिर पड़े। वाल्मीकि पढ़े-लिखे न थे, वे मरा-मरा रटने लगे तथा ब्रह्मर्षि बन गए। उनके बारे में कहावत है-

''उल्टा नाम जपत जग जाना,
वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।''

5. द्रोपदी-यह द्रुपद महाराज की पुत्री थी। द्रोपदी को स्वयंवर में पाण्डवों ने वरण किया था। जब युधिष्ठिर कौरवों से जुए में अपना राजपाट हार गए तब द्रोपदी को भी दाँव पर लगा दिया और उसे भी जुए में हार गए। दुर्योधन ने वहीं अपने अपमान का बदला चुकाने के लिए उसे सभा में बुलवाया और उसे नग्न करना चाहा तथा चीर खींचने लगा।

द्रौपदी ने माधव (कृष्ण) की टेर लगाई, श्रीकृष्ण ने द्रोपदी का चीर इतना बढ़ा दिया कि उसे दु:शासन खींचते-खींचते थक कर चूर हो गया। इस प्रकार वहाँ द्रोपदी की लाज बच गई।

6. अजामिल–यह एक ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ था। वह अत्यंत दुराचारी एवं पापी था। इसका मुख्य कार्य डाके डालना तथा भले लोगों को सताना आदि था। उसने जीवन भर बुरे ही कर्म किए, कोई अच्छा कार्य नहीं किया। अंत में जब यमलोक जाने लगा तो उसने अपने पुत्र नारायण को पुकारा। कहते हैं एक बार ही नारायण (विष्णु) का नाम लेने से वह मोक्ष पद को प्राप्त हो गया।

7. एकलव्य–भील जाति में उत्पन्न यह एक मेधावी बालक था। इसके पिता का नाम हिरण्यधनु था। उसने पाण्डवों एवं कौरवों के गुरु द्रोणाचार्य से शस्त्र विद्या प्राप्त करने की प्रबल इच्छा प्रकट की परंतु शूद्र जाति का होने के कारण उसे शिक्षा देने से इन्कार कर दिया। वह मन ही मन द्रोणाचार्य को अपना गुरु मान चुका था। उसने जंगल में द्रोण की एक मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसी के समक्ष शस्त्र चलाने का अभ्यास करने लगा। इस प्रकार वह एक कुशल धनुर्धर बन गया।

एक बार जब द्रोणाचार्य अपने अर्जुन आदि शिष्यों के साथ उस जंगल से होकर जा रहे थे तो एक कुत्ता एकलव्य को देखते ही भौंकने लगा। एकलव्य ने उसका मुँह बाणों से बींध दिया। यह देखकर गुरु द्रोणाचार्य को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी समय गुरु ने बुलाकर उसका परिचय प्राप्त किया और दक्षिणा में एकलव्य का दाहिना अंगूठा कटवा दिया।

8. नारद–नारद जी ब्रह्मा जी के मानस पुत्र थे। वे बड़े साधु, भक्त तथा तपस्वी थे। इनका जन्मजात स्वभाव था–साधु-संतों की सेवा करना। समाज कल्याण तथा ईश्वर उपासना ही इनके जीवन का परम लक्ष्य था। एक बार इन्हें अहंकार हो गया तब विष्णु भगवान ने माया रूपी नगरी की रचना की और उसमें एक सुंदर राजकुमारी उत्पन्न की जिसे देखकर नारद भी उस पर मोहित हो गए। वे भगवान के पास पहुँचे और सुंदर होने का वर माँगा। भगवान विष्णु ने उन्हें बंदर का रूप प्रदान कर दिया। जब नारद स्वयंवर में पहुँचे, तो उस सुंदरी ने दूसरे राजकुमार के गले में जयमाला डाल दी। तब नारद जी को बड़ा आश्चर्य हुआ।

9. ध्रुव–प्राचीन काल में उत्तानपाद नामक एक राजा राज्य करते थे। उनकी दो रानियाँ थीं–सुनीति तथा सुरुचि। सुनीति से ही उत्पन्न पुत्र का नाम था–ध्रुव। एक दिन ध्रुव राजकुमारों के साथ राजमहल में खेलने लगा। राजा ने उस पाँच वर्ष के बालक को स्नेहवश गोद में उठा लिया। पास में खड़ा सुरुचि का पुत्र यह देख रहा था, वह वहीं मुँह लटकाकर खड़ा रोता रहा। उसी समय वहाँ उसकी माँ सुरुचि भी आ गई। उसने ध्रुव को राजा की गोद से उतार दिया तथा बुरा-भला कहने लगी। ध्रुव ने लौटकर यह समाचार माँ को बताया तथा राजसिंहासन से भी ऊँचा पद प्राप्त करने की जिद की। माँ के द्वारा बताने पर उसने वन में घनघोर तप करके ध्रुवतारा के रूप में अपना आकाश में एक स्थान निश्चित किया।

10. प्रह्लाद–हिरण्यकश्यपु के कई पुत्र थे। उनके छोटे पुत्र का नाम प्रह्लाद था। हिरण्यकश्यप नास्तिक तथा बड़ा अहंकारी राजा था। प्रह्लाद बचपन से ही ईश्वरभक्त था। क्रूर राजा ने अपने पुत्र को कई प्रकार से समझाया परंतु प्रह्लाद ने ईश्वर-भक्ति नहीं छोड़ी और हर कष्ट को सहता रहा। अन्ततः विवश होकर हिरण्यकश्यपु ने उसे खम्भे में बँधवाकर पूछा–बता तेरा भगवान कहाँ है ? उसने निडर होकर उत्तर दिया कि भगवान सर्वत्र है, इस खम्भे में भी है। जैसे ही उसके पिता ने उसे तलवार से काटना चाहा, उसी समय खम्भा फाड़कर 'नृसिंह' के रूप में भगवान अवतरित हुए और दुष्ट हिरण्यकश्यप का पेट फाड़कर मार डाला। भक्त प्रह्लाद को राज्य सौंपकर उसे अमर भक्ति का पद प्रदान किया।

निर्देश–छात्र इसी प्रकार अन्य 'अंतर्कथाएँ' अपने कक्षाध्यापक के द्वारा अध्ययन करें।

आदर्श प्रश्न-पत्र-1

1. भाषा का क्या अर्थ है ? स्पष्ट करके समझाइए।

2. भाषा के मुख्य भेद कौन-कौन से हैं ?

3. तत्सम तथा तद्भव शब्द क्या हैं ?

4. भाषा के पाँच अंगों के नाम लिखिए।

5. विकारी शब्द की परिभाषा तथा उसके भेद बताइए।

6. व्यंजन की परिभाषा तथा उसके प्रकार लिखिए।

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?

(ख) सर्वनाम के कितने भेद हैं ? उदाहरण दीजिए।

(ग) संबंध कारक किसे कहते हैं ?

(घ) संकेतवाचक विशेषण किसे कहते हैं ?

(ङ) प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद लिखिए।

(च) कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में क्या अंतर है ?

8. सही कथन के सामने सही (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाएँ।

(क) वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। ◯

(ख) उच्चारण के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के हैं। ◯

(ग) सेना, कक्षा, परिवार जातिवाचक संज्ञा हैं।

(घ) 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम है।

(ङ) 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम है।

(च) अधिकरण की विभक्ति में है।

9. दिए गए शब्दों के सामने संज्ञा के प्रकार लिखिए–

(क) हिरन _____

(ख) डीजल _____

(ग) मेला _____

(घ) प्यास _____

(ङ) श्याम _____

10. निम्न शब्दों के लिंग बताइए–

(क) रस्सा _____

(ख) घंटी _____

(ग) हाथ _____

(घ) दया _____

(ङ) माता _____

(च) आग _____

11. नीचे दिए गए वर्णों के उच्चारण स्थान लिखिए-

वर्ण	उच्चारण स्थान
इ	_____
ऋ	_____
क	_____
प	_____
ट	_____

आदर्श प्रश्न-पत्र-2

1. **वाक्य की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।**

_____

2. **विपरीतार्थक शब्द से आपका क्या आशय है ?**

_____

3. **हमारे जीवन में पर्यायवाची का क्या उपयोग है ?**

_____

4. **निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

जलज, तारा, अम्बर, बलि, पाद, तात, कर्ण, वर।

5. **तद्भव तथा तत्सम शब्दों में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए।**

_____

6. **वाक्य के कितने भेद हैं ? सोदाहरण लिखिए।**

_____

7. **अंतर स्पष्ट कीजिए–**

(क) अल्प विराम एवं अर्द्ध विराम में

(ख) संयुक्त और मिश्रित वाक्य में

_____

(ग) कोष्ठक एवं त्रुटि चिह्न में

(घ) साधारण तथा संयुक्त वाक्य में

_____

(ङ) योजक एवं लाघव चिह्न में

(च) उद्देश्य और विधेय में

_____

8. **निम्नांकित चिह्नों को पहचानिए–**

(क) 0 _____

(ख) । _____

(ग) ; _____

(घ) , _____

(ङ) ^ _____

(च) ? _____

9. निम्न वाक्यों के प्रकार लिखिए–

(क) मैं दौड़ता हूँ।

_____

(ख) वह कमजोर है पर अस्वस्थ नहीं।

_____

(ग) जो जीता वही सिकंदर।

_____

(घ) आज सोमवार है।

_____

(ङ) अभय आया और शीघ्र चला गया।

_____

10. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

नदी	_____	_____	_____
मधु	_____	_____	_____
वृक्ष	_____	_____	_____
स्वर्ग	_____	_____	_____
हिमालय	_____	_____	_____
घोड़ा	_____	_____	_____

11. नीचे दिए वाक्यों में रंगीन शब्दों का स्पष्ट अर्थ लिखिए–

(क) मैं आज बलि का बकरा बना।

_____

(ख) उसने राम को कल पत्र लिखा।

_____

(ग) इन्द्र धनुष में सात रंग होते हैं।

_____

(घ) युधिष्ठिर पाण्डवों में ज्येष्ठ थे।

_____